RNI No. UPHIN/2011/40224
वर्ष : 15 अंक : 12

पंजीकृत सं.: एस.एस.पी./एल.डब्लू./एन.पी-341/2024-2026
हिन्दी मासिक पत्रिका
जून - 2026
मूल्य: 20/- रुपये मात्र

प्रकृति मेल

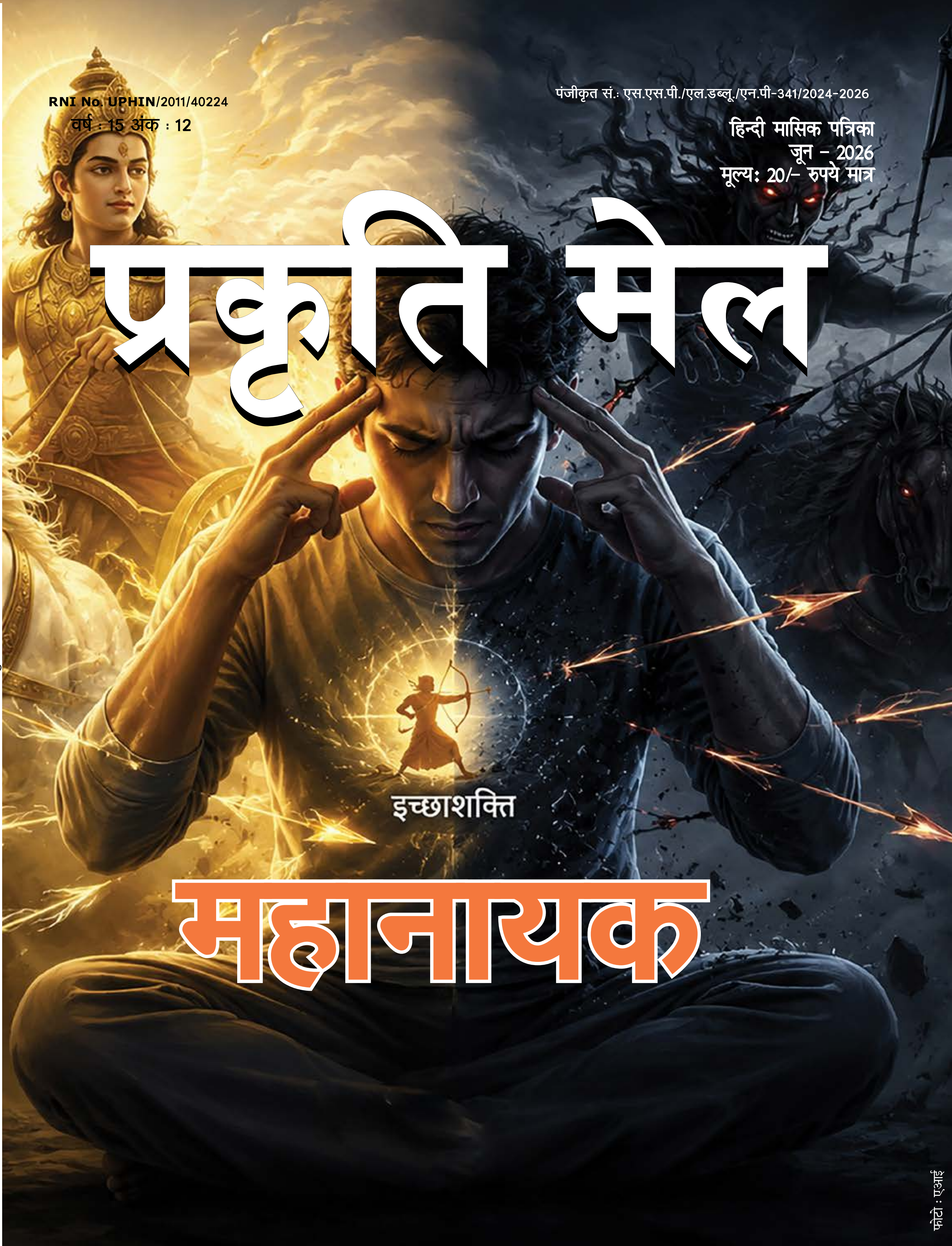

इच्छाशक्ति

महानायक

फोटो : एआई

नोट: यह पत्रिका प्रत्येक माह की 6 तारीख को मुद्रित होकर उसी माह की 8 तारीख को डाक द्वारा भेजी जाती है।

मौसम
प्रकृति में समन्वय
सत्य का स्त्रोत
प्रकृति आश्रम
प्रकृति के तत्व विज्ञान, जीवन के मूल रहस्य
एवं जिज्ञासा पूर्ण करने की प्रकृति स्थली
'अशोक मानव'
9415041794, 9807636072
ग्राम-मड़वाना, पो0-रघुनाथपुर, निकट सैदापुर, लखनऊ।

कोमल
बिल्डिंग मैटेरियल
सत्य प्रकाश मिश्रा (राहुल मिश्रा)
बिक्रेता • बालू • मौरंग • सीमेंन्ट • गिट्टी
मछली शहर, जौनपुर
मो0 9792512188

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्षः15, अंक : 12 | जून - 2026

संरक्षक
डॉ. उत्तम प्रकाश मानव
संपादक
अशोक मानव
कार्यकारी संपादक
उमेश
विधि सलाहकार
नवनीत कुमार वर्मा
मुख्य संवाददाता
आशीष त्रिपाठी
वरिष्ठ संवाददाता
अरविन्द त्रिपाठी
दिल्ली संवाददाता
मनोज
पुर्वांचल हेड
श्री प्रकाश मिश्रा
संवाददाता
सूर्यमणि यादव, अनुराग, कामेश, सुनील,
गौरव पंत, अभिषेक पंत,
हेमंत पाण्डेय, प्रशांत द्विवेदी,
सुमनलता यादव, मानवेन्द्र त्रिपाठी,
अभय सिंह
ग्राफिक्स, डिजाइन एवं तकनीकि
संजय यादव
कैमरा मैन
धर्मेन्द्र त्रिपाठी

प्रबंध, विज्ञापन एवं सदस्यता

संपर्क 8423330911, 9598911575

पंजीकरण कार्यालय

सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश– 226022

प्रधान कार्यालय

18/A ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली क्रॉसिंग, फैजाबाद रोड, लखनऊ – 226016

इस पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों और विचारों के लिए उनका लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा। विज्ञापनों में किये गये दावों की जाँच–पड़ताल स्वयं करें। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।

नोटः इस पत्रिका के समस्त सहभागी पदाधिकारीगण पत्रिका के प्रारम्भ के अंक से ही बिना किसी मासिक सहयोग धनराशि या वृत्तिका के स्वेक्षा से बिना किसी दबाव के समय दान के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी अशोक मानव द्वारा सूर्या प्रिंटिंग प्रेस एण्ड पब्लिकेशन, खसरा संख्या 872, ग्राम मड़वाना, जनपद–लखनऊ, उ. प्र. पिन-226104 से मुद्रित कराकर सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ, उ. प्र. से प्रकाशित किया।

संपादक – अशोक मानव

www.prakritimail.com
info@prakritimail.com
editor.prakritimail@gmail.com

अंदर के पन्नों पर

P 32 प्रकृति विज्ञान

महानायक

विचार शून्यता का एहसास नायक बनाता है और जब नायक सबके हित का भाव रखता है तो 'महा नायक' बन जाता है।

P 8 जीवन की सार्थकता

P 10 प्रकृति में एहसास ही स्वकर्म

P 11 अनवरत ऊष्मा पद्धति

P 16 ध्वनिः अवस्थाओं का एहसास मार्ग

P 23 डॉ. एस. सोमनाथ : भारत के अंतरिक्ष युग के महान वैज्ञानिक

P 27 चंदन की खेती और पर्यावरण संरक्षणः रेगिस्तान से लेकर जंगलों तक एक हरित क्रांति

P 38 दूसरों से तुलना की बुरी प्रवृत्ति

P 40 पुनर्जन्म अथवा नई संभावनाओं का उदय है सेवानिवृत्ति

P 42 अलनीनो से प्रभावित होने के बाद भारत के पास क्या इंतजाम ?

P 48 मधुमक्खियां, मानव और प्रकृति : साझी जिम्मेदारी

अशोक मानव

संपादक की कलम से

जीवन

जी-जीव (प्रकाश), व-वनस्पति, न-नमी

" वजूद की नजर जब स्व जलवायु ईंधन से मिल जाती है तो जीवन बनता है जो स्व ईंधन मिलान के एहसास से पूर्ण होता है।"

जीव प्रकाश वनस्पति की नमी का घेरा अर्थात जीव प्रकाश वनस्पति के घेरे में आने के बाद जीवन धारण करता है। जीव पर्यावरण को संतुलित करने में विशेष योगदान करता है यदि जीवन का सुरक्षित रखने के लिए पर्यावरण की आवश्यकता है तो जीवन भी पर्यावरण को संतुलित करता है। जीव प्रकाश प्रकृति में फैले हुए वनस्पति पदार्थ के गुणात्मक हवा के घेरे में आने के बाद जीवन धारण करता है। पदार्थ से जीवन धारण होता है और जीव अपना शरीर छोड़कर जाते हैं तो उससे पदार्थ का विस्तार होता है। जीवन निर्माण की श्रृंखला में जल और सूर्य का विशेष योगदान है। जब सूर्य प्रकाश जल पर पड़ता है उससे ऊष्मा बनती है जो हवा बनकर आकाश की तरफ निकल जाती है जो कि एक परिधि बनती है जिसे पर्यावरण संतुलित होता है और जीवन निर्माण योग्य प्रकृति का तापमान बनता है। इसके बाद जलीय जीव पैदा होते हैं यह जीव अपना शरीर छोड़कर जाते रहे जिससे समुद्री मंथन से स्थलीय भाग का निर्माण हुआ। स्थलीय भाग बनने के बाद चार-अचर जीवन की उत्पत्ति हुई इस प्रकार प्रकृति में जीव ही सुंदरीकरण करते गए जिसके बाद मानव की उत्पत्ति हुई। प्रकृति स्वयं पर्यावरण बनाने की क्रिया करती रही है। जब कहीं गंदगी इकट्ठा हो जाती है तो इसमें किसी न किसी जीवन की उत्पत्ति हो जाती है। जो उस गंदगी से उत्पन्न होने वाली जहरीली गैस को खत्म करके प्रकृति के अंदर पर्यावरण को असंतुलित करने से रोक देते हैं। जो जीव गंदगी से उत्पन्न होते हैं उसी को अपना आहार बनाकर मिट्टी में परिवर्तित कर देते हैं ऐसा होने से जानलेवा बीमारी रुक जाती है। यह क्रिया सूर्य प्रकाश के पदार्थ पर पड़ने के कारण होने वाले रासायनिक परिवर्तन से होती है। इसी रासायनिक परिवर्तन से निकलने वाली गैस, गैसीय घेरा बनाती है जिसे पर्यावरण कहते हैं।

प्रकृति में सभी जीव रासायनिक क्रिया का परिणाम है। मानव के अतिरिक्त अन्य सभी जीव एक निश्चित गुण पैदा करने के लिए आते हैं जो प्रकृतिबद्ध होने के कारण अपने निश्चित गुण को प्रकृति में छोड़ते रहते हैं। जिससे प्रकृति का पर्यावरण संतुलित रहता है। वृक्ष शोधित जल और फूलों से सुगंध छोड़ते रहते हैं। जो पर्यावरण को बनाए रखना है। इस पर्यावरण में जहरीले जीव का विशेष योगदान रहता है। जो प्रकृति में फैल रहे जहरीले गुण को अपना आहार बना लेता है जिसे अपने शरीर से परिवर्तित करके मिट्टी में बदल देते हैं जिससे पर्यावरण का संतुलन बना रहता है। इस प्रकार पर्यावरण बनाए रखने में सभी जीवो का विशेष योगदान होता है। प्रकृति में चार-अचर जीवों की उत्पत्ति पर्यावरण बनाने के लिए ही होती है। जिसका निर्माण करके सभी जीव जीवन का आनंद लेते हैं। पर्यावरण बनाने में जीव पदार्थ का विशेष योगदान होता है। यह क्रिया वैज्ञानिक रूप से रासायनिक परिवर्तन के कारण होती है। यदि पर्यावरण असंतुलित हो रहा है तो इसके लिए मानव द्वारा प्रकृति के साथ की जा रही छेड़छाड़ जिम्मेदार है। जबकि मानव विवेकवान प्राणी है जो प्रकृति के जीव पदार्थ के गुण को पहचान कर उसे स्थान विशेष से दूसरे स्थान पर पहुंचा कर उसकी गुणात्मकता बढ़ाकर पर्यावरण को और अच्छा बना सकता है। यह कार्य प्रकृति ज्ञानी और वैज्ञानिक ही कर सकते हैं। पर हर मानव पर्यावरण में अपना योगदान दे सकता है और वह अच्छी भावना। जिस प्रकार सभी जीव वृक्ष अपनी गंध से पर्यावरण में सहयोग करते हैं ठीक उसी प्रकार मानव भी अच्छी भावना की सुगंध से प्रदूषण खत्म करके पर्यावरण को संतुलित बना सकते हैं। दूसरे के प्रति जलन (बैर भाव) अपने विरोधी के प्रति पहुंचाने वाला भाव, सच ना जान पाने के कारण किसी को अपराधी समझ लेना वह अन्य ऐसे भाव जिससे दूसरे को पीड़ा पहुंच रही हो। यह भाव भावनात्मक प्रदूषण होते हैं जो बीमारी को जन्म देते हैं। इससे दूसरों के अंदर बीमारी पैदा होती है और अपने स्वयं के अंदर ऐसे भाव प्राकृतिक प्रदूषण बढ़ाकर पर्यावरण को असंतुलित करते हैं। मानव ऐसे भाव छोड़कर स्वयं को भी रोक मुक्त बना सकता है और पर्यावरण को भी सुरक्षित रख सकता है। मानव सकारात्मक भाव छोड़कर प्रकृति को प्रदूषण मुक्त कर सकता है। जिससे पर्यावरण संतुलित रहेगा। जिसका लाभ मानव स्वयं उठाएगा। प्रकृति प्रदूषण को खत्म करने के लिए ही जीवों की उत्पत्ति करती है। प्रकृति को कोई नुकसान पहुंचा कर मानव ही पर्यावरण असंतुलित कर रहा है इसी आवश्यकता को महसूस करते हुए 5 जून 1972 को स्टॉकहोम में प्रथम मानव पर्यावरण सम्मेलन आहूत किया गया। उसी दिन से 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। सामान्यतः पर्यावरण शब्द से आशय हमारे चारों तरफ के वातावरण से है। इस वातावरण में सभी अवयवों का एक खास संतुलन होता है। संतुलित पर्यावरण में ही आप सब सुरक्षित रह सकते हैं। इसीलिए सकारात्मक भाव छोड़कर आप सब लोग पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में अपना सहयोग करें। अंततः सभी को पर्यावरण दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

पाठकनामा

आदरणीय,
संपादक महोदय
प्रकृति मेल पत्रिका
सादर नमन,

प्रकृति मेल पत्रिका का अप्रैल अंक साभार प्राप्त हुआ। धवल निर्मल झर–झर झरता जलप्रपात तथा मनमोहक विविधवर्णी खिले सुरभित सुमनों की दिव्य छवि से सुसज्जित मुखपृष्ठ ने अभिभूत कर दिया। पत्रिका यथानामे तथागुणे अलंकरण से महिमामण्डित है। संपादकीय चिन्तन में गुरुवर की 'गंध' विषयक दार्शनिक विवेचना अद्भुत है। उनके शब्द–शब्द में कल्याणकारी संदेश निहित होते हैं, जिनका आस्वादन इस अनमोल पत्रिका के माध्यम से मुझ अकिंचन को भी मिल रहा है। आलेख प्राकृतिक ध्वनि, नाम विज्ञान, मार्ग लेकिन एक, तपती धरती और बढ़ता संकट, राजेश्वरी चटर्जी, जलवायु परिवर्तन से.., डिजिटल डस्ट, ट्यूलिप उद्यानोत्सव, अध्यात्म क्या है, समय प्रबंधन आदि सभी उत्कृष्ट, स्तरीय एवं जीवनोपयोगी लगे। सभी काव्य प्रस्तुतियाँ सुंदर, भावपूर्ण एवं मनमोहक हैं।

गुरुवर के शुभाशीष रूप में पत्रिका नियमित मिल रही है। एतदर्थ संपादन – समूह का हृदयतः धन्यवाद।

'प्रकृति मेल' में मनमोहक प्राकृतिक रंग हैं ।
पर्यावरण, अध्यात्म, ज्ञान – विज्ञान अंग हैं।
गुरुवर के दर्शन, जिज्ञासा, सूत्र वाक्य से,
मिलते जीवनशैली के शुभ सहज ढंग हैं।

–गौरीशंकर वैश्य विनम्र

नीचे दिए हुए इमेल पर आप पाठकनामा भेज सकते हैं।

सभी पाठकगण से अनुरोध है कि आप अपने विचार अपने लेख हमें निम्न पते पर भेज सकते हैं–

A/18 ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली रेलवे क्रॉसिंग, रविन्द्र पल्ली फैजाबाद रोड, लखनऊ-226016

आप हमें अपने विचार निम्न ई–मेल पर भेज सकते हैं -
email: editor.prakritimail@gmail.com, Contact: 9807636072, 7376495194

“ मैं चाहती हूं कि मेरी पार्टी का प्रतिनिधित्व पूरे भारत और दूसरे देशों तक पहुँचे। इसलिए, मैं हिंदी में बोल रही हूं।”

एस. कीर्तना

“भारत में सीमित संसाधनों के बावजूद लोग संतोष और शांति के साथ जीते हैं।”

साध्वी भगवती सरस्वती

“असल चुनौती आज भी वही है, फिल्म बनाना, उसे रिलीज करना और ऑडियंस तक पहुंचाना।”

रजत कपूर

“इन चुनावों ने बता दिया है कि इस देश का हिंदू अब जाग गया है और बोलने लगा कि ‘ हिंदू मैटर्स’ यानी हिन्दू होने का मतलब है।”

सुधीश पचौरी

“आप अभ्यास को जाते हैं और छह कैमरे आपका पीछा करते हैं। यह बिल्कुल भी आरामदायक अहसास नहीं है।”

विराट कोहली

“चाय अब सिर्फ पेय नहीं, बल्कि दोस्ती, गपशप और आराम का प्रतीक बन गई।”

विवेक शुक्ला

सीख
प्रवचन
स्वभाव
ही
प्रकृति
A.Lanar

जीवन की सार्थकता

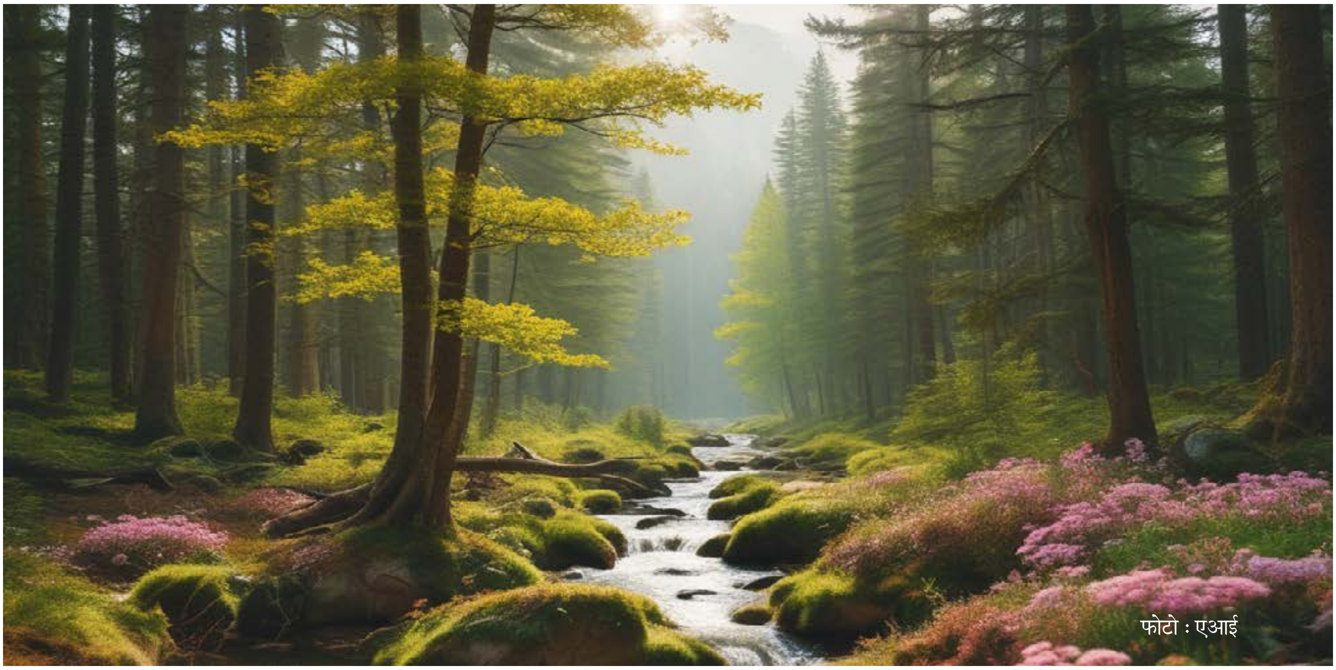

हम प्रकृति प्रदत्त इसी जीवन में प्रकृति के निर्माण में कितने सहयोगी हैं उसका आभास नहीं कर पा रहे हैं हम सोचते हैं कि हमें और अच्छा बनना है जबकी उसने जो बनाया है क्या हम खुद को उससे भी अच्छा बन सकते हैं। हमे ये सोचना चाहिए क्या दुनिया में कोई ऐसा भी कलाकार या निर्माता है जो हमारे जीवन को उससे अच्छा बना सकता है।

कामेश

जीवन प्रकृति का वह अनमोल उपहार है जो हमें मिला तो है परन्तु हम इस बात से पूरी तरह अनभिज्ञ हैं कि हमारे किस कर्म का फल है। या फिर हम यह भी नहीं जानते कि यह जीवन किस उद्देश्य की पूर्ति हेतु हमें प्रदान किया गया है। परन्तु इस अनभिज्ञता में भी हमें इस बात का एहसास तो होता ही है कि यह जीवन हमें यूं ही नहीं मिला है, बल्की कुछ ऐसा उद्देश्य अवश्य है जिसकी जरूरत प्रकृति को है और वह अपना उद्देश्य हमसे पूरा अवश्य करायेगी। हम अधिकतर मौकों पर अपने वास्तविक जीवन के उद्देश्य को तो जानते नहीं या फिर नज़र अन्दाज कर जाते हैं। ज्यादातर हम नज़र अन्दाज कर जाते हैं। क्योंकि कुछ बातें जीवन से सम्बन्धित ऐसी होती हैं जिन्हें करना हमारा मन खुद चाहता है परन्तु हम नहीं करते कभी समाज के डर से तो कभी परम्पराओं के बन्धन से तो कभी पारिवारिक दबाव में आकर हम बहुत सी बातो को न चाहते हुए भी नकार जाते हैं जबकि हमें अच्छी तरह पता होता है कि यह नकार हमारी आत्मा को स्वीकार्य नहीं है। स्वीकार होगा भी कैसे,हम जिन बातों को नकारते हैं वे तो हमारी ही आन्तरिक आवाज हाती है। जो हमें कुछ करने के लिए प्रेरित करती है जो हमे बार-बार इस पारम्परिक दल-दल से निकलने के लिए प्रोत्साहित करती है परन्तु हम अपनी उस आवाज को अनदेखा करते हुए बाह्य जगत की स्थियों के बारे में सोचने लग जाते हैं और बाह्य जगत में जीने की भिन्न-भिन्न तरकीब खोजने लगते हैं।

हम इस सामाजिक रीति-रिवाज में बचपन से ही इस तरह जकड़ दिये जाते हैं कि हम धीरे-धीरे उसी बन्धनों में जीने के आदती हो जाते हैं और अपने अंतःकरण की बातें स्वंय भूल जाते हैं। अपनी इच्छाओं को दबा कर समाज के बनाए नियमों पर चलने के आदती हो जाते हैं हम अपने अन्दर के उस प्राकृतिक यात्रा को भूल जाते हैं जिसने हमें इस प्रकृति का एक अहम हिस्सा बनाया है हम नहीं समझते हैं कि हम भला क्या निर्णय लें सकते हैं। जो समाज में चल रहा है उसी अनुसार हमें चलना है। हम समाज की स्थितियों के आगे नियमों पर चलने के इतने आदती हैं कि खुद के लिए हमारा कोई निर्णय ही नहीं रहा यहाँ तक कि हमारी

इच्छा क्या पाने की है क्या पहनने की है ये लोगों के अनुसार हमें तय करना पड़ता है। जैसे लगता है जीवन हमारा है ही नहीं हमारे जीवन पर औरों का अधिकार चलता है जैसा लोग चाहते हैं हमें उसी तरह जीवन जीना है हमारे जीने का उद्देश्य मानो औरों के द्वारा निर्धारित किया जा रहा है। हम अपने जीवन का अमूल्य समय इस सामाजिक परम्पराओं को दे देते हैं। हमें तो ये भी पता नहीं चलता कि जीवन है भी या नही। क्योंकि रोज-रोज हमें उन्हीं पुराने नियमो पर चलना हमारी आदत है हम खुद कुछ नया करने से डरे हूए हैं हमें डर है इस बात का कि कुछ ऐसा करेगें तो समाज हम पर हंसेगा। हमारी अंतरात्मा जब प्रफुल्लित होती है हंसना चाहती है, पर हम यदि हंसते हैं तो लोग पागल समझेंगें, हमारे अन्दर शांत हो के बैठने की इच्छा होती है पर नहीं बैठते कि लोग कहेंगे कि क्या कर रहा है। हम अपने जीवन को लोगों कहने के अनुरूप चलाना चाहते हैं। लोग हमें और अच्छा कहें और मेरी प्रसन्सा करें बस इसी तरकीब की उधेड़ बुन में हम अपने जीवन को अपने अनुसार चलने से रोक देते हैं। लगता है जैसे हमरे जीवन पर हमारा नही लोगों का हक है मानो खेती हमारी है और फसल लोगों के अनुसार पैदा करनी है।

एक मछुआरा रोज सुबह-सुबह मछली पकड़ने नदी तट पर जाता था उसी क्रम में एक दिन वह सुबह थोड़ा जल्दी घर से निकल पड़ा थोड़ा अंधेरा था वह मछलियाँ पकडने के लिए जा रहा है और रास्ते में उसे एक थैला मिला उठा लिया थैले में हाथ डाला तो लगा कंकड़ पत्थर के टुकड़े हैं लेकर चल दिया नदी किनारे बैठा और थैले से एक-एक कंकड़ निकाल कर नदी में डालता जा रहा है और उधर धीरे-धीरे सुबह होती जा रही है अचानक उसमें जब अन्तिम कंकड़ उठाया तो उसे दिख गया मैं जिसे कंकड़ समझ के फेक रहा था वो तो सब कीमती सोने जवाहारात के टुकड़े थे। सिर पीट-पीट के रोने लगा कि ये क्या कर दिया हमने आई हुई सम्पत्ति हमने पानी में डाल दिया अमूल्य रत्न जो कि हमारी गरीबी दूर कर सकते थे सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ा सकते थे सब हमने फैंक दिया। परन्तु अब पछताने से कोई फायदा भी तो नहीं अब वह सोचने लगा मैं तो लुट गया बर्बाद हो गया, और वह मछली भी नहीं पकड़ा सीधा रोते हुए घर आ गया। ये तो मात्र कहानी थी परन्तु यदि देखा जाये तो हम सभी लगभग अपने अमूल्य जीवन को इसी तरह फेंकते जा रहे हैं। सामाजिक अधीनता के अंधेरे में हम अपने जीवन को फेंकते जा रहे हैं हमें ये भी नहीं पता कि हम जिसे खो रहें हैं वह हमें प्रकृति से कितनी महत्वपूर्ण वस्तु मिली है और फेंक भी रहें हैं तो ऐसी जगह जहाँ से फिर वापस नहीं मिलना हैं।

हम प्रकृति प्रदत्त हंसी जीवन में प्रकृति के निर्माण में कितने सहयोगी हैं उसका आभास नहीं कर पा रहे हैं हम सोचते हैं कि हमें और अच्छा बनना है जबकी उसने जो बनाया है क्या हम खुद को उससे भी अच्छा बन सकते हैं। हमे ये सोचना चाहिए क्या दुनिया में कोई ऐसा भी कलाकार या निर्माता है जो हमारे जीवन को उससे अच्छा बना सकता है। ऐसा कभी नहीं हो सकता परन्तु हम समाज में अपने को प्रतिष्ठित करने हेतु उसके निर्माण के टुकड़े कर खुद अपना निर्माण करना चाहते हैं और सोचते हैं कि बस यही सब कुछ है परन्तु हमें ये नहीं पता कि हम जिस समाज के अनुसार अपना जीवन कैसा चाहते है वह हमे मात्र विकलांग बना रहा है न कि सक्षम प्रकृति हमे पूरी तरह सक्षम बना के ही पैदा करती है। क्योंकि उसे हमसे वो कार्य करवाना है वास्तव में हम जिस कार्य के जिए सबसे उपयोगी हैं, परन्तु हम उस प्रकृति पर निर्भर नहीं कर समाज पर निर्भर हो जाते है और अपना जीवन भी उसी अनुसार लोगों की चेष्ठा करने लग जाते हैं। चाहे हमारी यही चेष्ठा हमें हमारे वास्तविक जीवन से विमुख कर देती है, यहाँ तक कि हम भूल ही जाते हैं कि हमें वास्तव में करना क्या चाहिए हंसी आती है कभी-कभी देख कर जब कोई बच्चा अपने बाप या पड़ोसी से पूछता है कि कौन-सी पढ़ाई पढ़ूं उससे भी हास्यस्पद तब होता है जब बच्चा कुछ कहे करना चाहता हूँ। और घर वाले गले काटने के लिए मजबूर करते हैं बच्चा खेलना चाहता है और माँ बाप पढ़ने के लिए जिद करते हैं, बच्चा घूमना चाहता है और वो उसे कमरे में बन्द कर देते हैं। एक बच्चे को इस तरह विकलांग बना देते है कि तुम पढ़ो बस जो चाहिए हम ले आकर देंगे। यहां तक कि खुद खाने पीने के लिए भी नहीं उठ पाता,कमरे में सारी व्यवस्था है। बस पढ़ो एक अच्छा इंसान बनो,एक ऐसा इंसान बनाने के लिए परेशान है जो कि इतना अपाहिज हो जो चले भी तो अपने पैरों पर नहीं बल्की गाड़ियों पर, खाना भी खाए तो अपने हाथ का बनाया नहीं नौकरों का बनाया, कुछ जीवन में करें भी तो मात्र पैसों के लिए,उसका अपना कोई अस्तित्व नहीं पैसों पर जिए,लोगों के अनुसार जीने को मजबूर हो और सबसे मजे की बात तो ये है कि इसी विकलांगता को सफल जीवन मानते है।

वास्तविक जीवन जीने के लिए व्यक्ति को इन विकलांगताओं में दूर होकर खुद को अपने इच्छानुसार जीवन जीने की जरूरत है उसके लिए सामाजिक स्थियों से हट कर सोचने और चलने की जरूरत है,ऐसा हो कि वह समझे कि वास्तव में उसके जीवन का क्या उपयोग है और अपने जीवन में सही उद्देश्य का पहचान कर चलने की जरूरत है। और हमें जीवन का उद्देश्य जानने के लिए विचार करने और सोचने की कोई जरूरत नही बल्की खुद को प्रकृति पर छोड़ देने की आवश्यकता है क्योंकि हमारा सबसे बड़ा मार्गदर्शक खुद हमारे भीतर है। उससे अच्छा हमारे बारे में कोई दूसरा नही जान सकता और ना ही कोई मार्ग दिखा सकता है, अतः अपने अन्दर के सही एहसास को समझ कर उसी अनुसार जीवन जीने की जरूरत है जो हमें सबसे अच्छा लगे और जिससे सुकून मिले। इसी तरह हम पूर्ण सक्षम हो कर प्रकृति के अनुशार अपना वात्विक जीवन जीने में सफल हो सकते हैं। और यही हमारे जीवन की वास्तविक सार्थकता होगी।।

प्रकृति में एहसास ही स्वकर्म

गौरव पंत

प्रकृति में हर किसी का एहसास ही उसका स्वकर्म है। जिससे हर कोई अपनी स्व यात्रा को पूरा करता हैं। मानव को छोड़कर प्रकृति में हर सजीवता निर्जीवता इसी एहसास का आनंद ले रहे है और अपनी स्वयात्रा स्व कर्म से पूर्ण कर रहे।मानव ही प्रकृति का ऐसा जीव है जो विकलांगता बनाकर उस एहसास से वंचित रहने का मार्ग तलाशता रहता हैं जो की संभव ही नहीं है। क्योंकि एहसास ही हर किसी का स्वकर्म हैं। तभी हर किसी को उसकी अग्रिम रासायनिक यात्रा का ईंधन मिलता है जब वो अपने एहसास से वहां तक पहुंच जाता है। इसमें किसी प्रकार का हस्तक्षेप करना स्व ईंधन को कमजोर करना है। एहसास वह रासायनिक चुंबकत्व हैं जो स्व संचालित है। इसमें किसी परिभाषा से कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता है। ना ही किसी सही गलत की मानववादी सोच से ये संचालित होता है।

हमारा एहसास ही हमें गतिमान किये हुए है।
प्रकृति में एहसास ही स्वकर्म है।
न इसे बदला जा सकता।
न इसे मिटाया जा सकता।
एहसास से ही अपना कर्म पूरा किया जा सकता।
किसी भी परिभाषा से इसे व्यक्त नहीं किया जा सकता।
ना ही एहसास को बांटा जा सकता।
हर किसी का एहसास ही उसे पूर्ण करता जाता।
अशोक बन ही अशोक एहसास किया जा सकता।

अनवरत ऊष्मा पद्धति

जीवन का सत्य (उमंग तृष्णा, प्रश्न चित्त कृष्णा, वात निर्वात क्रीडा)??????.........अशोक निवास

अभिषेक पंत

जीवाणु निर्माण में आकृति पारा ही ज्योति विषय का सूर्य बनाता है। जिसमें जीव भाव की नेत्र प्रकाश तृप्ति ही रासायनिक निरंतरता से ऊष्मा प्रवेश को ऊर्ध्वगामी बनाती है, जो उस जीव तुला में परिवर्तित हो जाता है, जहां से प्रकृति भाव ही प्रवृत्ति भार का अस्तित्व कालीन स्वशन निद्रा परिचय बन जाता है, जिसकी पूर्ति की नियति ही ऊष्मा प्राप्ति है। अर्थात अस्तित्व की स्वशन पराक्रमी निद्रा के भाव प्रवृत्ति संयोजक तत्व की प्रकृति आकृति पारा जीवाणु संगति से निर्मित जीव भाव विलायी रासायनिक तृप्ति की उर्ध्वगामी निरंतरता के ऊष्मा प्रवेश की नेत्र प्रकाश स्वीकृति चयनिता को ऊष्मा प्राप्ति सिद्धांत कहते हैं। ऊष्मा प्रति सिद्धांत की जीवन निधि का संपर्क क्रम ही स्वभावी पराकृति का नीति पारा होता है, जिसमें आकृति स्वीकृति संचालिका स्मृति से ही विविधता परिपूर्ति की जीवन सांख्यिकी परिपक्व होती है। अनवरत ऊष्मा पद्धति का भाव ही यही है कि जिस जगत उदय की संचालिका में स्मरण व्यक्तित्व का पारा स्त्रोत इच्छागामिनी सिद्धि को अर्कलीन करता है।

जीवन ज्वाला की मतभेदी चयन पेटी का मन्थनी अवसरवाद भी उस सत्य की ज्ञापित अस्थाई निरंतरता को देख नहीं पाया, जहां से ऊष्मा निधि का चयन उत्कर्ष ही प्राकृतिक शीतलता को शून्य अंकित अवस्था में राधिका लिप्त कर रहा था। अर्थात प्रकृति के दो सिद्धांतों की जीवनी से ही मूल सत्य अंकित जीवन धारा का आत्मा प्राण वायु चक्र गतिमान होता है, जो अनवरत ऊष्मा पद्धति की कृषि में तत्पर रहता है। पहला सिद्धांत - जीवन अर्क, दूसरा सिद्धांत - ऊष्मा प्राप्ति

जीवन अर्क सिद्धांत

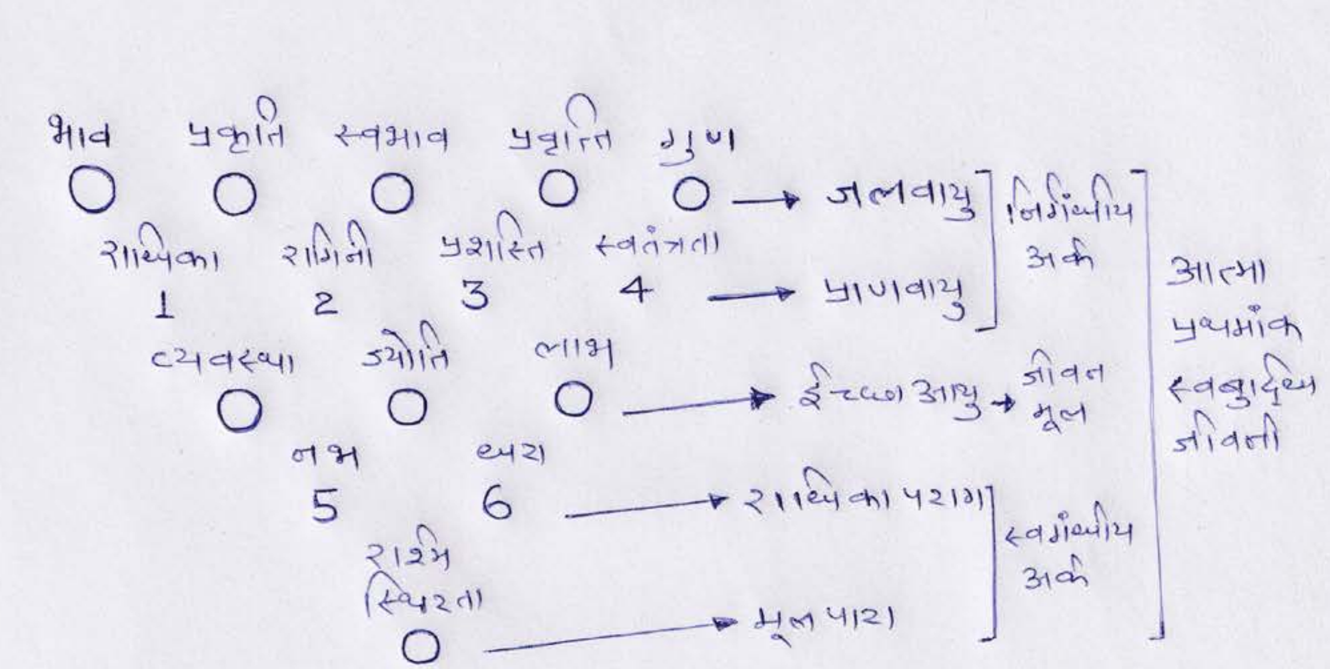

राजा रंक की पद्धति से परे जीवन तत्व संपन्नता का रासायनिक प्रकार होता है, जिसमें मूल आधार सत्य अंकित इच्छाओं का गंधीय मंथन ही तरंगीय वृति को परिपक्व करता है। अर्थात रासायनिक पूर्णता में उत्पन्न इच्छा की मूल राधिका सृष्टि को प्रथम चयन का तत्व पदार्थ मिलान कर्ता बनाने वाले आंतरिक प्रकाश की गंधीय ऊर्जा से निर्मित ईंधन जलवायु वनस्पति लीन नभ अंकन नीति की कर्म रस विविधता को जीवन अर्क सिद्धांत कहते हैं। जीवन अर्क सिद्धांत की मूल भावना का जलवायु रेशा ही जगत प्राप्ति विवेचना को कर्मलीन करता है, जिसमें प्रकृति रथी मूलता की प्रवृत्ति चेतना का जीवाश्म पराग ही रासायनिक विविधता को पदार्थ लीन करता है। जीवन अर्क सिद्धांत को ऐसे भी समझा जा सकता है -

अर्थात आत्मा प्रथमांक स्वबुद्धि जीवनी की निर्गन्धीय अर्क में लीन स्व गंधीय अर्क की जीवन मूलता के प्रथम जलवायु संगत प्राणवायु प्रकृति विलयी इच्छा आयु सेतु की राधिका पराग मार्ग लीनता विविधता की मूल पारा विषय अंकिता को जीवन अर्क सिद्धांत कहते हैं। जलवायु के पांच रस मूल होते हैं - भाव, प्रकृति, स्वभाव, प्रवृति, गुण। प्राण वायु के चार तत्व मूल होते हैं - राधिका, रागिनी, प्रशश्ति,स्वतंत्रता। इच्छा आयु के तीन तरंगीय मूल होते है - मन्थनी व्यवस्था, मिलान ज्योति, कर्म लाभ। राधिका पराग के दो रासायनिक मूल होते हैं - नभ, धरा। मूल पारा का एक ध्वनि मूल होता है - रश्मि स्थिरता।

जलवायु की अर्क लीनता में भाव संपन्न प्रकृति का स्वाभाविक गुण विकसित होकर प्रवृत्ति जीवनी अंकिता को गतिमान करता है। प्राण वायु का अर्क मूल राधिका स्वतंत्रता की रागनी प्रशश्ति को निर्गन्धीय विविधता में प्रकृति लीन करता है। इच्छा आयु की अर्क पद्धति ही मन्थनी व्यवस्था से मिलान ज्योति को कर्म लाभ कारक बनाती है। राधिका पराग की अर्क निधि नभ एवं धरा का सूर्यानवन जीवन लीन करती है। मूल पारे की अर्कवृत्ति रश्मि स्थिरता को जीवन संगत करती है। अर्थात निर्गन्धीय स्वगंधीय प्रकृति की अर्क मूल जीवनी के आत्मा क्रमांक में लीन स्वबुद्धि विविधता को जीवन अर्क सिद्धांत कहते हैं।

ऊष्मा प्राप्ति सिद्धांत -

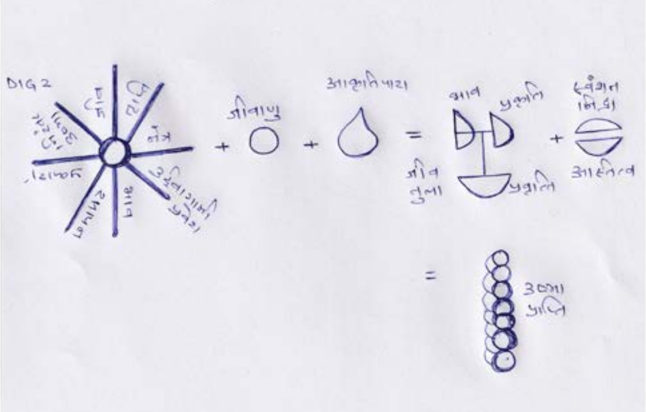

अलगाववादी तंत्र मंत्रणा सिद्धांत रूपी अयस्क वयस्क रश्मि रथ बनाए गए। जलवायु सिद्धि के प्रथम अस्त्र वस्त्र बनाए गए। अपितु जीव प्राणी को रेखाचित्त चेतना का बोध कभी नहीं हुआ, जबकि जीव आयु विविधता की निर्गन्धीय स्वभाव रिद्धिमा में प्रकृति ने ऊष्मा प्राप्ति सिद्धांत निर्मित किया। अर्थात उर्वरक निरंतरता की गतिमान शैली के तरंगीय भाषा मिलान की स्वाभाविक आवृत्ति निर्देश - स्वतंत्र कम्पननता प्रवेश गुणवत्ता लावणयता भूमि शुण्यांवन वृत्ति को ऊष्मा प्राप्ति सिद्धांत कहते हैं। अर्थात जीवन का मूल रंग तो मृत्यु पराक्रम का निधिवन होता है। अपितु जीवन संगती का कार्य क्षेत्र ही सूर्यवन की प्रकृति का ज्योति भाव होता है जो ऊष्मा प्राप्ति सिद्धांत की गतिमान ऊष्मा निरंतरता से प्रकृति अस्तित्व की जीवन धारा को तत्व लीन पदार्थ के योग्य बनाता है। अर्थात प्राण उदयी विविधता के जीवन प्रमेयकों में लीन प्रथम मृदा जलवायु वृत्ति की प्राणवायु शोधन संयमित को ऊष्मा प्राप्ति सिद्धांत को कहते हैं। ऊष्मा प्राप्ति सिद्धांत को ऐसे भी समझा जा सकता है -

अर्थात जीवाणु निर्माण में आकृति पारा ही ज्योति विषय का सूर्य बनाता है। जिसमें जीव भाव की नेत्र प्रकाश तृप्ति ही रासायनिक निरंतरता से ऊष्मा प्रवेश को ऊर्ध्वगामी बनाती है, जो उस जीव तुला में परिवर्तित हो जाता है, जहां से प्रकृति भाव ही प्रवृत्ति भार का अस्तित्व कालीन स्वशन निद्रा परिचय बन जाता है, जिसकी पूर्ति की नियति ही ऊष्मा प्राप्ति है। अर्थात अस्तित्व की स्वशन पराक्रमी निद्रा के भाव प्रवृत्ति संयोजक तत्व की प्रकृति आकृति पारा जीवाणु संगति से निर्मित जीव भाव विलायी रासायनिक तृप्ति की उर्ध्वागामी निरंतरता के ऊष्मा प्रवेश की नेत्र प्रकाश स्वीकृति चयनिता को ऊष्मा प्राप्ति सिद्धांत कहते हैं। ऊष्मा प्रति सिद्धांत की जीवन निधि का संपर्क क्रम ही स्वभावी पराकृति का नीति पारा होता है, जिसमें आकृति स्वीकृति संचालिका स्मृति से ही विविधता परिपूर्ति की जीवन सांख्यिकी परिपक्व होती है। अनवरत ऊष्मा पद्धति का भाव ही यही है कि जिस जगत उदय की संचालिका में स्मरण व्यक्तित्व का पारा स्त्रोत इच्छागामिनी सिद्धि को अर्कलीन करता है, उसी पारा बुद्धि की समय वृत्ति में संचय ऊष्मा प्रकृति की स्थिरता का जन्म होता है, जो एक प्रकार से जीवन शक्ति की ज्ञापित आशाओं का अलगाववादी चिन्ह होता है एवं जीवन संगती की सत्यापित रश्मियों का संयोजक पराक्रम भी होता है।

अर्थात ज्ञापित निरंतरता की सत्यापित विविधता ही समय शीर्षक प्रकृति की स्वभावी अर्कशाला होती है, जिसमें भाव शून्य बुद्धि की विचार पूर्ण स्मृति भी प्रवृति संचारी नियति होती है, ऊष्मा भाव की कलाकृति में जन्म अंकित शेषाधार ही स्वतंत्र उन्मूलन की कुंजी होती है, जिसमें जीवन का सत्य अनवरत ऊष्मा पद्धति से संबंधित होता है, जो उमंग तृष्णा को प्रश्न चित्त कृष्णा से उभार कर वात निर्वात क्रीड़ा में इच्छाधारी तत्वों को पकड़ता है।

उमंग तृष्णा - वैश्विक अनिश्चितता की स्वाभाविक निश्चिंतता

में समर प्रान्तीय प्रकृति का मति उल्लेख ही जीवन धातु नियमावली को आत्मालीन करता रहा। प्रकृति उन्नतशील अन्वेषा की जीव श्रुति में ज्ञापित कायाकल्प को दिशालीन करती रही, जहां से पदार्थ शाखा रासायनिकता का गंधीय गुण ही प्रभाव कृति नियति को जलवायु पूर्ण करता रहा। इसी आकर्षण पराकर्षण की नियति में जलातुर विधान की वायु पूर्ण समयंकिता से अग्नि उद्भव मृदा लीनता में शारीरिक पूर्णता को ऊष्माकृत करने हेतु उमंग तृष्णा का भाव बना, जिसमें व्यसन प्राशन उम्मीदवारिता की जीवन घड़ी का वस्त्र पारा अंग समागम पकाया गया। अर्थात जीवन के सत्य की मूलता का प्रथम भाव ही उमंग तृष्णा की गतिशील मृदा लीनता है। जिसमें विधान ऊष्मा प्रकृति की आंतरिक स्वरतालिका ही जलवायु शोधन की वृत्ति को पदार्थ लीन करती है। अर्थात उर्वरक न्याय की मन गर्भ सात्विकता में उत्पन्न प्रथम तत्व रश्मि अणुता की आभा रंग गतिलीन आत्मा प्रकृति को उमंग तृष्णा कहते हैं। अर्थात उष्मित जलवायु जीवाणु की जीवाश्म प्रवृत्ति लीन आंतरिक न्याय प्रकृति की आधुनिकक्षारीय क्षमता को उमंग तृष्णा कहते हैं। उमंग तृष्णा की वैधानिक वृत्ति का औपचारिक पलायन नहीं होता। उमंग तृष्णा की जन आधुनिक विश्वसनीयता का ज्ञापित रस वाद्यन नहीं होता। प्रकृति रस की मूल इकाई का प्रथम गुंजन वृत्त शील करते इच्छा वैधानिक प्रवृति शीलता को उमंग तृष्णा कहते हैं।

प्रश्न चित्त कृष्णा – उदवित आकृति लोभ की आंतरिक नाड़ी शक्ति में लीन समरसता पूर्णांक की जगतलीन राधिका केआभा न्यायिक विधान पलायन को प्रश्नचित्त कृष्णा कहते हैं। अर्थात गतिशील लोभ की मोही प्रवृत्ति ही प्रकृति शील उन्नति की दर्पण राधिका होती है। जिसमें भावनात्मक तृष्णा की आंतरिक विगति ही प्रगतिशील व्यंजन शिला को शारीरिक भाव से परिपक्व करती है। आंतरिक शोधन की विगत इकाई के नामांकित प्रतिपादन की भौतिक घड़ी में उत्पन्न रासायनिक विलियन नाड़ी उर्वरकता को प्रतिशत दशमलवी साधन में आयुविहीन करने वाले तत्व पारा रश्मि रंग भी बनाए गए। अपितु राशि रश्मि नामांकित प्रतिकारिता में प्रकृति ने ध्रुवीय उन्मुक्तता का परावर्तन भाव बनाकर समापन चेतना की प्रश्नचित्त इकाइयों का कृष्णांकन आरंभ कर दिया, जिससे पदार्थ मध्य होने वाली रश्मि पारा विविधता ही उत्पत्ति विषय की प्रश्नचित राधिका को इच्छा प्राणवायु भट्टी की गति से पकाने लगी।

जब तल का ताल से, हल्का हाल से, नल का नाल से, बल का बाल से, थल का थाल से, जल का जाल से, मल का माल से, कल का काल से आमना सामना हुआ; तब जिस धरा ने धारा की धारणा को ऊष्मा पूर्ति का ब्रह्मांडीय भाव बनाया, उस धरा की प्राकृतिक सभ्यता के प्रथम अनुचरण में विकसित उत्पत्ति की मात्रा को अशोक निवास कहते हैं। अर्थात याचना का रण संबंधी अयस्क मानव की कल्पनिकता है, वास्तविक जीवन का सत्य अशोक निवास है। प्रकृति जीव विज्ञान की समृद्धि में आत्मा नवल संचार करना बंद कर रही, सूचना का बल से कोई संबंध नहीं होगा। अशोक निवास ही अनवरत ऊष्मा पद्धति का धागा है, अब ऑक्सीजन रिएक्टर से ही ताल, हाल, नाल, बाल, थाल, जाल, माल का भक्षण होगा।

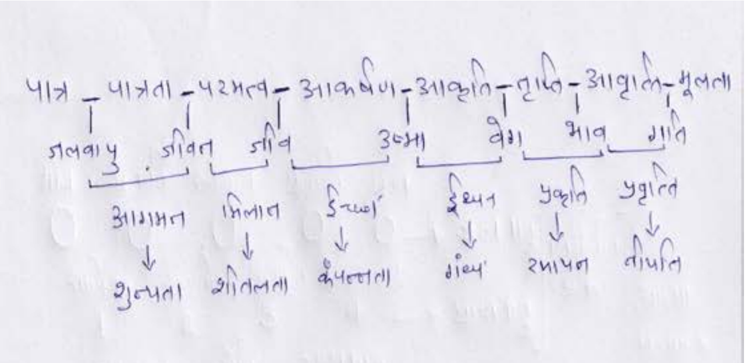

वात निर्वात क्रीडा – राधिका उन्मूलन प्रतिकृति की शोधन व्यूह विलयी प्रथम भाव भाषा गुणांकिता की जन्म मृत्यु नाड़ी कम्पननता प्रवृत्ति को वात निर्वात क्रीडा कहते हैं, जिसमें जीवन की रंग चालन वृत्ति ही माध्यम चालक रिद्धिमा को जीवाश्म लीन करती है, जो एक प्रकार की भाषा अनुभवी वृत्ति को आत्मा वाहन चेतना का गर्भ भाव बनाती है। प्रकृति की उन्मुक्तता एवं प्रकृति की सूर्यता का जन्म भाव ही प्रकाश वातानुकूलन का स्तूपिय जीवन भाव होता है। अर्थात मानक वृत्ति की रंगमान्य चेतना में लीन प्रथम उद्भव राशि रसायनिकता में उत्पन्न गंधीय पराक्रम नाड़ी तार जुड़ाव की इच्छा राधिका विलयन समय अंकिता को वात निर्वात क्रीडा कहते हैं।

प्रकृति पथ की उपकारिता नहीं होती, प्रकृति पथ में राधिका रथ की उपद्रविता नहीं होती। प्रकृति में प्रत्येक विषय की संपन्नता का ऊष्मा रस तैयार होता रहता है,जिसमें प्रकृति भाव की निद्रा वाहिनी संग्रहित ही स्वसन रूपी सिद्धांत से जीवन के मूल सत्य 'इच्छा' को वाहन लीन करती है। भंडारण पद्धति का जाप करना मानव की इकाई रही है, जबकि जन्म सिद्ध सूचना अनशन बनाना दानव की दहाई रही है। अर्थात प्रकृति में एक ही गुण का एक ही अवस्था पारा होता है। इसलिए प्रकृति में सदैव अंकन रिक्तता भी जीवनी ध्यायी रही है । सूचना मध्य उत्पन्न मूल सारणी व्यवहारिक परिचारिका के बल परयुधिष्ठि प्रक्रियाओं को पंचमादित्य वांशिक रोहिणी काल बनाने वाला मानव सदैव ही राधिका चित्त व्यवसाय में कुटुंब अधीन अधीर व्यवहार का जीवन बनाता रहा । जबकि प्रकृति की आंचल व्यवस्था तोअंग रथी   इच्छा सारथी व्यवहार पर निर्भर करती है जो जितना स्वभावी उन्मुक्तता पर गतिमान रहता है, उसकी विषय अंकिता उतनी प्रकृति लीन रहती है अर्थात संपन्नता का सार स्वाभाविक उत्पत्ति का

विषय है। सार्थकता का विषय मूल संपूर्णता का भाव है। जिसमें जीवन का सत्य इच्छा रूपी विषय का मूल आयाम है । जो उष्मित भाव की अंकन रिद्धिमा से ध्वनित पारा चक्र में राधिका लीन तरंगों को अवघटित करता है। अर्थात राधिका तरंगिय विषय प्राप्ति की ईंधन धारा के इच्छालीन घटनाक्रम को जीवन का सत्य कहते हैं। जीवन का सत्य अनुभवों की आस्था नहीं,जीवन का सत्य तो नाट्यं धुरी की चंद्रमा के पराक्रमी आक्रमण का मूल तत्व प्रणय पर्दा हटाता है। अर्थात जीवन का सत्य मूल तत्व पर्दे का स्तूपिय निर्माण है। अर्थात जलवायु आकर्षण की ज्योति नहीं अपितु प्रकृति नीति की विकास परिधि है, जिसमें मूलता की धारा का मानक कर्म ही जीवाश्म जीवाणु स्वतंत्रता को पर्दा लीन करता है। अर्थात भावनात्मक कृष्णा की मूल ज्योति के अनुकृति मयी आकृति लीन इच्छा धारा धातु विषय परत कंपन्यता को जीवन का सत्य कहते हैं। अर्थात जिस मार्ग की अनुभवी कृति ही मूल दिशा की ज्योतिशीलता बन जाती है उस मार्ग की प्रथम अनुवृत्ति ही नागरिक शास्त्र जैसे विषयों की भांति मात्र अपनी मात्रा का अनुकलन आवृत्ति लीन करती है।

पदार्थ का वास्तु मोह ही जीवनी तार्किक संध्या का रंग बनाता है जिसमें तत्वों की नीति का मात्रा अनुकरण सिद्ध होता है। जीवन अर्थात ईंधन जलवायु वनस्पति नभ पूर्ति का इच्छा जलवायु वनात्मीय नभ, अर्थात जिस पात्र में जलवायु की समृद्धि ही पात्रता का स्वभाव बन जाती है उसी में जीवन की उत्पत्ति होती है, जिसे अनवरत ऊष्मा पद्धति कहते हैं, जहां से जीव विज्ञान की उत्पत्ति होती है।

अर्थात आगमन शून्यता की जलवायु पात्रता के पात्र निर्माण को जीवन कहते हैं। अर्थात मिलान शीतलता की जीवन पात्रता के परमत्व एहसास को जीव कहते हैं। अर्थात जीव जीवन इच्छा की कंपन्यता आकर्षण सिद्धांतीय ऊर्जा को ऊष्मा कहते हैं। अर्थात् गंधीय ईंधन लीन ऊष्मा आकृति की प्रथम नीति को अनवरत ऊष्मा पद्धति कहते हैं। अर्थात प्रकृति रसायन भाव की आवृत्ति मूलता के गति नियति प्राण वायु गुरुत्वाकर्षण को जीवन का सत्य कहते हैं। अर्थात जीव विज्ञान की उत्पत्ति प्रवृत्ति रूपी नियति की मूलता में होती है, जहां से पात्र का परमत्व ही पात्रता का आकर्षण बनकर, आकृति की आवृत्ति से मूलता की तृप्ति बनाता है, जिसमें जीव जलवायु ऊष्मा जीवन ही गति वेग भाव अंकित में अस्तित्व की प्रवृत्ति बनाता है। अर्थात पात्र ही नियति बन जाए इसलिए जीवन की उत्पत्ति हुई एवं नियति की आगमन शून्यता ही जलवायु पात्र बने इसलिए जीव विज्ञान की उत्पत्ति अनवरत ऊष्मा पद्धति में हुई। इसे ऐसे भी समझा जा सकता है - कि सत्य का अनुकरण करना मात्र जिज्ञासा है अपितु जो वास्तविक सत्य है वह तो एहसास रूपी नियति है, जो घड़ी नाड़ी प्रभाव से परे है। अर्थात तन मन की अपेक्षा तो आत्मा की विस्तृत ऊर्जा निशा है, वास्तविकता तो मूल संयमिता अग्रासनी वातानुकूलन समृद्धि में है। अर्थात जीव विज्ञान ही ऊष्मा पद्धति है एवं जीवन का सत्य इस पद्धति का अनवरत प्रवाह है, जो वहां तक जा रहा है जहां से आ रहा है। प्रकृति दुर्बलता की भेंट में सबल मिलान नहीं होने देती, प्रकृति तो निशाचरी निष्ठा में भी अद्वितीय पराक्रम का वंशज प्रणय आकृति लीन करती है। अर्थात जिस गति में संध्या ने रात्रि का परिचय प्रभात काल से कराया, उसी विराटता की पूर्णता में उत्पन्न प्रदूषण को प्रकाश सहित पकाने के लिए जीवन की उत्पत्ति हुई, जिसे प्रकृति ने भाव प्रदूषण का विग्रह कहा,जिसे प्रकृति ने अनवरत ऊष्मा पद्धति से पकाकर ; विकसित कर ; पूर्ण कर मिटा दिया।

पराक्रम महत्ता की भेंट नहीं अपितु महानता की परनिधि है। .... यही बताकर

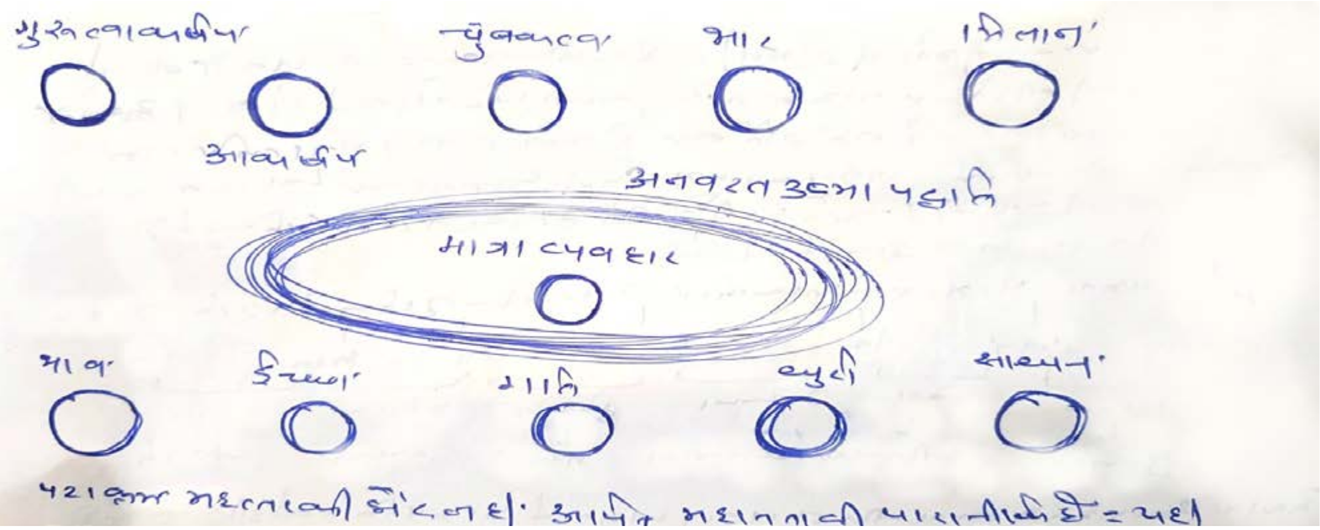

प्रदूषण आरंभ किया गया, जिसमें विस्तार के तनाव को मूलता के बहाव में जोड़कर बीच से विखंडित करने का प्रयास किया गया। इसी प्रयास में जिस बल से तनाव की आकृति का निस्तांतरण ही बहुआयामी भार का विद्युत संपर्क बनाया गया, उसी विखंडन के बिंदु प्रवेश में बाहय सूचना को गतिलीन कर, ब्रह्मांड में प्रकृति से अनवरत ऊष्मा पद्धति की उत्पत्ति हुई। अर्थात ब्रह्मांड तो सुचारू रूप से धरातल की आकाशगंगा का पदार्थ परिणाम एकत्रित कर ही रहा था अपितु इस एकत्रण में जीवांकनी माया का एकाएक प्रवेश करना मात्रा विखंडन की निशानी है। अर्थात पदार्थ के बल को गुरुत्वाकर्षण बनाना जलवायु धारा है। आकर्षण के आयाम को तत्व संकेत देना प्राण वायु वेग है। चुंबकत्व की राधिका में आकृति शीर्षक मिलाना आत्मा भाव है। भार की पूर्णता में इच्छा की गति सुचना ही मन प्रकृति है। मिलान के मानक परिधि की शून्य प्रवृत्ति ही तनआत्मीय रस है। भाव मात्रा व्यवहार का आकारलीन धरातल है इच्छा मात्रा व्यवहार की शून्य अस्त्र इकाई है। गति मात्रा व्यवहार की नभ धरा मिलान कर्ता परिधि है। धुरी मात्रा व्यवहार की रासायनिक ज्योति का प्रथम आकार है। साधन मात्रा व्यवहार की प्रकृति का जीवन आधार है। अर्थात जीव विज्ञान मात्रा व्यवहार है, जीवन अनवरत ऊष्मा पद्धति है। जिसमें पदार्थ की क्षमता को तत्व की व्यवहारिकता बनाने हेतु गुरुत्वाकर्षण, आकर्षण, चुंबकत्व,भार, मिलान जैसे बल योग की ऊर्जा संवृत्ति का विकास किया गया।

प्रकृति का जीवन समागम आरंभ हो चुका है, अनवरत ऊष्मा पद्धति अपने अंतिम चरण में प्रवेश कर चुकी है इसीलिए प्रकृति द्वारा मानव इच्छाओं का पटाक्षेप प्रभावी ईंधन जलवायु धरातल मिटाया जा रहा। जीव विज्ञान को इस प्रकार भी समझा जा सकता है -

(मूल भाव-ध्वनि प्रदूषण) = ऑक्सीजन रिएक्टर = श्वसन प्रणाली - अर्थ शिक्षा (अशोक रासायनिक थल, इच्छा शयन क्षारीयता)

ध्वनि ही निद्रा पोशाक है, जिसमें शून्यता के बल से प्रकाश की छिद्रता को पकाया जाता है, जहां से श्वसन प्रणाली का ऑक्सीजन रिएक्टर ही मूल भाव को धारण कर, जलवायु योग को रासायनिक आवृत्ति में परिवर्तित कर देता है, इसी परिवर्तनशील आकृति चिन्हिता को ऊष्मा पद्धति कहते हैं, जो जीव विज्ञान का आरंभ है।

जनसभा धारा धातु की कल्पना से परे मात्रा विकास की व्यवहारिकता के ध्वनि नाड़ी उदय में उत्पन्न इच्छा मानसिक जीवाणुता को ऑक्सीजन रिएक्टर कहते हैं।

अर्थात अर्थ शिक्षा की धारा से स्वशन प्रणाली के ऑक्सीजन रिएक्टर को ध्वनि प्रदूषण खिंचाव का मूल भाव बनाने वाले अशोक निद्रा पोशाक के शून्यतम पकवान धारा आवृत्ति योग को जीव विज्ञान कहते हैं। अर्थात साधन बनाने की इकाई में जब ब्रह्मांडीय निर्माता स्वयं ही पोशाक शयन की मात्रा से निद्रा स्वशन का आकर्षण परिवर्तन की रसायनिकता में केंद्रित करता है, उस केंद्रण के अशोक निवास को जीव विज्ञान कहते हैं।

अशोक निवास - जब तल का ताल से, हल्का हाल से, नल का नाल से, बल का बाल से, थल का थाल से, जल का जाल से, मल का माल से, कल का काल से आमना सामना हुआ; तब जिस धरा ने धारा की धारणा को ऊष्मा पूर्ति का ब्रह्मांडीय भाव बनाया, उस धरा की प्राकृतिक सभ्यता के प्रथम अनुचरण में विकसित उत्पत्ति की मात्रा को अशोक निवास कहते हैं। अर्थात याचना कारण संबंधी अयस्क मानव की कल्पनिकता है, वास्तविक जीवन का सत्य अशोक निवास है। प्रकृति जीव विज्ञान की समृद्धि में आत्मा नवल संचार करना बंद कर रही, सूचना का बल से कोई संबंध नहीं होगा। अशोक निवास ही अनवरत ऊष्मा पद्धति का धागा है, अब ऑक्सीजन रिएक्टर से ही ताल, हाल, नाल, बाल, थाल, जाल, माल का भक्षण होगा। प्रकृति ने सिद्ध किया की अनवरत वही है जो आवृत्तिहीन मात्रा के व्यवहार से परे मूल अस्तित्व में लीन है, अब जीवन का सत्य ही अंतिम क्षण भक्षण होगा।

है परवाजों की क्या रजा?,
जो आहिस्ता रूह ने अपनी ही रियासत का पन्ना खोल दिया
वो गुल ओ पनाग की रहबरी में क्या जज्बात खोजेंगे,
जो रूह ने ही रूह से अलविदा बोल दिया।....
कायदा कहता है कि,
रुखसार का बयान ही अनजान महफिलों का हादसा है,
अलबत्ता कुदरत का यकीन तो,
रूही पर्दे से भी आगे का मसला है,
जो गर्म जोशी से नहीं,
सिर्फ एहसास से हकीकत पसंद होता है।
इस वाहिद रहगुज़र पर जिंदगी के मुकाबले कुदरत ने अपने यकी को आगे माना और बयां किया। .... कि
" शर्त किफायती है अगर कर्ज का माफिया ही गुलज़ार ए रजामंद हो, जो बेहद शिरकती में भी कवायदों का काफिला बनाते हैं, अपनी तोहीन का मुकाबला मिट्टी में करते हैं।.....
यानी जब भी जिंदगी ने पर्दे में पर्दा घोला है,
मिट्टी ने ही रंग में रंग घोला है,
जब भी यकीं से आगे किसी ने वक्त से पहले पर्दा खोला है...तभी मौत ने दस्तक दी है। .....अलविदा बोला है।"

The time of rise is the weight of wise ; having care free attention ; which makes the result intentional . Therefore nature accordingly created the moment of seed memory in the form of curtain resonance.

ध्वनि: अवस्थाओं का एहसास मार्ग

सुमनलता

जीवन अवस्थाओं की परिवर्तन स्थली है अर्थात् अवस्थाओं की प्रतिक्षण गतिमान होती चरणावली ही जीवन को गतिमान करती है जिसे सामान्य दृष्टि में मानवीय भाषा में समय परिवर्तन से परिभाषित किया गया है जिसे भूत, भविष्य एवं वर्तमान की समय राधिका से परिवर्तित किया जा सकता है जो मात्र एक अहंकार है जिसमें स्वयं के स्तूप का भेदनतो मानव स्वयं करता है अपनी अवस्थाओं को स्वयं के अभिलाषित तरंगों को पूर्ण करने के लिए जो प्रकृति में प्राकृतिक मार्ग अवस्था की स्थापना ना करते हुए एक ऐसी धरा की स्थापना करती है जहां पे देह की अहंकारी तालिका आत्मा के एहसास करने की सक्षमता को नज़रअंदाज करते हुए वेदनात्मक समय अर्थात् वेदना एवं अपरिपक्व कर्म की मृदा को स्थापित करती है अपितु वास्तविक अवस्थाओं का परिवर्तन तो स्वयं को स्वयं के जीवन में एहसास समय में सि(ांत मार्ग विलीन करते हुए ईच्छाओं का भोगीय श्रृंगार नहीं अपितु प्रकृति जीवन में जीव द्वारा निर्मित एवं स्थापित स्वयं जीव की रासायनिकता सि(ांत होकर मार्ग का निर्माण करती है जो परिपक्व होकर उसी मार्ग को जीव के सम्मुख लाती है जिस प्रकार के कर्म रासायन को जीव आत्मा स्थलीय में ब्रह्माण्ड के रसायन कण अणु गंध विज्ञानशाला में अंकित किया है।

फोटो : एआई

प्रकृति कभी रुकती नहीं है प्रकृति में भूत भविष्य वर्तमान का कोई स्थान नहीं है प्रकृति में तो एकमात्र अवस्था है वह है एहसास जिसे प्रकृति केवल मानव में नहीं अपितु प्रकृति धरा में स्थापित प्रत्येक भूमि में पदार्थ में तत्व में गंध में रासायन में ध्वनि स्वरूप में विराजमान हैं। सजीव तो प्रकृति के प्रत्येक भूमि में है ''मृदा यदि सजीव नहीं होती तो बीज का अंकुरण कैसे होता जल यदि सजीव नहीं होता तो जीवन की स्थापना कैसी होती वायु यदि सजीव नहीं होता तो स्वासन लेने की प्रणाली कैसे स्थापित होती।

अर्थात् जब देह में इच्छाओं का भोगी अहंकार नहीं होता है मात्र एक अवस्था होती है स्वयं को विचार से मुक्त करते हुए स्वयं के मूल प्रवृत्ति को स्वयं के वास्तविक अभिव्यक्ति के स्वरूप में स्थापित करते हुए स्वयं के ध्वनि को अर्थात् स्वयं के आत्मा के वाणी को एहसास को एहसास करते हैं तो जीव बिना किसी भी प्रकार के वेदना का निर्माण करते हुए भारमुक्त जीवन को गतिमान करते हैं। जो प्रकृति की वास्तविक सूर्य ध्वनि एहसास तालिका है। हम जिस भी प्रकार के आत्मिक गंध भाषा को स्वयं के भीतर मनन करते हुए स्वययं के प्रकृति में अर्थात् प्रत्येक जीव स्वयं के प्रकृति के संचालक स्वयं हैं अर्थात् आत्मा में मन में अंकित करतेे हैं तो ब्रह्माण्ड में भी स्वयं को अंकित करते हैं और तब तक परिपक्व होते हैं जब तक कि सि(ांत होकर ब्रह्माण्ड के अन्य समस्त गंधों से मिलकर उस गंध का भक्षण नहीं कर लेते हैं तब तक हम सिद्धांतीय परिपक्व होते रहते हैं।

तात्पर्य यह है कि जब हम समय की नकली विधा भूत, भविष्य, वर्तमान से स्वयं के स्तूप में भूत से मनन करते हुए वेदना नहीं बनाते हैं भविष्य को प्राप्त करने के लिए राक्षसी विधाओं से भविष्य को देखकर वर्तमान में हस्तक्षेप नहीं करते हैं तब हम स्वयं

के आत्मा मनस्थली में अपने वास्तविक कर्म को ध्वनि से एहसास करते हुए गतिमान करने लगते हैं अर्थात् मानव प्रजाति ने अपने स्तूप का भेदन स्वयं किया है मानव वर्तमान में जो एहसास विहीन होकर अपनी मूल प्रवृत्ति की हत्या करते हुए अन्य के भाँति दिखने की आकर्षण में अन्य की प्रवृत्ति को ग्रहण करते हुए स्वयं के जीवन को वेदनाओं का सागर बना चुके हैं उसके लिए दायितवकर्ता तो स्वयं मानव जाति है।

परन्तु प्रकृति कभी रूकती नहीं है प्रकृति में भूत भविष्य वर्तमान का कोई स्थान नहीं है प्रकृति में तो एकमात्र अवस्था है वह है एहसास जिसे प्रकृति केवल मानव में नहीं अपितृ प्रकृति धरा में स्थापित प्रत्येक भूमि में पदार्थ में तत्व में गंध में रासायन में ध्वनि स्वरूप में विराजमान हैं। सजीव तो प्रकृति के प्रत्येक भूमि में है ''मृदा यदि सजीव नहीं होती तो बीज का अंकुरण कैसे होता जल यदि सजीव नहीं होता तो जीवन की स्थापना कैसी होती वायु यदि सजीव नहीं होता तो स्वासन लेने की प्रणाली कैसे स्थापित होती चट्टानों में यदि प्राण नहीं होता तो मृदा कैसी बनती खनिजों मे यदि सजीवता नहीं होती तो पदार्थ का विकास कैसे होता रसायनों में यदि सजीवता नहीं होती तो वैज्ञानिकता का निर्माण कैसे होता इलेक्ट्रॉन प्रोट्रॉन न्यूट्रॉन में सजीवता नहीं होती तो प्रकृति ध्वनि तत्व का रासायनिक विस्तार कैसे होता तो सजीव तो समस्त भूमि है'' इन सभी भूमियों की सजीवता की मूल धरा है ध्वनि एहसास, ध्वनि समस्त भूमि में है इनकी अवस्था परिवर्तित होती है पर अवस्थाओं की राधिक एक होती है एहसासिय ध्वनि के स्वरूप में तो भला प्रकृति में किस विकलांग हो उत्पन्न किया है जब प्रकृति में कोई विकलांग है ही नहीं एकमात्र मानव जाति के।

जिन्होने स्वयं को इतना विकलांग बना लिया है कि प्रकृति के अन्य किसी भी पदार्थ को किसी भी जीव को ईश्वर की आवश्यकता नहीं पड़ी स्वयं को जीवित रखने के लिए पर इन मानवों को आवश्यकता पड़ गई ईश्वर की इससे बड़ी विकलांगता तो ईश्वर की होगी ही नहीं की जो आत्मा में ध्वनि विचारशून्य एहसास तैराकी लगाते हुए इच्छाशक्ति के स्वरूप में शामिल है उसकी हत्या अपने इच्छित समय से करते हुए उसे पुकारने लगे वह भी बाह्य जगत में जो वेदनाओं के कल्पनाओं से उत्पन्न होकर मानवों के इच्छाओं के अनुसार अपने रूप को धारण करने लगा, क्या वह ईश्वर होगा जिसे अपनी शक्ति का भान कराना पड़ेगा कि मैं तो तुम्हें सुरक्षित कर रहा हूँ मैं ईश्वर हूँ ना !प्रकृति में किसी भी जीव में ईश्वर ध्वनि एहसास के स्वरूप में विलीन होकर एहसास में ही सक्षमता को स्थापित कर देंगें और ईश्वर एहसास के स्व में स्थापित होकर सक्षम बना जाएंगे बाहुकल शक्ति प्रदर्शन ईश्वर की कला नहीं वह तो एहसास है तो फिर भला मानव प्रजाति प्रकृति को किस आधार पर आरोपित करती आई है कि-प्रकृति ने उससे सबकुछ छीन लिया ईश्वर ने उसकी खुशी को बेरंग कर दिया ईश्वर न्याय नहीं करते हैं। कितनी मूर्ख और अहंकारी है यह मानव प्रजाति की ईश्वर को भी स्वयं की तरह स्वार्थी समझ कर ईश्वर पर द्विपक्षीय होने का आरोप लगाते हुए ईश्वर पे न्याय एवं अन्याय के प्रश्न चिन्ह लगाते हैं जबकि वास्तविकता में मानव प्रजाति स्वंय के स्वार्थ के अनुसार ईश्वर की आकृति को उकरते हुए न्याय अन्याय को परिभाषित करते हैं।

वरन प्रकृति में ईश्वर तो एहसास की वह अवस्था है जो आत्मिक नभ तत्व में गंधों की मूल रासायनिक धरा को एहसास तालिका से कर्म मृदा में अंकित कतरे हुए एहसास से जीवन को गतिमान करते हैं ईश्वर तो प्रकृति के समस्म पदार्थ तत्व में ध्वनि एवं एहसास के स्वरूप में स्थापित है एवं यह मानव प्रजाति जिस अहंकार में भक्षण करती है प्रकृति की हत्या करती है वास्तविक में तो मानव प्रजाति ईश्वर का भक्षण कर रही है वृक्ष में भी एहसास रूपी ईश्वर है जो रसायन के स्वरूप में रासायनिक क्रिया करते हुए फल रूपी कर्म परिभाषा को स्थापित करते हैं और मानव इस अहंकार में की यह तो हमारे लिए है प्रकृति ने बनाय है फल भक्षण नहीं ईश्वर का भक्षण करते हैं। यह विडम्बना नहीं है तो क्या है कि जिस फल को फूल को बलि देते हुए जीव हत्या करते हुए ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए प्रकृति को अर्थात् ईश्वर को ईश्वर के ही रक्त से श्रृंगार कराते हैं और अहंकार में इसे ईश्वर प्रकृति भक्ति कहते हैं परन्तु यदि यही कार्य प्रकृति भी करे की मानव को मानवों के ही अंग को काटकर यह कहते हुए कि श्रृंगार करा रही है रक्ताभिषेक कर रही है तो यही मारव जाति इसे प्रकृति की क्रूरता कहेगी परन्तु स्वयं की क्रूरता को नहीं देखती है कि प्रकृति को ही काटकर प्रकृति को ही प्रसन्न करना चाहती है।

तात्पर्य यह है कि प्रकृति ध्वनि तो एहसास तालिका है अवस्थाओं को एहसास करना ही जीवन को बिना किसी भी प्रकार के भार से गतिमान करती हुई जीवन को सरल बनाती है प्रकृति एहसासीय अवस्थाओं पे प्रश्न करना जीवन को सरल नहीं जटिल बनाकर जीवन को पीड़ात्मक बनाती है वास्तविक जीवन यात्रा तो प्रकृति में घटने वाली समस्त घटनाओं को एहसास करते हुए स्वंय के आत्मिक ध्वनि को स्वमन में एहसास करते हुए शून्य विचारशून्य कर्म यात्रा को स्थापित करना है अर्थात् कर्म की गठरी को एकत्रित नहीं अपितृ कर्म को राखहीन समय से राखहीन करना है। Life is track of zero velocity with constant acceleration with no breakage of question and answer and no staring of directional navigation.

Directional navigation is nature's natural inner voice which can only be heard by being self constant of very own vehicle.

जलवायु संकट की आग में झुलसता भारत

अवनीश कुमार गुप्ता
साहित्यकार एवं स्वतंत्र स्तंभकार

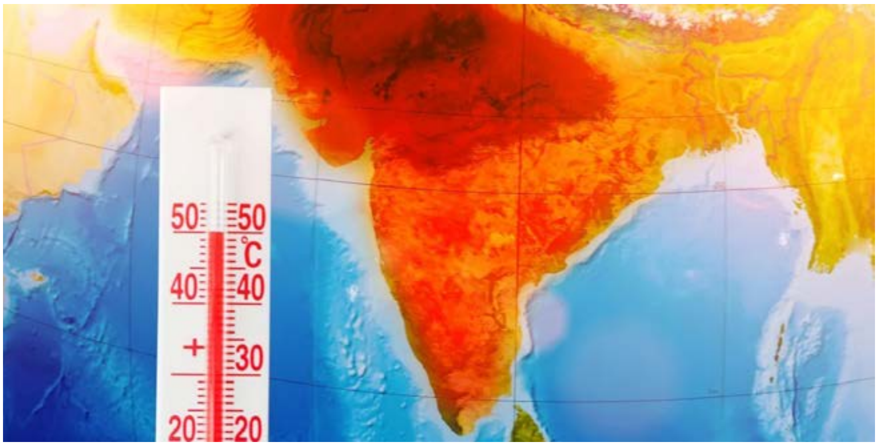

भारत के शहर तेजी से "अर्बन हीट आइलैंड" में बदल रहे हैं। दिल्ली, लखनऊ, कानपुर, पटना और नागपुर जैसे शहरों में तापमान आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में कई डिग्री अधिक रिकॉर्ड किया जा रहा है। इसका मुख्य कारण अव्यवस्थित शहरीकरण, हरित क्षेत्रों की कमी और कंक्रीट का अत्यधिक विस्तार है। विकास के नाम पर शहरों में पेड़ों की कटाई लगातार बढ़ी है।

भारत अब उस मोड़ पर खड़ा है जहाँ जलवायु परिवर्तन कोई भविष्य की चेतावनी नहीं, बल्कि वर्तमान की कठोर वास्तविकता बन चुका है। मई की शुरुआत में ही देश के कई हिस्सों में तापमान 45 डिग्री सेल्सियस के पार पहुँच चुका है। उत्तर भारत से लेकर दक्कन के पठार तक गर्म हवाएँ, जंगलों में आग, बिजली ग्रिड पर बढ़ता दबाव और पानी का गहराता संकट यह संकेत दे रहे हैं कि जलवायु परिवर्तन अब केवल पर्यावरण का विषय नहीं रहा। यह अर्थव्यवस्था, राजनीति, सार्वजनिक स्वास्थ्य और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा व्यापक संकट बन चुका है।

संयुक्त राष्ट्र, विश्व मौसम संगठन और कई वैश्विक जलवायु एजेंसियाँ लगातार चेतावनी दे रही हैं कि भारत दुनिया के सबसे "हीट वल्नरेबल" देशों में शामिल हो चुका है। इसका अर्थ केवल इतना नहीं कि भारत में गर्मी अधिक पड़ती है, बल्कि यह कि यहाँ की विशाल आबादी, कमजोर शहरी ढाँचा, सामाजिक असमानता और सीमित संसाधन इस संकट को और गंभीर बना देते हैं। देश की बड़ी आबादी आज भी ऐसे घरों में रहती है जहाँ पर्याप्त वेंटिलेशन नहीं है। करोड़ों लोग ऐसे हैं जिनके पास एयर कंडीशनर तो दूर, नियमित बिजली और साफ पानी तक उपलब्ध नहीं है। ऐसे में बढ़ती गर्मी केवल असुविधा नहीं, बल्कि जीवन के लिए खतरा बन जाती है।

पिछले कुछ वर्षों में गर्मी से जुड़ी घटनाओं में तेज़ वृद्धि हुई है। दिल्ली, नोएडा, मुंबई, अहमदाबाद और हैदराबाद जैसे शहरों में एयर कंडीशनर ब्लास्ट, ट्रांसफॉर्मर फटने और शॉर्ट सर्किट से आग लगने की घटनाएँ लगातार सामने आ रही हैं। विशेषज्ञ बताते हैं कि जब तापमान असामान्य रूप से बढ़ता है तो बिजली उपकरणों और ग्रिड पर दबाव कई गुना बढ़ जाता है। भारत के अधिकांश शहरों का बिजली ढाँचा अभी भी पुराना और कमजोर है। बढ़ती आबादी और लगातार बढ़ती ऊर्जा मांग के सामने यह व्यवस्था लड़खड़ाने लगी है। यही कारण है कि गर्मी का मौसम अब केवल लू का मौसम नहीं रहा, बल्कि "फायर सीजन" में बदलता जा रहा है।

जंगलों में लगने वाली आग भी जलवायु संकट का गंभीर संकेत बन चुकी है। उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर जैसे पहाड़ी राज्यों में जंगलों की आग अब सामान्य घटना बनती जा रही है। पहले ये आग सीमित समय तक रहती थीं, लेकिन अब सर्दियों और शुरुआती वसंत में भी जंगलों में आग लगने की घटनाएँ दर्ज हो रही हैं। वैज्ञानिक इसे बदलते वर्षा चक्र, घटती नमी और लंबे सूखे दौर से जोड़ते हैं। जंगलों की आग केवल पेड़ों को नहीं जलाती, बल्कि नदियों के जलस्रोतों, वन्यजीवों और स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी नुकसान पहुँचाती है। पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले समुदायों की आजीविका सीधे जंगलों पर निर्भर है। ऐसे में यह संकट सामाजिक और आर्थिक अस्थिरता भी पैदा कर रहा है।

भारत के शहर तेजी से "अर्बन हीट आइलैंड" में बदल रहे हैं। दिल्ली, लखनऊ, कानपुर, पटना और नागपुर जैसे शहरों में तापमान आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में कई डिग्री अधिक रिकॉर्ड किया जा रहा है। इसका मुख्य कारण अव्यवस्थित शहरीकरण, हरित क्षेत्रों की कमी और कंक्रीट का अत्यधिक विस्तार है। विकास के नाम पर शहरों में पेड़ों की कटाई लगातार बढ़ी है। सड़कें चौड़ी हुईं, इमारतें ऊँची हुईं, लेकिन शहरों का प्राकृतिक

संतुलन बिगड़ता चला गया। परिणाम यह हुआ कि गर्मी अब पहले से अधिक तीखी और लंबे समय तक रहने लगी है।

जल संकट इस स्थिति को और भयावह बना रहा है। देश के कई हिस्सों में भूजल स्तर तेजी से नीचे जा रहा है। राजस्थान, बुंदेलखंड, मराठवाड़ा और दक्षिण भारत के अनेक क्षेत्र हर साल गंभीर पानी संकट का सामना करते हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण बारिश का पैटर्न भी अस्थिर हो गया है। कहीं अचानक बाढ़ आती है तो कहीं महीनों तक सूखा बना रहता है। इससे पारंपरिक जल प्रबंधन प्रणाली कमजोर पड़ रही है। बड़े शहरों में पानी के टैंकरों पर निर्भरता बढ़ती जा रही है। आने वाले वर्षों में पानी केवल संसाधन नहीं, बल्कि राजनीतिक और सामाजिक संघर्ष का कारण भी बन सकता है।

इस संकट का प्रभाव भारत की अर्थव्यवस्था पर भी स्पष्ट दिखाई दे रहा है। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन की रिपोर्टों के अनुसार अत्यधिक गर्मी के कारण श्रमिकों की उत्पादकता तेजी से घट रही है। निर्माण कार्य, कृषि, परिवहन और छोटे उद्योगों में काम करने वाले करोड़ों लोग सीधे प्रभावित हो रहे हैं। दोपहर के समय कई क्षेत्रों में काम रोकने की नौबत आ जाती है। इससे आर्थिक गतिविधियाँ धीमी होती हैं और उत्पादन लागत बढ़ती है। भारत जैसे देश में, जहाँ बड़ी आबादी असंगठित क्षेत्र में काम करती है, वहाँ यह संकट और गंभीर हो जाता है क्योंकि अधिकांश श्रमिकों के पास स्वास्थ्य सुरक्षा या बीमा जैसी सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं।

कृषि क्षेत्र भी जलवायु परिवर्तन के दबाव में है। पंजाब और हरियाणा में गेहूँ उत्पादन पर बढ़ती गर्मी और अनियमित वर्षा का असर पड़ा है। महाराष्ट्र, कर्नाटक और तेलंगाना के कई हिस्सों में पानी की कमी के कारण फसलें प्रभावित हुई हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि यदि तापमान इसी तरह बढ़ता रहा तो आने वाले वर्षों में खाद्य सुरक्षा भी प्रभावित हो सकती है। भारत दुनिया के सबसे बड़े कृषि उत्पादक देशों में शामिल है, इसलिए यहाँ की जलवायु अस्थिरता का असर वैश्विक खाद्य बाजार पर भी पड़ सकता है।

जलवायु संकट अब वैश्विक राजनीति और कूटनीति का भी बड़ा मुद्दा बन चुका है। विकसित देश चाहते हैं कि भारत और चीन जैसे बड़े विकासशील देश कार्बन उत्सर्जन कम करने के लिए अधिक कठोर कदम उठाएँ। भारत ने वर्ष 2070 तक नेट ज़ीरो उत्सर्जन का लक्ष्य तय किया है और नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में कई महत्वाकांक्षी योजनाएँ शुरू की हैं। सौर ऊर्जा उत्पादन में भारत ने उल्लेखनीय प्रगति की है। इलेक्ट्रिक वाहनों और ग्रीन हाइड्रोजन को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। लेकिन चुनौती यह है कि भारत अभी भी अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए बड़े पैमाने पर कोयले पर निर्भर है।

यहाँ एक बड़ा नैतिक प्रश्न भी सामने आता है। विकसित देशों ने औद्योगिक क्रांति से लेकर अब तक सबसे अधिक कार्बन उत्सर्जन किया है। अमेरिका और यूरोप ने दशकों तक भारी औद्योगिक विकास के जरिए आर्थिक समृद्धि हासिल की, जबकि भारत अब भी विकासशील अर्थव्यवस्था है। भारत का प्रति व्यक्ति कार्बन उत्सर्जन कई पश्चिमी देशों की तुलना में कम है। भारत का तर्क है कि विकासशील देशों को गरीबी हटाने, रोजगार बढ़ाने और बुनियादी ढाँचा विकसित करने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता है। इसलिए केवल भारत पर उत्सर्जन घटाने का दबाव बनाना न्यायसंगत नहीं माना जा सकता। लेकिन दूसरी ओर यह भी सच है कि जलवायु संकट का सबसे बड़ा प्रभाव भारत जैसे देशों को ही झेलना पड़ रहा है। भारत की आंतरिक राजनीति में भी यह मुद्दा धीरे-धीरे महत्वपूर्ण बनता जा रहा है। हर साल बढ़ती गर्मी के साथ पानी संकट, बिजली कटौती और आग की घटनाएँ सरकारों के लिए चुनौती बन रही हैं। विपक्ष इसे प्रशासनिक विफलता और अव्यवस्थित शहरीकरण का परिणाम बताता है, जबकि सरकारें इसे वैश्विक जलवायु परिवर्तन से जुड़ी असाधारण स्थिति के रूप में पेश करती हैं। लेकिन अब केवल बयानबाज़ी से समस्या का समाधान संभव नहीं है। आवश्यकता ठोस नीतिगत बदलावों की है।

भारत को सबसे पहले अपने शहरों को जलवायु अनुकूल बनाना होगा। हरित क्षेत्र बढ़ाने, वर्षा जल संचयन, जल संरक्षण और ऊर्जा दक्ष भवनों को प्राथमिकता देनी होगी। बिजली ढाँचे का आधुनिकीकरण आवश्यक है ताकि बढ़ती ऊर्जा मांग का सामना किया जा सके। ग्रामीण क्षेत्रों में जल संरक्षण और टिकाऊ कृषि तकनीकों को बढ़ावा देना होगा। साथ ही, आपदा प्रबंधन प्रणाली को केवल बाढ़ और भूकंप तक सीमित न रखकर हीटवेव और आग जैसी घटनाओं के लिए भी तैयार करना होगा।

भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन कैसे स्थापित करे। यदि विकास केवल कंक्रीट, कोयला और अंधाधुंध उपभोग पर आधारित रहेगा, तो आने वाले वर्षों में हीटवेव और जल संकट और भयावह होंगे। लेकिन यदि भारत हरित ऊर्जा, टिकाऊ शहरीकरण और जल संरक्षण को विकास मॉडल का केंद्र बनाता है, तो वह न केवल अपने नागरिकों को सुरक्षित कर सकता है, बल्कि दुनिया के लिए एक उदाहरण भी बन सकता है।

जलवायु परिवर्तन अब किसी वैज्ञानिक रिपोर्ट का विषय भर नहीं रह गया है। यह हमारे घरों के गर्म कमरों, सूखे नलों, जलते जंगलों और टूटते बिजली ढाँचों में दिखाई दे रहा है। सवाल केवल यह नहीं कि तापमान कितना बढ़ेगा, बल्कि यह है कि क्या भारत अपने विकास मॉडल को समय रहते बदल पाएगा। क्योंकि यदि चेतावनियों को अब भी अनसुना किया गया, तो आने वाले वर्षों में यह संकट केवल पर्यावरणीय नहीं, बल्कि मानवीय, आर्थिक और राजनीतिक आपदा का रूप ले सकता है।

जैव विविधता संरक्षण : मानव अस्तित्व की सबसे बड़ी आवश्यकता

फोटो : एआई

सुनील कुमार महला
पिथौरागढ़, उत्तराखंड

इस दिवस को मनाने के पीछे मुख्य उद्देश्य जैव-विविधता संरक्षण के प्रति वैश्विक जागरूकता बढ़ाना, विलुप्त होती प्रजातियों और नष्ट होते प्राकृतिक आवासों को बचाना, पर्यावरण और सतत विकास के बीच संतुलन स्थापित करना, लोगों को प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन के लिए प्रेरित करना तथा सरकारों, संस्थाओं और आम नागरिकों को संरक्षण कार्यों में सहभागी बनाना है।

पृथ्वी पर मौजूद विभिन्न जीव-जंतुओं, अनगिनत वनस्पतियों और पारिस्थितिक तंत्रों(इको-सिस्टम्स) के संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 22 मई को अंतरराष्ट्रीय जैव-विविधता दिवस (इंटरनेशनल डे फॉर बायोलॉजिकल डायवर्सिटी) मनाया जाता है। वास्तव में इस दिवस को मनाने के पीछे का मुख्य उद्देश्य पृथ्वी पर मौजूद जीव-जंतुओं, पेड़-पौधों, सूक्ष्म जीवों तथा संपूर्ण पारिस्थितिक तंत्र के संरक्षण के प्रति आम लोगों में जागरूकता फैलाना है। जैव-विविधता केवल प्रकृति की सुंदरता ही नहीं, बल्कि मानव जीवन, भोजन, औषधि, जल, जलवायु संतुलन और आर्थिक विकास का आधार भी है। सरल शब्दों में कहें तो हमारी पृथ्वी पर जीवन का ताना-बाना जिन करोड़ों वनस्पतियों, जीव-जंतुओं और सूक्ष्मजीवों से मिलकर बना है, उसे ही हम जैव-विविधता (बायोडायवर्सिटी) कहते हैं।

वास्तव में 'जैव-विविधता' क्रमशः दो शब्दों-'बायो' अर्थात जीव और 'डायवर्सिटी' अर्थात विविधता-से मिलकर बना है। साधारण शब्दों में कहें तो किसी निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में पाए जाने वाले जीवों की संख्या और उनकी विविधता को ही जैव-विविधता कहा जाता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि इसका संबंध(जैव-विविधता का संबंध) पौधों के प्रकार, प्राणियों तथा सूक्ष्म जीवाणुओं से है।सच तो यह है कि जैव-विविधता एक सजीव संपदा है और यह विकास यात्रा के लाखों वर्षों का परिणाम है।सरल शब्दों में कहें तो जैव-विविधता पृथ्वी पर जीवन की विविधता और परिवर्तनशीलता का प्रतिनिधित्व करती है। इसमें प्रजातियों की विविधता, पारिस्थितिक तंत्रों की विविधता और प्रजातियों के भीतर आनुवांशिक विविधता शामिल होती है। यह पौधों, जानवरों, कवक और सूक्ष्मजीवों की विविधता के साथ-साथ उन पारिस्थितिक

तंत्रों की विविधता को भी समाहित करती है, जिनमें कि वे निवास करते हैं। जैव-विविधता के प्रकारों में पारिस्थितिकीय तंत्र विविधता, प्रजाति विविधता, आनुवांशिक विविधता, कार्यात्मक विविधता तथा सांस्कृतिक विविधता को शामिल किया जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो जैव-विविधता किसी क्षेत्र में मौजूद विभिन्न प्रजातियों और उनके पारिस्थितिक तंत्र की विविधता है। हम यूं भी कह सकते हैं कि जैव-विविधता पृथ्वी पर व्याप्त सभी जीव स्वरूपों यानी पादप और जंतुओं की जैविक विविधता है, जो उनकी जाति, आनुवांशिकी तथा पारिस्थितिकी में पाई जाती है।

वास्तव में, इस दिवस को मनाने के पीछे मुख्य उद्देश्य जैव-विविधता संरक्षण के प्रति वैश्विक जागरूकता बढ़ाना, विलुप्त होती प्रजातियों और नष्ट होते प्राकृतिक आवासों को बचाना, पर्यावरण और सतत विकास के बीच संतुलन स्थापित करना, लोगों को प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन के लिए प्रेरित करना तथा सरकारों, संस्थाओं और आम नागरिकों को संरक्षण कार्यों में सहभागी बनाना है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 20 दिसंबर 2000 को 22 मई को 'अंतरराष्ट्रीय जैव-विविधता दिवस' के रूप में घोषित किया था, ताकि विश्वभर में जैव-विविधता संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाई जा सके और विश्व की जैव विविधताएँ सुरक्षित रह सकें।

हर साल इस दिवस की एक थीम रखी जाती है और पिछले वर्ष यानी 2025 में इस दिवस की थीम 'प्रकृति के साथ सामंजस्य और सतत विकास' रखी गई थी, जबकि वर्ष 2026 की थीम-' स्थानीय स्तर पर कार्य, वैश्विक प्रभाव के लिए' निर्धारित की गई है। वास्तव में, यह थीम हमें यह याद दिलाती है कि जैव-विविधता संरक्षण केवल बड़े अंतरराष्ट्रीय समझौतों से संभव नहीं है, बल्कि स्थानीय समुदायों, युवाओं और आम नागरिकों के छोटे-छोटे प्रयास भी वैश्विक स्तर पर बड़ा प्रभाव डालते हैं। जब हम अपने आसपास के पर्यावरण, स्थानीय जलस्रोतों और स्थानीय प्रजातियों का संरक्षण करते हैं, तो उसका सकारात्मक असर पूरे विश्व के पारिस्थितिकी तंत्र पर पड़ता है।हाल फिलहाल, यदि हम यहां पर इस दिवस के इतिहास की बात करें तो 22 मई 1992 को नैरोबी में जैव विविधता सम्मेलन (कन्वेंशन आन बायोलोजिकल डायवर्सिटी) के मसौदे को स्वीकार किया गया था। 29 दिसंबर 1992 को संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वावधान में आयोजित जलवायु सम्मेलन में जैव-विविधता पर विश्व का ध्यान केंद्रित हुआ और वैश्विक स्तर पर इसे मनाने का निर्णय लिया गया। गौरतलब है कि प्रारंभ में इसे 29 दिसंबर को मनाया जाता था, लेकिन बाद में वर्ष 2000 में इसे बदलकर 22 मई कर दिया गया, ताकि इसमें विश्व के और अधिक देशों की भागीदारी सुनिश्चित हो सके। इतना ही नहीं, पहले इसे 29 मई को मनाने का विचार भी रखा गया था, लेकिन अंततः 22 मई पर सहमति बनी और तभी से पूरी दुनिया में इसे मनाने की परंपरा शुरू हुई। भारत के संदर्भ में भी यह दिवस अत्यंत महत्वपूर्ण है। 22 मई 2002 को भारत सरकार ने संसद में ऐतिहासिक 'जैव-विविधता अधिनियम, 2002' को आगे बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए, जिसने भारत की पारंपरिक प्राकृतिक संपदा को अंतरराष्ट्रीय जैव-चोरी से बचाने के लिए कानूनी सुरक्षा प्रदान की।

यहां पर यह बात कहना ग़लत नहीं होगा कि जैव-विविधता सीधे तौर पर मानव अस्तित्व की बुनियादी आवश्यकता है।सच तो यह है कि हमारी थाली का भोजन और अधिकांश जीवनरक्षक दवाइयाँ प्राकृतिक वनस्पतियों और जीवों की ही देन हैं। पाठकों को बताता चलूं कि मानव भोजन का लगभग 80 प्रतिशत भाग पौधों से प्राप्त होता है तथा लगभग 3 अरब लोगों के लिए मछली प्रमुख प्रोटीन स्रोत है। पेड़-पौधे कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, जबकि मधुमक्खियाँ और अन्य परागणकर्ता फसलों के परागण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर कृषि उत्पादन बढ़ाते हैं। घने जंगल और महासागर पृथ्वी के तापमान को नियंत्रित करते हैं तथा वैश्विक तापमान वृद्धि (ग्लोबल वार्मिंग) के प्रभाव को कम करने में सहायक होते हैं। जैव-विविधता पारिस्थितिकीय तंत्रों का संतुलन बनाए रखने, मृदा संरक्षण, कीट नियंत्रण और जलवायु संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भोजन, दवा, लकड़ी, ईंधन और अनेक मूल्यवान वस्तुओं व सेवाओं की प्राप्ति जैव-विविधता के कारण ही संभव हो पाती है। मानव संस्कृति और कल्याण के लिए भी जैव-विविधता अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमें मनोरंजन, आध्यात्मिकता और सौंदर्यबोध से भी जोड़ती है। यह वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए जानकारी का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी है, जो प्राकृतिक दुनिया की समझ को गहरा करने और संरक्षण के प्रयासों को बेहतर बनाने में मदद करता है।

पर्यावरणविदों के अनुसार मानव जीवन के प्रारंभ होने से पहले इस धरती पर जैव-विविधता किसी भी अन्य काल की तुलना में कहीं अधिक थी, लेकिन मानव के आने के बाद विभिन्न प्रजातियों का अत्यधिक दोहन होने लगा और अनेक प्रजातियाँ धीरे-धीरे विलुप्त होने लगीं। वैज्ञानिकों के अनुसार पृथ्वी पर लगभग 80 लाख प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिनमें से लगभग 10 लाख प्रजातियाँ विलुप्ति के खतरे में हैं। कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि विश्व में विभिन्न जीवों और पेड़-पौधों की संभावित संख्या 20 लाख से 10 करोड़ तक हो सकती है तथा वैज्ञानिक लगातार नई प्रजातियों की खोज में लगे हुए हैं। कुछ अन्य अनुमानों के अनुसार यह संख्या 1.5 करोड़ से 20 करोड़ तक हो सकती है। लगभग 99 प्रतिशत प्रजातियाँ, जो कभी पृथ्वी पर विद्यमान थीं, आज विलुप्त हो चुकी हैं। वर्तमान में मानव गतिविधियों के कारण

प्रजातियों के विलुप्त होने की दर प्राकृतिक दर से 100 से 1000 गुना अधिक हो चुकी है। इसे पृथ्वी के इतिहास का 'छठा सामूहिक विनाश' कहा जा रहा है। कुछ अध्ययनों के अनुसार वनस्पतियों की हर आठ में से एक प्रजाति विलुप्ति के खतरे का सामना कर रही है।

बहुत कम लोग जानते हैं कि जैव-विविधता केवल पशु-पक्षियों तक सीमित नहीं है, बल्कि मिट्टी में रहने वाले सूक्ष्म जीव भी इसका महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। मानव शरीर में भी असंख्य सूक्ष्म जीव मौजूद रहते हैं, जिनके बिना जीवन संभव नहीं है। मधुमक्खियाँ और अन्य परागणकर्ता विश्व की खाद्य सुरक्षा में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जैव-विविधता की हानि से महामारी और जलवायु संकट का खतरा भी बढ़ता है। उष्ण-कटिबंधीय क्षेत्रों में जैव-विविधता अधिक पाई जाती है, जबकि ध्रुवीय क्षेत्रों की ओर बढ़ने पर यह विविधता कम हो जाती है। जिस पारितंत्र में जितनी अधिक विविधता होती है, वह उतना ही अधिक स्थायी और उत्पादक माना जाता है।

पूरी दुनिया में कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जो जैव-विविधता के मामले में अत्यंत समृद्ध हैं, लेकिन उन पर सबसे अधिक खतरा भी मंडरा रहा है। इन्हें बायोडायवर्सिटी हॉटस्पॉट्स कहा जाता है। विश्व में ऐसे कुल 36 हॉटस्पॉट्स पहचाने गए हैं। आश्चर्य की बात यह है कि ये पृथ्वी के केवल 2.5 प्रतिशत भूभाग पर स्थित हैं, लेकिन यहाँ विश्व की 50 प्रतिशत से अधिक स्थानिक वनस्पतियाँ और 42 प्रतिशत रीढ़धारी जीव पाए जाते हैं। भारत विश्व के 17 मेगा बायोडायवर्स देशों में शामिल है। भारत में चार प्रमुख जैव विविधता हॉटस्पॉट स्थित हैं-पश्चिमी घाट, हिमालय क्षेत्र, भारत-म्यांमार क्षेत्र तथा सुंडालैंड (निकोबार द्वीप समूह)। इसके अतिरिक्त, भारत का पश्चिमी घाट, हिमालय और सुंदरबन जैसे क्षेत्र वैश्विक जैव-विविधता की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

आज जैव-विविधता अनेक कारणों से संकट में है। बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण, शहरीकरण, वनों की अंधाधुंध कटाई, अनियंत्रित खनन, प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन तथा जलवायु परिवर्तन इसके प्रमुख कारण हैं। प्राकृतिक चरागाह समाप्त हो रहे हैं और वन्य जीवों के आवास नष्ट हो रहे हैं। सड़क, रेलमार्ग और आवासीय परियोजनाओं के लिए बड़े पैमाने पर जंगलों को काटा जा रहा है। कृषि भूमि आवासीय भूमि में परिवर्तित हो रही है। वन्य जीवों का अवैध शिकार लगातार बढ़ रहा है। मनुष्य के लालच और स्वार्थ के कारण जैव-विविधता पर निरंतर खतरा मंडरा रहा है।

आज जैव-विविधता अनेक कारणों से संकट में है। बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण, शहरीकरण, वनों की अंधाधुंध कटाई, अनियंत्रित खनन, प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन तथा जलवायु परिवर्तन इसके प्रमुख कारण हैं। प्राकृतिक चरागाह समाप्त हो रहे हैं और वन्य जीवों के आवास नष्ट हो रहे हैं। सड़क, रेलमार्ग और आवासीय परियोजनाओं के लिए बड़े पैमाने पर जंगलों को काटा जा रहा है। कृषि भूमि आवासीय भूमि में परिवर्तित हो रही है। वन्य जीवों का अवैध शिकार लगातार बढ़ रहा है। मनुष्य के लालच और स्वार्थ के कारण जैव-विविधता पर निरंतर खतरा मंडरा रहा है। मानव-वन्यजीव संघर्ष, मरुस्थलीकरण, मिट्टी का कटाव और जल संकट जैसी समस्याएँ लगातार गंभीर होती जा रही हैं। विश्व की बढ़ती जनसंख्या भी जैव विविधता पर अतिरिक्त दबाव डाल रही है। अनुमान है कि वर्ष 2050 तक विश्व की जनसंख्या 10 अरब तक पहुँच सकती है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव और बढ़ेगा।

जैव-विविधता संरक्षण के लिए हमें व्यक्तिगत, सामाजिक और वैश्विक स्तर पर प्रयास करने होंगे। इसके लिए राष्ट्रीय उद्यानों और अभयारण्यों की स्थापना एवं संरक्षण करना होगा, अधिकाधिक वृक्षारोपण करना होगा, जल संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना होगा, अनियंत्रित खनन और वनों की कटाई पर रोक लगानी होगी, जीन-बैंक और बीज-बैंक स्थापित करने होंगे तथा कृषि में फसल-चक्र को बढ़ावा देना होगा। चरागाहों का संरक्षण करना होगा और प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग की मानसिकता विकसित करनी होगी। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें यह समझना होगा कि इस पृथ्वी पर प्रत्येक जीव और प्रत्येक वनस्पति को स्वतंत्र रूप से जीने और अपनी प्रजाति को विकसित करने का समान अधिकार है।

अंत में, निष्कर्ष के तौर पर यही कहूंगा कि अंतरराष्ट्रीय जैव-विविधता दिवस हमें यह याद दिलाता है कि प्रकृति और मानव जीवन एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। यदि जैव विविधता नष्ट होती है, तो मानव अस्तित्व भी संकट में पड़ जाएगा। इंसान प्रकृति का स्वामी नहीं, बल्कि उसका एक अभिन्न हिस्सा है। वर्ष 2026 की थीम-'वैश्विक प्रभाव के लिए स्थानीय स्तर पर कार्य करना' इस बात पर बल देती है कि पर्यावरण की रक्षा केवल सरकारी योजनाओं से नहीं, बल्कि आम नागरिकों के स्थानीय और जमीनी प्रयासों से ही संभव है। इसलिए हमें अंधाधुंध दोहन के स्थान पर सतत विकास (सस्टेनेबल डेवलपमेंट) को अपनाना होगा ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक संतुलित, समृद्ध और जीवंत पृथ्वी सुरक्षित रखी जा सके। वास्तव में, जैव-विविधता का संरक्षण किसी एक व्यक्ति, समाज या देश की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति का साझा उत्तरदायित्व है।

डॉ. एस. सोमनाथ : भारत के अंतरिक्ष युग के महान वैज्ञानिक

प्रकृति मेल डेस्क

डॉ. एस. सोमनाथ का पूरा नाम श्रीधर पनिक्कर सोमनाथ है। उनका जन्म जुलाई 1963 में केरल के अलप्पुझा जिले के थुरावूर नामक स्थान में हुआ था। उनका परिवार शिक्षा और ज्ञान को अत्यधिक महत्व देने वाला था। उनके पिता वी. श्रीधर पनिक्कर एक हिंदी शिक्षक थे। बचपन से ही सोमनाथ को विज्ञान, गणित और तकनीकी विषयों में गहरी रुचि थी। उनके पिता ने उन्हें विज्ञान से जुड़ी पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित किया, जिससे उनके अंदर वैज्ञानिक सोच विकसित हुई।

उनका बचपन साधारण परिस्थितियों में बीता, लेकिन उनके सपने असाधारण थे। वे हमेशा मशीनों, इंजनों और उड़ान तकनीक के बारे में जानने को उत्सुक रहते थे। यही जिज्ञासा आगे चलकर उन्हें भारत के सबसे प्रतिष्ठित अंतरिक्ष वैज्ञानिकों में शामिल करने वाली थी। उन्होंने केरल के प्रसिद्ध टीकेएम कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में बी.टेक की डिग्री प्राप्त की। साल 1985 में डॉ. सोमनाथ ने ISRO के अंतर्गत कार्यरत विक्रम साराभाई स्पेस सेंटर में अपना करियर शुरू किया।

एस सोमनाथ आज भारत के उन वैज्ञानिकों में गिने जाते हैं जिन्होंने भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके नेतृत्व में भारत ने चंद्रयान-3 की ऐतिहासिक सफलता हासिल की, आदित्य-L1 मिशन को अंतरिक्ष में भेजा और गगनयान जैसे मानव अंतरिक्ष मिशन की दिशा में बड़े कदम उठाए। लगभग चार दशकों से अधिक समय तक भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) में कार्य करते हुए उन्होंने रॉकेट प्रौद्योगिकी, प्रक्षेपण यान डिजाइन, संरचनात्मक इंजीनियरिंग और अंतरिक्ष प्रणालियों के विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

प्रारंभिक जीवन और पारिवारिक पृष्ठभूमि

डॉ. एस. सोमनाथ का पूरा नाम श्रीधर पनिक्कर सोमनाथ है। उनका जन्म जुलाई 1963 में केरल के अलप्पुझा जिले के थुरावूर नामक स्थान में हुआ था। उनका परिवार शिक्षा और ज्ञान को अत्यधिक महत्व देने वाला था। उनके पिता वी. श्रीधर पनिक्कर एक हिंदी शिक्षक थे। बचपन से ही सोमनाथ को विज्ञान, गणित और तकनीकी विषयों में गहरी रुचि थी। उनके पिता ने उन्हें विज्ञान से जुड़ी पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित किया, जिससे उनके अंदर वैज्ञानिक सोच विकसित हुई।

उनका बचपन साधारण परिस्थितियों में बीता, लेकिन उनके सपने असाधारण थे। वे हमेशा मशीनों, इंजनों और उड़ान तकनीक के बारे में जानने को उत्सुक रहते थे। यही जिज्ञासा आगे चलकर उन्हें भारत के सबसे प्रतिष्ठित अंतरिक्ष वैज्ञानिकों में शामिल करने वाली थी।

शिक्षा : एक वैज्ञानिक की नींव

डॉ. सोमनाथ ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा केरल के सेंट ऑगस्टीन हाई स्कूल, अरूर से प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने महाराजा कॉलेज, एर्नाकुलम से प्री-डिग्री कोर्स पूरा किया। विज्ञान और इंजीनियरिंग में रुचि होने के कारण उन्होंने इंजीनियरिंग को अपने करियर के रूप में चुना।

उन्होंने केरल के प्रसिद्ध टीकेएम कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग (TKM College of Engineering) से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में बी.टेक की डिग्री प्राप्त की। कॉलेज के दिनों में ही उनकी रुचि रॉकेट प्रणोदन (Propulsion Engineering) और अंतरिक्ष तकनीक की ओर बढ़ने लगी थी। बताया जाता है कि उन्होंने अपने कॉलेज में प्रोपल्शन इंजीनियरिंग जैसे विषय को पढ़ाए जाने की मांग भी की थी, जो उस समय बहुत दुर्लभ था।

इसके बाद उन्होंने भारत के शीर्ष वैज्ञानिक संस्थानों में से एक भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc), बेंगलुरु से एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में एम.टेक किया। यहाँ उन्होंने विशेष रूप से डायनेमिक्स और कंट्रोल सिस्टम पर अध्ययन किया। आगे चलकर उन्होंने आईआईटी मद्रास से पीएचडी प्राप्त की। उनकी उच्च शिक्षा ने उन्हें जटिल अंतरिक्ष प्रणालियों और प्रक्षेपण यानों की डिजाइनिंग में विशेषज्ञ बनाया।

ISRO में प्रवेश

साल 1985 में डॉ. सोमनाथ ने ISRO के अंतर्गत कार्यरत विक्रम साराभाई स्पेस सेंटर (VSSC) में अपना करियर शुरू किया। उस समय भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम विकास के महत्वपूर्ण चरण में था और PSLV जैसे रॉकेटों पर कार्य चल रहा था। युवा इंजीनियर के रूप में उन्होंने प्रक्षेपण यानों की संरचना, डिजाइन और सिस्टम इंजीनियरिंग के क्षेत्र में काम करना शुरू किया।

उनकी तकनीकी क्षमता और समस्या समाधान कौशल ने उन्हें शीघ्र ही संगठन के महत्वपूर्ण वैज्ञानिकों में शामिल कर दिया। उन्होंने विशेष रूप से रॉकेट संरचना, लॉन्च वाहन डायनेमिक्स और पृथक्करण तंत्र (Separation Mechanisms) के

विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

PSLV और GSLV कार्यक्रम में योगदान

भारत के अंतरिक्ष इतिहास में PSLV (Polar Satellite Launch Vehicle) सबसे सफल प्रक्षेपण यानों में से एक माना जाता है। डॉ. सोमनाथ इसके प्रारंभिक विकास चरण से जुड़े रहे। उन्होंने इसके विभिन्न तकनीकी पहलुओं में योगदान दिया, जिससे यह भारत का सबसे विश्वसनीय रॉकेट बना।

इसके बाद उन्होंने GSLV और विशेष रूप से GSLV Mk-III, जिसे आज LVM3 कहा जाता है, के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह वही शक्तिशाली रॉकेट है जिसने चंद्रयान-2, चंद्रयान-3 और गगनयान कार्यक्रम की नींव रखी।

GSLV Mk-III परियोजना के निदेशक के रूप में उन्होंने इस रॉकेट की संरचना, प्रणोदन प्रणाली और मिशन डिजाइन का नेतृत्व किया। 18 दिसंबर 2014 को LVM3-X CARE मिशन की सफलता उनके करियर की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में शामिल है।

लिक्विड प्रोपल्शन सिस्टम्स सेंटर (LPSC) के निदेशक

2015 में उन्हें Liquid Propulsion Systems Centre (LPSC) का निदेशक नियुक्त किया गया। यह केंद्र भारत के रॉकेट इंजनों और प्रणोदन प्रणालियों के विकास का प्रमुख संस्थान है। यहाँ उन्होंने क्रायोजेनिक इंजन तकनीक और उन्नत प्रणोदन प्रणालियों के विकास को नई दिशा दी।

क्रायोजेनिक इंजन तकनीक अंतरिक्ष विज्ञान की सबसे जटिल तकनीकों में से एक मानी जाती है। इस क्षेत्र में भारत की आत्मनिर्भरता स्थापित करने में डॉ. सोमनाथ की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही।

विक्रम साराभाई स्पेस सेंटर के निदेशक

जनवरी 2022 में डॉ. एस. सोमनाथ को ISRO का अध्यक्ष, अंतरिक्ष आयोग का अध्यक्ष और भारत सरकार के अंतरिक्ष विभाग का सचिव नियुक्त किया गया। उन्होंने इस पद पर डॉ. के. सिवन का स्थान लिया। उनके नेतृत्व का काल भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के सबसे सफल दौरों में गिना जाता है। इस दौरान भारत ने न केवल चंद्रमा और सूर्य से जुड़े महत्वपूर्ण मिशनों को सफल बनाया, बल्कि मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम को भी नई गति प्रदान की।

2018 में उन्हें VSSC का निदेशक बनाया गया। इस पद पर रहते हुए उन्होंने PSLV, GSLV और LVM3 जैसे प्रमुख प्रक्षेपण यानों के विकास और संचालन का नेतृत्व किया। इसी अवधि में उन्होंने छोटे उपग्रह प्रक्षेपण यान (SSLV) की अवधारणा को आगे बढ़ाया।

SSLV को कम लागत वाले और त्वरित प्रक्षेपण समाधान के रूप में विकसित किया गया ताकि भारत वैश्विक छोटे उपग्रह बाजार में अपनी मजबूत उपस्थिति बना सके।

ISRO अध्यक्ष बनने का सफर

जनवरी 2022 में डॉ. एस. सोमनाथ को ISRO का अध्यक्ष, अंतरिक्ष आयोग का अध्यक्ष और भारत सरकार के अंतरिक्ष विभाग का सचिव नियुक्त किया गया। उन्होंने इस पद पर डॉ. के. सिवन का स्थान लिया।

उनके नेतृत्व का काल भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के सबसे सफल दौरों में गिना जाता है। इस दौरान भारत ने न केवल चंद्रमा और सूर्य से जुड़े महत्वपूर्ण मिशनों को सफल बनाया, बल्कि मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम को भी नई गति प्रदान की।

चंद्रयान-3 की ऐतिहासिक सफलता

डॉ. सोमनाथ के नेतृत्व में भारत ने 23 अगस्त 2023 को चंद्रयान-3 मिशन के माध्यम से इतिहास रच दिया। भारत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के निकट सफल सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला विश्व का पहला देश बना। साथ ही भारत अमेरिका, रूस और चीन के बाद चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला चौथा देश भी बना।

यह उपलब्धि केवल तकनीकी सफलता नहीं थी, बल्कि भारत की वैज्ञानिक क्षमता और आत्मनिर्भरता का वैश्विक प्रदर्शन भी थी। इस मिशन ने डॉ. सोमनाथ को विश्वभर में पहचान दिलाई।

आदित्य-L1 मिशन

चंद्रयान-3 की सफलता के बाद ISRO ने आदित्य-L1 मिशन को लॉन्च किया। यह भारत का पहला सौर मिशन है जिसका उद्देश्य सूर्य का अध्ययन करना है। डॉ. सोमनाथ ने इस मिशन की योजना, प्रक्षेपण और संचालन में महत्वपूर्ण नेतृत्व प्रदान किया।

आदित्य-L1 सूर्य की बाहरी परत, सौर हवाओं और अंतरिक्ष मौसम का अध्ययन कर रहा है। इससे वैज्ञानिकों को सूर्य की गतिविधियों को बेहतर समझने में सहायता मिलेगी।

गगनयान मिशन

डॉ. सोमनाथ के कार्यकाल का एक अन्य महत्वपूर्ण मिशन गगनयान है। इसका उद्देश्य भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों को भारतीय रॉकेट के माध्यम से अंतरिक्ष में भेजना है।

गगनयान भारत का पहला मानव अंतरिक्ष मिशन होगा। इसके लिए क्रू मॉड्यूल, लॉन्च एबॉर्ट सिस्टम और मानव सुरक्षा प्रणालियों पर व्यापक कार्य किया गया है। डॉ. सोमनाथ ने इस कार्यक्रम को भारत के भविष्य का आधार बताया है।

शोध और वैज्ञानिक योगदान

डॉ. सोमनाथ केवल प्रशासक नहीं बल्कि एक सक्रिय शोधकर्ता भी रहे हैं। उन्होंने संरचनात्मक डायनेमिक्स, सामग्री मॉडलिंग,

कंपन विश्लेषण, ध्वनिक परीक्षण, रॉकेट संरचना और अंतरिक्ष प्रणालियों पर अनेक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं।

उनके प्रमुख शोध क्षेत्रों में शामिल हैं:

- लॉन्च वाहन सिस्टम इंजीनियरिंग
- स्ट्रक्चरल डिजाइन
- स्ट्रक्चरल डायनेमिक्स
- वाइब्रेशन एनालिसिस
- स्पेसक्राफ्ट मैकेनिज्म
- रॉकेट प्रणोदन
- मानव अंतरिक्ष उड़ान तकनीक
- लॉन्च सर्विस प्रबंधन

इन क्षेत्रों में उनके कार्य ने भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम को तकनीकी रूप से अधिक मजबूत बनाया।

अंतरराष्ट्रीय पहचान

डॉ. सोमनाथ को विश्व स्तर पर भी सम्मान प्राप्त हुआ है। वे International Academy of Astronautics (IAA) के पूर्ण सदस्य रहे हैं और International Astronautical Federation (IAF) में महत्वपूर्ण पदों पर कार्य कर चुके हैं।

उन्हें विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जिनमें World Space Award, IAF Hall of Fame, Karnataka Rajyotsava Award तथा Kerala Sasthra Puraskaaram जैसे सम्मान शामिल हैं।

वर्तमान कार्य और परियोजनाएँ

जनवरी 2025 में ISRO अध्यक्ष के रूप में उनका कार्यकाल समाप्त हुआ और उनके स्थान पर V. Narayanan ने पदभार संभाला। इसके बाद भी डॉ. सोमनाथ अंतरिक्ष विज्ञान और तकनीकी विकास से जुड़े हुए हैं।

वर्तमान में वे ISRO में विक्रम साराभाई डिस्टिंग्विश्ड प्रोफेसर के रूप में कार्य कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त वे IISc में विजिटिंग प्रोफेसर तथा विभिन्न सरकारी और वैज्ञानिक संस्थानों के सलाहकार के रूप में भी योगदान दे रहे हैं।

भारत की आने वाली प्रमुख परियोजनाओं जैसेः- गगनयान मिशन, भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन, शुक्र ग्रह मिशनउन्नत पुनः प्रयोज्य प्रक्षेपण यान, निजी अंतरिक्ष उद्योग सहयोग जैसे क्षेत्रों में मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं।

2025 में वे निजी अंतरिक्ष कंपनी Skyroot Aerospace के मानद मुख्य तकनीकी सलाहकार भी बने, जिससे भारत के निजी अंतरिक्ष क्षेत्र को नई दिशा मिलने की उम्मीद है।

डॉ. एस. सोमनाथ का जीवन भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है। एक साधारण परिवार से निकलकर उन्होंने अपने ज्ञान, मेहनत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बल पर भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम का नेतृत्व किया। PSLV और GSLV के विकास से लेकर चंद्रयान-3 की ऐतिहासिक सफलता तक उनका योगदान भारतीय विज्ञान के स्वर्णिम अध्यायों में दर्ज है।

आज जब भारत गगनयान, अंतरिक्ष स्टेशन और अंतरग्रहीय मिशनों की दिशा में आगे बढ़ रहा है, तब डॉ. एस. सोमनाथ जैसे वैज्ञानिकों की दूरदृष्टि और नेतृत्व देश के वैज्ञानिक भविष्य को मजबूत बना रहे हैं। उनका जीवन यह सिद्ध करता है कि शिक्षा, अनुसंधान और निरंतर प्रयास किसी भी व्यक्ति को विश्वस्तरीय उपलब्धियों तक पहुँचा सकते हैं।

चंदन की खेती और पर्यावरण संरक्षण: रेगिस्तान से लेकर जंगलों तक एक हरित क्रांति

फोटो : एआई

डॉ विजय गर्ग
मलोट पंजाब

चंदन की खेती का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह पर्यावरण को संतुलित रखने में सहायक है। वृक्ष हमेशा से प्रकृति के रक्षक रहे हैं और चंदन का वृक्ष भी वायु को शुद्ध करने, मिट्टी के कटाव को रोकने और हरियाली बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसकी जड़ें मिट्टी को मजबूत बनाती हैं, जिससे भूमि क्षरण कम होता है। इसके अलावा, वृक्ष वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर ऑक्सीजन प्रदान करते हैं जिससे जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में सहायता मिलती है।

भारत प्राचीन काल से ही प्राकृतिक संपदा और औषधीय वृक्षों के लिए प्रसिद्ध रहा है। इन्हीं अमूल्य वृक्षों में चंदन का विशेष स्थान है। चंदन केवल एक सुगंधित वृक्ष नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, आयुर्वेद, धार्मिक परंपराओं और पर्यावरण संरक्षण का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसकी लकड़ी, तेल और सुगंध का उपयोग सदियों से पूजा-पाठ, औषधि, इत्र तथा सौंदर्य प्रसाधनों में किया जाता रहा है। आज जब

दुनिया पर्यावरण संकट, बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं से जूझ रही है, तब चंदन की खेती पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक समृद्धि दोनों के लिए एक महत्वपूर्ण विकल्प बनकर उभर रही है।

चंदन का वृक्ष मुख्य रूप से गर्म और शुष्क जलवायु में अच्छी तरह विकसित होता है। भारत में विशेष रूप से कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश और कुछ उत्तरी राज्यों में इसकी खेती की जा रही है। पहले चंदन के वृक्षों पर सरकारी नियंत्रण अधिक था, लेकिन अब किसानों को इसकी खेती के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसकी बढ़ती अंतरराष्ट्रीय मांग ने किसानों के लिए आय का नया स्त्रोत भी तैयार किया है।

चंदन की खेती का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह पर्यावरण को संतुलित रखने में सहायक है। वृक्ष हमेशा से प्रकृति के रक्षक रहे हैं और चंदन का वृक्ष भी वायु को शुद्ध करने, मिट्टी के कटाव को रोकने और हरियाली बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसकी जड़ें मिट्टी को मजबूत बनाती हैं, जिससे भूमि क्षरण कम होता है। इसके अलावा, वृक्ष वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, जिससे जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में सहायता मिलती है।

चंदन की खेती जैव विविधता को भी बढ़ावा देती है। जब बड़े स्तर पर वृक्षारोपण किया जाता है, तो पक्षियों, कीटों और अन्य जीवों को प्राकृतिक आवास मिलता है। इससे पर्यावरणीय संतुलन मजबूत होता है। चंदन के वृक्षों के आसपास हरियाली बढ़ने से स्थानीय तापमान में कमी आती है और वर्षा चक्र को भी सकारात्मक प्रभाव मिलता है।

आर्थिक दृष्टि से भी चंदन की खेती अत्यंत लाभकारी मानी जाती है। चंदन की लकड़ी दुनिया की सबसे महंगी लकड़ियों में गिनी जाती है। इसका तेल औषधि, इत्र और कॉस्मेटिक उद्योगों में अत्यधिक उपयोग किया

पारंपरिक रूप से दक्षिण भारत (कर्नाटक और तमिलनाडु) तक सीमित रहने वाली चंदन की खेती अब देश के अन्य हिस्सों, यहाँ तक कि राजस्थान जैसे शुष्क और रेतीले इलाकों में भी सफलतापूर्वक की जा रही है।चंदन का अनोखा स्वभाव: 'अर्ध-जड़ परजीवी' पर्यावरण के लिहाज से चंदन का सबसे दिलचस्प पहलू इसका स्वभाव है। चंदन एक अर्ध-जड़ परजीवी वृक्ष है। इसका मतलब यह है कि यह पूरी तरह आत्मनिर्भर नहीं होता; इसे बढ़ने के लिए अपने आस-पास 'मेजबान पौधों' की आवश्यकता होती है।

जाता है। एक परिपक्व चंदन का वृक्ष किसान को लाखों रुपये तक की आय दे सकता है। यही कारण है कि आज कई किसान पारंपरिक खेती के साथ-साथ चंदन की खेती को अपनाने लगे हैं।

हालाँकि चंदन की खेती में कुछ चुनौतियाँ भी हैं। चंदन का वृक्ष धीरे-धीरे बढ़ता है और इसे परिपक्व होने में कई वर्ष लग जाते हैं। इसके अलावा, चोरी और अवैध कटाई भी एक बड़ी समस्या रही है। किसानों को सुरक्षा, उचित जानकारी और सरकारी सहयोग की आवश्यकता होती है। यदि सरकार प्रशिक्षण, पौधों की उपलब्धता और सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करे, तो अधिक किसान इस ओर आकर्षित हो सकते हैं।

आवश्यकता इस बात की है कि पर्यावरण संरक्षण को केवल सरकारी जिम्मेदारी न मानकर जन-आंदोलन बनाया जाए। चंदन की खेती इस दिशा में एक प्रभावी कदम साबित हो सकती है। यह न केवल हरियाली बढ़ाती है, बल्कि किसानों की आर्थिक स्थिति को भी मजबूत करती है। "एक पेड़, अनेक

लाभ" की सोच के साथ यदि चंदन के वृक्षों का अधिक से अधिक रोपण किया जाए, तो आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ वातावरण और समृद्ध प्रकृति का उपहार दिया जा सकता है।

जब भी चंदन का नाम आता है, तो हमारे जेहन में उसकी जादुई खुशबू, कीमती लकड़ी और धार्मिक महत्व की छवि उभरती है। लेकिन आज के समय में चंदन की पहचान सिर्फ एक महंगी और विलासिता की वस्तु तक सीमित नहीं रह गई है। जलवायु परिवर्तन और बढ़ते प्रदूषण के इस दौर में, चंदन की खेती आर्थिक समृद्धि के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षणका एक बेहद शक्तिशाली और टिकाऊ माध्यम बनकर उभरी है।

पारंपरिक रूप से दक्षिण भारत (कर्नाटक और तमिलनाडु) तक सीमित रहने वाली चंदन की खेती अब देश के अन्य हिस्सों, यहाँ तक कि राजस्थान जैसे शुष्क और रेतीले इलाकों में भी सफलतापूर्वक की जा रही है।

चंदन का अनोखा स्वभाव

'अर्ध-जड़ परजीवी' पर्यावरण के लिहाज से चंदन का सबसे दिलचस्प पहलू इसका स्वभाव है। चंदन एक अर्ध-जड़ परजीवी वृक्ष है। इसका मतलब यह है कि यह पूरी तरह आत्मनिर्भर नहीं होता; इसे बढ़ने के लिए अपने आस-पास 'मेजबान पौधों' की आवश्यकता होती है।

सह-अस्तित्व

चंदन की जड़ों को पोषक तत्व सोखने के लिए नीम, अमलतास, सहजन या करौंदे जैसे पेड़ों के सहारे की जरूरत होती है।

जैव-विविधता को बढ़ावाः

इस स्वभाव के कारण जहाँ भी चंदन उगाया जाता है, वहाँ मजबूरी में ही सही, किसानों को अन्य प्रजातियों के पेड़ भी लगाने पड़ते हैं। इससे एक ही जमीन पर बहुस्तरीय वानिकी विकसित होती है, जो स्थानीय जैव-विविधता को समृद्ध करती है।

पर्यावरण संरक्षण में चंदन की भूमिका

ग्लोबल वार्मिंग के इस दौर में चंदन की खेती पर्यावरण को कई तरह से जीवनदान दे रही हैः

चंदन की खेती पर्यावरण के लिए जितनी मुफीद है, उतनी ही इसमें कानूनी सजगता की जरूरत होती है। चंदन की कटाई या बिक्री से पहले वन विभाग की मंजूरी अनिवार्य होती है ताकि इसकी तस्करी को रोका जा सके। चंदन की खेती केवल एक कृषि व्यवसाय नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक 'हरित निवेश' है। यह बंजर और शुष्क जमीनों को एक महकते हुए जंगल में बदल सकती है। यदि सही वैज्ञानिक प्रबंधन, ड्रिप सिंचाई और उचित सुरक्षा तंत्र के साथ इसे बढ़ावा दिया जाए, तो चंदन की खेती भारत के पर्यावरण को शुद्ध रखने और किसानों की तकदीर बदलने में एक मील का पत्थर साबित होगी।

हवा को शुद्ध करना और कार्बन सोखनाः चंदन के पेड़ पर्यावरण के बेहद अनुकूल होते हैं। ये हवा से भारी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड सोखकर ऑक्सीजन छोड़ते हैं और वायुमंडल को शुद्ध करने में मदद करते हैं।

कम पानी में जीवित रहने की क्षमताः शुरुआत के 2-3 वर्षों में (विशेषकर गर्मियों में) इसे 'ड्रिप इरिगेशन' (टपक सिंचाई) की जरूरत होती है, लेकिन एक बार स्थापित हो जाने के बाद यह कम पानी और शुष्क जलवायु में भी आसानी से पनप सकता है।

मरुस्थलीकरण पर रोकः राजस्थान के बाड़मेर, बांसवाड़ा और सिरोही जैसे शुष्क क्षेत्रों में चंदन के वन विकसित किए जा रहे हैं। यह प्रयोग न केवल मिट्टी की उर्वरता बढ़ा रहा है, बल्कि रेगिस्तान के फैलाव को रोकने में भी मददगार साबित हो रहा है।

आर्थिक लाभ और पर्यावरण का संतुलन

चंदन की खेती की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि यह 'पारिस्थितिकी' और 'अर्थव्यवस्था' के बीच एक बेहतरीन संतुलन बनाती है।

- बाजार की मांग
- अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अत्यधिक
- किसानों के लिए पारंपरिक फसलों के मुकाबले कई गुना अधिक मुनाफा।
- जंगली आबादी पर दबाव में कमी
- खेतों में व्यावसायिक खेती
- जब खेतों में चंदन उगेगा, तो जंगलों में अवैध कटाई और तस्करी पर लगाम लगेगी, जिससे प्राकृतिक वन सुरक्षित रहेंगे।।

एक ज़रूरी बातः

चंदन की खेती पर्यावरण के लिए जितनी मुफीद है, उतनी ही इसमें कानूनी सजगता की जरूरत होती है। चंदन की कटाई या बिक्री से पहले वन विभाग की मंजूरी अनिवार्य होती है ताकि इसकी तस्करी को रोका जा सके।

चंदन की खेती केवल एक कृषि व्यवसाय नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक 'हरित निवेश' है। यह बंजर और शुष्क जमीनों को एक महकते हुए जंगल में बदल सकती है। यदि सही वैज्ञानिक प्रबंधन, ड्रिप सिंचाई और उचित सुरक्षा तंत्र के साथ इसे बढ़ावा दिया जाए, तो चंदन की खेती भारत के पर्यावरण को शुद्ध रखने और किसानों की तकदीर बदलने में एक मील का पत्थर साबित होगी।

कहा जा सकता है कि चंदन की खेती केवल लाभ कमाने का साधन नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति हमारी जिम्मेदारी निभाने का एक श्रेष्ठ माध्यम है। पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक विकास का यह सुंदर संगम भारत को हरित और समृद्ध भविष्य की ओर ले जा सकता है।

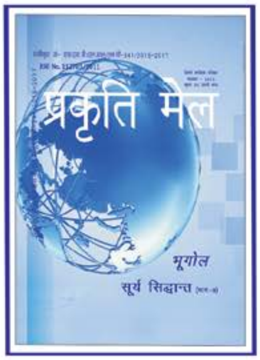

R N I No. UPHIN/2011/40224

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रकृति मेल वह आईना है जिसमें आप अपनी वास्तविक तस्वीर के साथ प्रकृति की हर क्रिया प्रतिक्रिया का वैज्ञानिक स्वरूप देखें।

अशोक 'मानव'

उत्तर भारत की तेजी से लोकप्रिय होती हिन्दी मासिक पत्रिका
(शीघ्र ही अपने विज्ञापन की जगह बुक करवाये) (8423330911)

☐ हां, मैं प्रकृति मेल पत्रिका का वर्षिक ग्राहक बनना पसंद करूंगा/ करूंगी

प्रकृति मेल के पक्ष में देय ₹ ☐☐☐ कैश ☐ चेक ☐ तारीख ☐☐☐☐☐☐

1 year membership fee -220/- only. (Must be drawn in favour of 'Prakriti mail' payable at lucknow)

संलग्न चेक/डिमांड ड्राफ्ट नं. ☐☐☐☐☐☐ आहरित बैंक (बैंक का नाम)________________

नाम ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐

पता____

________________________ राज्य________________ पिन____________

फोन नंबर ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐ ई-मेल:________________________

कृपया फार्म भरकर निम्नलिखित पते पर भेजे:

प्रकृति मेल, सूर्या आश्रम, मानव नगर, (निकट आई.आई.एस.ई.) कल्याणपुर, लखनऊ, पिनकोड- 226022, उ0 प्र0।

नियम और शर्तें

पत्रिका का मूल्य और आफॅर केवल भारत में लागू। कृपया पत्रिका की पहली प्रति डाक या कोरियर के माध्यम से मंगवाने के लिए कुछ समय दें। किसी भी तरह के विवाद का निबटारा केवल लखनऊ की अदालत में होगा।

नि:शुल्क ई-मैगज़ीन प्राप्त करने के लिए हमारे वेबसाइट - www.prakritimail.com पर सम्पर्क करें।

सूत्र वाक्य

अशोक मानव

- प्रकृति विषय नहीं बल्कि विषय को पूर्ण करने की रासायनिक मण्डल है।
- जो स्ववजूद पर गतिमान हो जाता है वही स्वकाल से महाकाल बन जाता है।
- उमंग मानव जीवन की वह प्राकृतिक रासायनिक योग है जिसकी पूर्णता अपने विषय निर्माण के लिए सम्पूर्ण रासायनिक ईंधन प्राप्त कर उत्सर्जित हो जाता है जो अपना भूगोल बनकर विषय को पूर्ण करता है।
- सम्यांकित रसायन का लंकरी विज्ञान हर जीवन को उसके कर्मानुसार सरल करता रहता है जो अवस्था रूप में हर किसी को प्राप्त होता है यही कर्म का परतीय विज्ञान होता है जिस पर गुजरते जाने से जीवन सरल होकर भारमुक्त होता जाता है।
- प्रकृति अनन्त धारा की गतिमान अवस्था है इसका किसी भी निर्माण में कोई हस्तक्षेप नहीं होता है जिसका जैसा गुण होता उसके अनुसार उसकी यात्रा पूर्ण करती है।
- परिवर्तन और निर्माण तकनिकी से नहीं गुण से होता है और गुण का निर्माण अपने स्वभाव की यात्रा से होता है।
- गुरुत्वाकर्षण का गुणात्मक बल जिस गुण का होता है उसी गुण का मिलानकर उसी गुण फल की रसायनिक ऊर्जा के निर्माण करने की क्रिया का नाम 'गुरु' है।
- एहसास स्वगुण का परिणाम है पर उससे बनने वाला पदार्थ विज्ञान प्रकृति है जो हर किसी के लिए होती है।
- प्रकृति पथ भी है पथिक भी।
- अवस्था विशेष विज्ञान विशेष बनाने का विज्ञान है जो सफर को सुहाना बनाने का विज्ञान है जिससे किसी अतिरिक्त बल लगाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती।
- प्रकृति की प्रवृति स्वगंध है।

महानायक

विचार शून्यता का एहसास नायक बनाता है और जब नायक सबके हित का भाव रखता है तो 'महा नायक' बन जाता है।

अशोक मानव

"महायुद्ध की युद्धभूमि अपना शरीर है। विरोधी नकारात्मक ऊर्जा द्वारा उत्पन्न मायावी आकर्षक सारथी मन है और महानायक ज्ञान है, जो युद्ध में आपको विजयी श्री का ताज पहनाता है।"

मानव जीवन में युद्ध होता रहता है। कहीं अपने अधिकार के लिए तो कहीं देश के लिए, पर हर युद्ध का फैसला मानसिक समझौते के बाद होता है। मानव के अतिरिक्त प्रकृति के अन्य जीव भी अपनी सीमा और अधिकार के लिये युद्ध करते हैं। इस युद्ध के अतिरिक्त मानव जीवन अपने आप में एक महायुद्ध लड़ता रहता है। जिसमें विरोधी भी वह स्वयं तैयार करता है। यह युद्ध मानसिक होता है। यह युद्ध शरीर से नहीं बल्कि शरीर के अंदर के पैदा होने वाली ऊर्जा शक्ति से लड़ा जाता है। इस युद्ध से जाने अनजाने हर व्यक्ति को लड़ना पड़ता है। इस युद्ध की युद्धभूमि अपना शरीर होता है। इसी के अंदर युद्ध होता है। हार-जीत का फैसला एहसास से जाना जाता है। इस युद्ध में सकारात्मक ऊर्जा नकारात्मक ऊर्जा से लड़ती है। इस युद्ध में सकारात्मक ऊर्जा को ताकत प्रबल इच्छाशक्ति से मिलती है। नकारात्मक ऊर्जा अपने विरोधी तत्व अथवा प्रकृति में व्याप्त नकारात्मक ऊर्जा और अपने द्वारा निराशाजनक विचार से तैयार होती है। यह युद्ध सबसे खतरनाक उस समय होता है जब कोई अपना बनकर किसी टकराहट के कारण विरोधी बनकर युद्ध करने लगता है विरोधी तत्व तैयार होने के कई कारण होते हैं। अहंकार आने के कारण अपने उद्देश्य की प्राप्ति के कारण, परिवार व अपनों की सुविधा के कारण, सामाजिक कार्य करने के कारण, अपने अंदर सबाल-जवाब पैदा होने के कारण, अपने अंदर नकारात्मक गुण होने के कारण अथवा अनेकों ऐसे विषय उत्पन्न होने के कारण जिसकी जानकारी भी नहीं हो पाती है। शरीर से युद्ध लड़ने का अवसर हर किसी को नहीं मिल पाता है पर इस युद्ध का सामना हर किसी को करना पड़ता है।

जब व्यक्ति अपने उन्नति का कारण सिर्फ अपने आप को ही मानने लगता है तो अहंकार की उत्पत्ति होती है। जब किसी भी विकास में पूरी प्रकृति का सहयोग होता है अहंकार अपना दुश्मन होता है। अपने गुणों पर नाज करना अहंकार की श्रेणी में नहीं आता है जो सच है उसे व्यक्त करना अहंकार की श्रेणी में आता है। अहंकार करने से कुछ लोग विरोधी बन जाते हैं। जिसके लिये अहंकार किया जाता है उसके विरोध में सोचने लगते हैं जिसके कारण उनके अंदर पैदा होने वाली नकारात्मक ऊर्जा अहंकारी व्यक्ति के जीवन में रुकावट पैदा करने लगती है। इस रुकावट को दूर करने के लिये व्यक्ति को ऊर्जात्मक महायुद्ध करना पड़ता है। इस युद्ध में जिसकी इच्छाशक्ति प्रबल होती है वही युद्ध जीत पाता है। इस युद्ध में व्यक्ति की ऊर्जा-शक्ति व्यर्थ में खर्च होती है। व्यक्ति अपने अंदर अहंकार न आने दे तो उसकी ऊर्जाशक्ति सुरक्षित रहती है जिसे अपने निर्माण में खर्च कर सकता है अपने विकास का कारण प्रकृति को मानकर व्यक्ति अहंकार से बच सकता है। अहंकार जीवन की वह बुराई है जो अज्ञानता से पैदा होती है। अपने ज्ञान के बाण से व्यक्ति इस युद्ध को रोक सकता है। अहंकार का चिराग प्रकृति प्रदत्त पदार्थ गुण की सम्पन्नता को न सम्भाल पाने से जगता है और अपनों को अपना विरोधी बना देने के बाद बुझ जाता है। इस अपने को पथ में परिवर्तित करके अर्थहीन अहंकार रूपी महायुद्ध से हर व्यक्ति बच सकता है। हर व्यक्ति का अपने जीवन में कुछ बनने का मुख्य उद्देश्य होता है अथवा जीवन में कुछ न कुछ प्राप्त करने को अपना उद्देश्य बनाता रहता है। कुछ अन्य लोग भी उसी को प्राप्त करना अपना उद्देश्य बना लेते हैं। ऐसी परिस्थिति में दोनों तरफ से निकलने वाली इच्छाशक्ति रूपी ऊर्जा एक दूसरे की ऊर्जा से लड़ती रहती है। इस युद्ध से नहीं बल्कि शरीर से निकलने वाली ऊर्जा से होता है। पाने वाला एक होता है और अनेकों व्यक्ति की ऊर्जा उसे रोकने के लिये लड़ती है पाने वाले के साथ भी उसके शुभचिंतको की ऊर्जा सहयोग करती है। यह ऊर्जा न दिखाई देने वाले में साथ देती है। इस युद्ध का प्रभाव शरीर के ऊपर पड़ता है जो अनुभूति के रूप में व्यक्त होता रहता है। इस युद्ध में जीत उसकी ही होती है जिसकी तरफ से ज्यादा लोगों की इच्छाशक्ति की ऊर्जा निकलती है। यह युद्ध स्वाभाविक होता है। जिसे रोका नहीं जा सकता है। आगे बढ़ना हर व्यक्ति का प्राकृतिक अधिकार होता है। हर व्यक्ति को अपना अधिकार प्राप्त करने के उद्देश्य से युद्ध लड़ना चाहिए। दूसरे के अधिकार को छीनने के उद्देश्य से नहीं। ऐसा सोचना प्राकृतिक होता है। जो अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए बाधक बनकर अपने ही विरोध में युद्ध लड़ने लगता है। अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सकारात्मक सोच के साथ अधिक से अधिक समय लगाने पर विजय प्राप्त होती है।

मानव समाज का अपना एक परिवार होता है। समाज में भी कुछ ऐसे लोग जुड़ जाते हैं जिनसे परिवार जैसा रिश्ता बन जाता है। पूरे परिवार के प्रति प्रेम होता है। परिवार के लोग एक दूसरे के प्रति शुभ चिन्तक होते है। शुभ चिंतक का भाव होने के कारण एक दूसरे की ऊर्जा सुरक्षा कवच बनकर रक्षा करती रहती है। जब नकारात्मकता हानि पहुँचाने व रुकावट पैदा करने के लिए आती है तो सुरक्षात्मक ऊर्जा उसे रोक देती है। नकारात्मक ऊर्जा उसके ऊपर प्रभाव डालती है। दोनों ऊर्जा में युद्ध होता है। इस प्रकार अपनों के लिए अपनी ऊर्जा युद्ध करते हुए सुरक्षा प्रदान करती है। यह युद्ध स्वाभाविक रूप से होता रहता है। इस युद्ध का

प्रभाव शरीर पर पड़ता है। इस प्रकार परिवार के लिए एक दूसरे की रक्षा करते हैं। जिसकी ऊर्जा शक्तिशाली होती है विजय श्री उसी को मिलती है। कुछ ऐसे लोग होते हैं जो समाज के हित के लिए संगठन बनाकर समाज के अंदर व्याप्त बुराई को दूर करने के कार्य करते हैं। कुछ ऐसे लोग का भी संगठन होता है जो समाज को अधिकार दिलाने के लिए कार्य करते हैं। जिसमें राजनीतिक संगठन आते है। कुछ संगठन दवाब समूह के रूप में कार्य करते हैं। धार्मिक संगठन भी बनाकर कर कार्य करते हैं। उपरोक्त संगठन में कुछ सामाजिक हित के लिए ही कार्य करते हैं अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कार्य करते हैं। इन संगठनों का अपना समूह होता है। कई लोग मिलकर कार्य करते है। इन संगठनों का एक अपना समूह होता है।

एक समूह के लोगों की विचारधारा आपस में मिलती है। यह जिस विचारधारा के लिए कार्य करते हैं उसके विपरीत उपरोक्त विरोध करने वाली ऊर्जा से इनका युद्ध होता रहता है। विरोध करने वाले उनकी विचारधारा का खंडन करते रहते हैं। इस युद्ध में सामूहिक रूप से कई लोगों की एक भाव की ऊर्जा निकलती है जिसका समर्थन समाज के लोग भी करने लगते हैं। तब इस उर्जा का बल बढ़ जाता है। जो विरोध करने वाली ऊर्जा से लड़ता है। दोनों ऊर्जा का महायुद्ध होने लगता है। जिसकी भावनात्मक ऊर्जा अधिक हो जाती है वही युद्ध जीत कर आगे बढ़ जाता है। मानव जीवन अपने अंदर कई सवाल बनता है अथवा काल्पनिक इच्छाएं पैदा करता है। इस सवाल और इच्छा में आने वाली बढ़ाओ के बारे में भी सोचता है। ऐसा करने से प्रकृति में फैली हुई नकारात्मक ऊर्जा आ जाती है जिससे सकारात्मक ऊर्जा लड़ने लगती है। दोनों ऊर्जा में महायुद्ध शरीर के अंदर होने लगता है इस युद्ध से शरीर प्रभावित होता रहता है। यह युद्ध अनावश्यक होता है इस युद्ध से बचा जा सकता है ऐसे विचार आ जाते हैं तो उसके प्रति सकारात्मक भाव बनाकर व्यर्थ में खर्च होने वाली ऊर्जा को रोका जा सकता है। कुछ लोग नकारात्मक प्रवृत्ति के होते हैं उन्हें हर जगह की कमियां दिखाई देती हैं। दूसरों की कमियां देखकर उसी के बारे में सोचने लगते हैं। ऐसा करने से नकारात्मक ऊर्जा से हमेशा लड़ते हैं। ऐसे लोगों के चेहरे पर जल्दी खुशी की लहरे दिखाई नहीं पड़ती हैं। ऐसे लोग कमियां ना देखकर अच्छाइयां देखें तो व्यर्थ की लड़ाई को रोक सकते हैं।

नकारात्मक उर्जा शरीर को नुकसान पहुंचती है जिससे शरीर के अंदर से निकलने वाली सकारात्मक ऊर्जा रोकती है और उसे शरीर के अंदर से निकालने के लिए लड़ते रहती है। अनेकों ऐसे विषय टकराते हैं जिसकी जानकारी पहले से नहीं होती है जैसे किसी दुर्घटना को देखने से या सफर में चलते हुए दुखी करने वाले विषय को देखने से, जब व्यक्ति उसके बारे में सोचने लगता है तो नकारात्मक ऊर्जा उसे प्रभावित करने लगती है ऐसा होने से व्यक्ति दुखी होने लगता है। जिसके कारण से अन्य नकारात्मक उर्जा भी उसे प्रभावित करने लगती है जिसे निकालने के लिए अपने अंदर की सकारात्मक ऊर्जा लड़ने लगती है। जब कोई ज्यादा करीब आ जाता है तब व्यक्ति बार-बार उसी के बारे में सोचने लगता है। ऐसा करने से उसकी ऊर्जा अपने अंदर स्थान बनाकर अपने गुण का फैलाव कर लेती है। यह रिश्ता दूरी बनाते हैं तब द्वितीय पक्ष द्वारा छोड़ी गई नकारात्मक ऊर्जा को शरीर के अंदर आने की जगह मिल जाती है। जिसे निकालने में महायुद्ध करना पड़ता है इस युद्ध में दोनों पक्ष को परेशानी होती है। ऐसे रिश्ते यदि नजदीकी नहीं रख पा रहे हैं तो एक दूसरे का विरोधी नहीं बनना चाहिए ऐसा करने से व्यक्ति व्यर्थ के युद्ध से बच जाता है और अपनी यही ऊर्जा किसी सृजन में लगानी चाहिए।

शरीर के युद्ध से बड़ा मानसिक युद्ध होता है इसमें ऊर्जा, ऊर्जा से लड़ती है इसको लड़ने का अपना तरीका होता है। सबसे पहले ईष्ट के प्रति अटूट विश्वास बनकर अपने शरीर को सुरक्षित कर लेना चाहिए। इस विश्वास से प्रकाश बनता है जो शरीर को सुरक्षित कवच देता है। इसके बाद जिस भाव की ऊर्जा छोड़ रहे हैं उसी के प्रति एकाग्र रहें अन्य किसी विषय को पैदा न होने दें। एक समय में एक ही कार्य करें मन को अन्य कई कार्यो में बंटने ना दें। ऐसा करने से ज्ञान चक्षु खुल जाता है। जिससे यह दिखाई देने लगता है कि अब मुझे क्या करना चाहिए? जब सही स्थिति की पहचान हो जाए तब उसी भाव की ऊर्जा एकाग्र होकर छोड़ते जाने से विरोधी ऊर्जा नष्ट होने लगती है इस युद्ध में सहयोगी लोगों की भी ऊर्जा विरोधी ऊर्जा को नष्ट करने में सहायक होती है। इस युद्ध में शरीर धनुष बन जाता है और एकाग्र होकर जो इच्छा बन जाती है उसे भाव की ऊर्जा तीर बनाकर विरोधी ऊर्जा पर आक्रमण करती है। एकाग्रता ही तीर को शक्तिशाली बनाती है। ऐसा करने से तीर निर्वार्थ रूप से लक्ष्य तक पहुंचता है। तीर में तीव्रता होती है जिसे विरोधी ऊर्जा रोक नहीं पाती है।

युद्ध के लिए प्रशिक्षण देने की क्रिया आम होती है और पूर्व में गुरु द्वारा गुरुकुल प्रणाली से दी जाती थी। प्रशिक्षक एक ही विद्या सभी को सिखाता है पर निपुणता किसी एक में ही आ पाती है। यह निपुणता उसी को मिल पाती है जो एकाग्रचित होता है। उसकी एकाग्रता ही उसके बाण को शक्तिशाली बना देती है, जबकि सभी के पास धनुष बाण एक ही जैसे होते हैं पर किसी एक का ही बाण लक्ष्य भेदन कर पाता है। ठीक इसी प्रकार ऊर्जात्मक युद्ध में भी एकाग्रता ही लक्ष्य भेदन के लिए ऊर्जा रूपी बाण छोड़ पता है। यही विद्या ऊर्जात्मक महायुद्ध में विजेता बन जाता है। इस महायुद्ध में आप महानायक हैं अन्य शुभचिंतक सेना रूपी सहायक हैं जीवन भर युद्ध चलता रहता है सिर्फ विषय बदलते रहते हैं। हर विषय के युद्ध में एकाग्र होकर सिर्फ अपने लक्ष्य को देखें और भावना बनाकर इच्छा शक्ति से अपनी उर्जा रूपी बाण अपने लक्ष्य पर तब तक छोड़ते रहे जब तक विजय ना मिल जाए। यदि एकाग्रता बनी रहेगी तो विजय श्री आपको ही मिलेगी ऐसा करने से नकारात्मक ऊर्जा खत्म होगी और सकारात्मक ऊर्जा सतयुग का निर्माण करेगी क्योंकि सत्य के लिए लड़ रहे व्यक्ति की एक ही एकाग्रता बन पाती है। असत्य के लिए लड़ रहे व्यक्ति की एकाग्रता ज्यादा समय तक नहीं रुक पाती है। एकाग्रता बनाए रखने के लिए सत पथ पर चलना आवश्यक होता है। आप सब विजेता बनें और सात स्थापित हो इसी शुभकामना के साथ...

प्रश्न हमारे
उत्तर श्री अशोक मानव जी के

प्रश्न : जीव एवं जीवन का चक्रव्यूह क्या है ?

उत्तर : उत्पत्ति से पूर्व धर्म, सभ्यता, संस्कृति समाज और पूर्वज का लेपन बीजत्व में जुड़ जाता है पर यह लेपन प्राकृतिक रूप से उतना ही जुड़ता है जिसके लिए उसकी भूमि जिम्मेदार होती है इसे जीव का चक्रव्यूह कहते हैं और जो बाह्य जगत से प्रभावित होकर अपना लेता है उसे जीवन का चक्रव्यूह कहते हैं।

प्रश्न : क्या प्रकृति कभी किसी अवस्था को रोकती है ?

उत्तर : प्रकृति अवस्था को रोकती नहीं सदैव गतिमान रखती है।

यदि किसी पाठक के मन में कोई भी सामाजिक या प्राकृतिक प्रश्न उठ रहा है वह उस प्रश्न का निदान चाहते हैं तो पाठक हमें अपना प्रश्न निम्न पते पर भेज सकते हैं। निदान प्रश्न के अगले अंक में दिया जाएगा।
आप अपना प्रश्न डाक द्वारा या ईमेल पर भेज सकते हैं

डाक पता : प्रकृति मेल, सर्या आश्रम, मानव नगर (निकट आई.आई. एस.ई), कल्याणपुर, लखनऊ-226022, उ0 प्र0
ईमेल-info@parkritimail.com, editor.prakritimail@gmail.com
9807636072, 7376495194

संगत का असर

सुनील कुमार माथुर
जोधपुर, राजस्थान

फोटो : एआई

इस नश्वर संसार में दोस्त, रिश्तेदारों व पडौसियो सबको आजमा कर देख लीजिए। अगर तुम्हारे पास पैसा और कामयाबी नहीं है तो तुम्हारा साथ देने वाला कोई नहीं मिलेगा। कहते है कि हृदय की पीडा ईश्वर को ज्ञात हैं लोगों के लिए तो वैसे भी सब मजाक है। किसी महापुरुष ने बहुत ही सुन्दर बात कहीं है कि हम कुछ भी न बोले फिर भी वह सुन ले उसी का नाम परमात्मा है और जो कुछ भी नहीं बोले फिर भी हम सुन लें उसी का नाम श्रद्धा है।

संगत का असर जीवन में अवश्य ही पड़ता है। इसलिए हमेशा अच्छे लोगों की संगत कीजिए। जीवन में जब मित्र अच्छे होगे तो जीवन की बगिया में खुश्बू ही खुश्बू है और मित्र ऐसा हो जो अय्याशी हो, शराबी हो, जुआरी हो तो जीवन नर्क बन जाता हैं। परिवार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और सुख चैन सब कुछ छीन जाता है। इसलिए सोच समझ कर दोस्त बनाएं। भले ही अच्छे दोस्तों की संख्या कम ही क्यों न हो। आप देखिए संगत बदलते हो तो सोच बदल जायेगी। सोच बदलो जिंदगी बदल जायेगी। बुरी संगत की मिठास बस पल भर की होती हैं मगर इसका जहर जिंदगी भर रहता है। इसलिए दोस्ती करते समय व्यक्ति के व्यवहार, उसके आचरण, उसकी बोली आदि आदि का ध्यान रखें और फिर अपना दोस्ती का हाथ बढाये अन्यथा गलत दोस्तों के कारण जीवन भर पछताना पड़ेगा।

इस नश्वर संसार में दोस्त, रिश्तेदारों व पडौसियो सबको आजमा कर देख लीजिए। अगर तुम्हारे पास पैसा और कामयाबी नहीं है तो तुम्हारा साथ देने वाला कोई नहीं मिलेगा। कहते है कि हृदय की पीडा ईश्वर को ज्ञात हैं लोगों के लिए तो वैसे भी सब मजाक है। किसी महापुरुष ने बहुत ही सुन्दर बात कहीं है कि हम कुछ भी न बोले फिर भी वह सुन ले उसी का नाम परमात्मा है और जो कुछ भी नहीं बोले फिर भी हम सुन लें उसी का नाम श्रद्धा है।

यह जीवन तो दर्पण की तरह है। यदि इसे देखकर हम मुस्कुरायेगे तो हमारा जीवन भी मुस्कुरायेगा। परमात्मा को याद करने का सरल तरीका है सभी को राम राम कहना। जयश्री कृष्णा कहना। राधे राधे बोलना। आप घर की साफ-सफाई करते हुए, भोजन पकाते हुए, स्नान करते हुए, कपडे धोते हुए भी ईश्वर के नाम का स्मरण कर सकते हैं। अलग से समय निकालने की जरूरत नहीं है। अगर आपके पास समय हैं तो एकाग्रचित्त होकर ध्यान कीजिए। पूजा-अर्चना कीजिए। धार्मिक पुस्तकें पढ़िए। फिर देखिए आपके चेहरे की रौनक ही बदल जायेगी और आप ईश्वर भक्ति में लीन हो जायेगे तथा क्रोध अंहकार, लोभ, लालच जैसे अवगुणों से आपको मुक्ति मिल जाएगी एवं जीवन खुशहाल हो जायेगा।

सफल जीवन

आज वक्त की पुकार है कि जीवन को समय के अनुसार जीने में ही समझदारी है। चूंकि मनुष्य को वक्त के अनुसार अपने आपको ढालना चाहिए अन्यथा हम पिछड़ जायेंगे। जो अपने आपको समय के अनुसार ढाल लेता है, वही सफलता की सीढ़ियां आसानी से चढ़ पाता है। किसी ने बहुत ही सुन्दर बात कहीं है कि जीवन में चार वेदों का ज्ञान न हो तो भी चलता है लेकिन समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और वफादारी इन चार बातों को जीवन में अपना लिया तो जीवन खुद ही सफल हो जायेगा। इसलिए हमें जीवन में कभी भी अपनी जिम्मेदारी से पीछे नहीं हटना चाहिए। ईमानदारी के साथ अपनी जिम्मेदारी

को निभाते रहना चाहिए। याद रखिए भरोसा बहुत ही मंहगी चीज होती हैं जो हर किसी पर नहीं किया जा सकता।

यूं ही मुस्कुराते रहिए

आप हमेंशा यूं ही मुस्कुराते रहिए कभी अपने लिए तो कभी अपनों के लिए। क्योंकि यह नश्वर संसार एक बगिया है जहां हर कोई जबरदस्ती मुस्कान चेहरे पर ला रहे हैं जो न खुश्बू देते है और न ही उनमें अपनेपन का भाव हैं। जब आप दिल से मुस्कुराते हैं तो उसकी खुश्बू दूर तक फैल जाती है और जन जन के हृदय को आलोकित कर देती है और पराये भी अपने हो जाते हैं। चेहरे की मुस्कुराहट ही हमारा अनमोल रत्न है जिसे न कोई चूरा सकता है, न ही कोई छीन सकता हैं और न ही इसका बंटवारा किया जा सकता है। यह अनमोल रत्न हमें कुदरत ने दिया है। मूर्ख तो हम ही है जो मुस्कुराहट को उदासी में बदले हुए हैं। दुःख, पीड़ा, परेशानियां तो परमात्मा ने भी झेले है फिर हम हर वक्त उदासी की जिंदगी क्यों जी रहें हैं। मुस्कुराहट हमें प्रकृति से मिली है जो निशुल्क है फिर मुस्कुराते रहने से परहेज़ क्यों। कहते है कि सलीके से हवाओं में जो खुश्बू घोल देते है अभी भी कुछ लोग बाकी है जो मुश्किलों में भी मीठा बोल लेते हैं।

साहित्यकारों की जिम्मेदारी

एक वक्त था जब लोग कहते थे कि शिक्षक न केवल ज्ञानदाता ही है बल्कि एक माता के समान बालक के भीतर संस्कारों और चरित्र का निर्माण करने वाला होता हैं। चूंकि किसी भी राष्ट्र की पहचान उसके नागरिकों से होती है और उन नागरिकों के निर्माण की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी शिक्षकों के कंधे पर होती है लेकिन आज आज शिक्षक इस जिम्मेदारी से बहुत दूर है, क्योंकि उनका कहना है कि आदर्श संस्कारों और चरित्र निर्माण की जिम्मेदारी अभिभावकों की है और अभिभावक कहते है कि यह जिम्मेदारी शिक्षकों की है। हम उन्हे हर माह फीस के रूप में मोटी रकम किस बात की देते है। नतीजन आज का बालक ऐसे चौराहे पर खड़ा है जहां उसे सही दिशा देने वाला कोई नहीं है।

जीवन ऐसा हो जो संबंधों की कदर करे और संबंध ऐसे हो जो याद करने को मजबूर कर दे। दुनियां के रैन बसेरे में पता नही कितने दिन रहना है जीत लो सबके दिलों को बस यही जीवन का गहना है। इस नश्वर संसार में दूसरो के साथ वैसा ही व्यवहार कीजिए जैसा आप दूसरों से अपने प्रति चाहते हो। हमेंशा प्यार, स्नेह, धैर्य, सहनशीलता, क्षमा, त्याग जैसे गुणों की वर्षा करते रहिए।

बालकों के चरित्र निर्माण व राष्ट्र का भावी नागरिक बनाने का कार्य आज का साहित्यकार कर रहा है। वह बच्चों को अनुशासित, ईमानदार, निष्ठावान और देशभक्त नागरिकों का निर्माण एक समर्पित साहित्यकार की हैसियत से कर रहा है। साहित्यकार हर वक्त केवल मनोरंजन के लिए ही नहीं लिखता है अपितु बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए भी समर्पित भाव से निस्वार्थ भाव से लेखन कर्म कर रहा है। धन्य है उनकी लेखनी को जो राष्ट्र की मुख्यधारा से कटे लोगों को सही दशा व दिशा दिखा रहीं हैं।

जीवन का गहना

आनन्द मय जीवन व्यतीत करना भी एक कला है और जिसने इस कला को सीख लिया उसका जीवन आनंद मय हो गया। आज का इंसान स्वार्थ में इतना अंधा हो गया है कि वह आपको कोई भी जानकारी आसानी से नहीं देता है अपितु जलेबी की तरह गोल माल कर देता है जिससे बात आसानी से समझ में नहीं आती हैं। वहीं दूसरी ओर जलेबी न केवल मीठी ही होती है अपितु एक महत्वपूर्ण संदेश भी देती हैं कि खुद भले ही कितने भी उलझे हुए क्यों न हो, मगर दूसरों को मिठास दीजिए। कहने का तात्पर्य यह है कि हर समस्या का समाधान करते समय दूसरों को भी उसका ज्ञान कराइये। न जानें कौन सा ज्ञान कब किसके काम आ जाये। इतना ही नहीं जब भी किसी से कोई व्यवहार करे तब हंसते मुस्कुराते हुए कीजिए ताकि सामने वाला भी खुश रहे और आप भी प्रसन्नचित रहें।

किसी पर भी विचारों को न थोपें

संबंध में जब जिद और अहम दोनों आ जाते हैं तो दोनो ही जीत जाते है लेकिन संबंध हार जाता हैं। कभी भी किसी बात पर जिद व अंहकार न करे। हर व्यक्ति की सोच अलग-अलग होती हैं और वे अपने-अपने ढंग से सोचते हैं। इसलिए अपने विचारों को कभी भी किसी पर थोपने का प्रयास न करें। अगर आप अपने विचारों को थोपने का प्रयास करेंगे तो इससे आपसी संबंधों में खटास आ जायेगी। इससे तो अच्छा है कि आप यह कह सकते है कि मेरा यह सुझाव है अगर ऐसा करें तो बेहतर होगा। फिर भी सामने वाला आपके विचारों को न मानें तो घबराएं नहीं अपितु मौन हो जाये। चूंकि ऐसे समय में मौन रहने में ही समझदारी है वरना मनमुटाव बढ़ सकता हैं।

याद रखिए जीवन ऐसा हो जो संबंधों की कदर करे और संबंध ऐसे हो जो याद करने को मजबूर कर दे। दुनियां के रैन बसेरे में पता नही कितने दिन रहना है जीत लो सबके दिलों को बस यही जीवन का गहना है। इस नश्वर संसार में दूसरो के साथ वैसा ही व्यवहार कीजिए जैसा आप दूसरों से अपने प्रति चाहते हो। हमेंशा प्यार, स्नेह, धैर्य, सहनशीलता, क्षमा, त्याग जैसे गुणों की वर्षा करते रहिए। इससे आप हर किसी का मन जीत लेंगे और यही प्यार व स्नेह जीवन का असली गहना है जिसे हमें संभाल कर रखना होगा।

दूसरों की थाली में न झांके

कहते है कि दूसरों की थाली में झांकते रहोंगे तो आपकी थाली की रोटी ठंडी हो जायेगी। आप अपनी थाली की रोटी को देखकर संतुष्ट हो जाये। चूंकि जितना भी मिला है वह पर्याप्त समझें और रोटी के स्वाद का आनन्द लीजिए। हर किसी को ईश्वर उसकी आवश्यकता के अनुसार देता है और उसे मालूम है कि किसे कब क्या देना है। इसलिए दूसरों की उन्नति व

प्रगति देखकर हताश व निराश न हो। प्रेम से जो मिला है उसी में संतुष्ट होने की कोशिश कीजिए। कल के सुनहरे पलों के लिए आज के सुनहरे पलों को बर्बाद मत होने दीजिए। जो सुनहरे पल मिलें हैं उनका भरपूर मात्रा में आनन्द लीजिए। हो सकता है कि कल का दिन आज से भी बेहतर हो लेकिन जो सुनहरे पल मिलें हैं उनका भरपूर मात्रा में आनन्द लेने से मत चूके।

धैर्यः धैर्य वह गुण है जो कितना भी बड़ा तूफान क्यों न आ जाए उसके बावजूद भी वह तूफान के गुज़र जाने पर हर परिस्थिति में हमें थामें रखता हैं और मजबूत बनाए रखता हैं। इसलिए जीवन में कभी भी आप धैर्य की परीक्षा न लें। धैर्य, सहनशीलता और त्याग की भावना ही हमारी सबसे बड़ी ताकत है। धैर्य ही वह सर्वश्रेष्ठ गुण है जो हमें हर परिस्थिति में व विपदा के वक्त मजबूती प्रदान करता हैं अन्यथा इंसान एक सैकंड में अपना अस्तित्व खो बैठता। जहां धैर्य जैसे गुण हो वहां कोई समस्या आपके मार्ग में बाधक नहीं बन सकती

प्रतिस्पर्धा की इस दौड़ में आज इंसान दूर देखने के चक्कर में पड़ा हुआ है। वह अपने आसपास की प्रतिभाओं की अनदेखी कर रहा और दूर की प्रतिभाओं को पाने के लिए लालायित हो रहा हैं। वह यह नहीं जानता कि जिन प्रतिभाओं और कार्य की हम आशा करते है और वे हमारी पहुंच से काफी दूर है फिर भी इंसान दूर देखने के चक्कर में पड़ा रहता है नतीजन पास वाला भी दूर चला जाता है और हम अपने पास वाली सुविधाओं व प्रतिभाओं से भी वंचित हो जाते है। इसलिए दूर देखने के चक्कर में न पड़ें अपितु वहीं करें जो आपके लिए सम्भव हो।

झूठ से बचे

समाज में ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है जो आपकी पीठ पर मौका देखकर वार कर दें। एक वरिष्ठ नागरिक ने अपने मित्र के बच्चें को आवश्यक पत्र पोस्ट करने को दिया और कहा कि यह अति आवश्यक है इसे प्राथमिकता के

प्रकृति हमें प्रतिदिन यह शिक्षा देती है कि परिवर्तन जीवन का अटल नियम है। जैसे ऋतुएँ बदलती हैं, वैसे ही जीवन में सुख और दुःख का आना-जाना लगा रहता है। कठिन समय में निराश होने के स्थान पर हमें धैर्य और विश्वास बनाए रखना चाहिए। यदि हम प्रत्येक परिस्थिति से कुछ सीखने का प्रयास करें, तो हर अनुभव हमारे व्यक्तित्व को और अधिक परिपक्व बनाता है।

साथ सभी कार्य छोड़कर पहले पोस्ट करना लेकिन उस बच्चे ने उसे पोस्ट नहीं किया और झूठे ही कह दिया कि पोस्ट कर दिया। उस बच्चे ने उस वरिष्ठ नागरिक के साथ ऐसे तीन चार बार कर चुका था।

एक दिन वह वरिष्ठ नागरिक उसके घर गया उस समय वह बच्चा अपना बैग जमा रहा था। बैग के पास अपने पत्र देखकर वह वरिष्ठ नागरिक रो पड़ा और बोला, बेटा! तुमने झूठ बोलकर मेरे साथ धोखा किया। यह पत्र मैंने अपने बच्चों को लिखे थे उनके हाल चाल जानने के लिए। लेकिन तुने इनका महत्व नहीं समझा और मेरे व मेरे बच्चों के बीच अविश्वास की दीवार खडी कर दी। उस बच्चे ने बाद में क्षमा याचना की लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। इसलिए कभी भी जीवन में झूठ न बोलें। आपका एक झूठ दूसरे को कितना नुक़सान पहुंचा सकता हैं। अतः सदा झूठ से बचें और सकारात्मक सोच रखें।

जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए केवल ज्ञान ही पर्याप्त नहीं होता, बल्कि अच्छे संस्कार और सकारात्मक सोच भी उतनी ही आवश्यक होती है। जो व्यक्ति अपने व्यवहार में विनम्रता, ईमानदारी और धैर्य को स्थान देता है, वह कठिन परिस्थितियों में भी अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होता। जीवन की राह में अनेक चुनौतियाँ आती हैं, परंतु जो व्यक्ति आत्मविश्वास और परिश्रम के साथ आगे बढ़ता है, वह अंततः सफलता का स्वाद अवश्य चखता है। इसलिए हमें हर परिस्थिति में अपने मनोबल को ऊँचा रखना चाहिए और निरंतर आगे बढ़ते रहना चाहिए।

मनुष्य के जीवन में मधुर वाणी का विशेष महत्व है। मीठे शब्द न केवल संबंधों को मजबूत बनाते हैं, बल्कि दूसरों के हृदय में भी सम्मान और प्रेम उत्पन्न करते हैं। कटु वचन जहाँ वर्षों पुराने संबंधों को तोड़ सकते हैं, वहीं मधुर व्यवहार अनजान लोगों को भी अपना बना सकता है। इसलिए बोलने से पहले यह अवश्य विचार करना चाहिए कि हमारे शब्द किसी को दुःख तो नहीं पहुँचा रहे। संयमित और शिष्ट भाषा हमारे व्यक्तित्व की सबसे बड़ी पहचान होती है।

प्रकृति हमें प्रतिदिन यह शिक्षा देती है कि परिवर्तन जीवन का अटल नियम है। जैसे ऋतुएँ बदलती हैं, वैसे ही जीवन में सुख और दुःख का आना-जाना लगा रहता है। कठिन समय में निराश होने के स्थान पर हमें धैर्य और विश्वास बनाए रखना चाहिए। यदि हम प्रत्येक परिस्थिति से कुछ सीखने का प्रयास करें, तो हर अनुभव हमारे व्यक्तित्व को और अधिक परिपक्व बनाता है। सकारात्मक दृष्टिकोण और ईश्वर में आस्था रखने वाला व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी आशा का दीपक जलाए रखता है।

संतोष जीवन का वह अमूल्य धन है जो मनुष्य को वास्तविक सुख प्रदान करता है। आज अधिकांश लोग दूसरों की उपलब्धियों को देखकर स्वयं को दुखी कर लेते हैं और अपने पास उपलब्ध्य सुख-सुविधाओं का महत्व भूल जाते हैं। जबकि सच्ची खुशी उसी व्यक्ति को प्राप्त होती है जो अपनी परिस्थितियों को स्वीकार करते हुए निरंतर प्रगति का प्रयास करता है। संतोष का अर्थ यह नहीं कि व्यक्ति परिश्रम करना छोड़ दे, बल्कि इसका अर्थ है कि वह अपनी उपलब्धियों के प्रति कृतज्ञ रहे और ईर्ष्या से दूर रहकर अपने जीवन को सार्थक बनाए।

दूसरों से तुलना की बुरी प्रवृत्ति

फोटो : एआई

हर समय दूसरों से अपनी तुलना करना केवल एक आदत नहीं, अपितु यह एक ऐसा मोहजाल है, जिसमें हमारी प्रसन्नता, वास्तविक पहचान और संभावनाएं अपना अस्तित्व खो देती हैं। प्रदर्शनवादी प्रतिस्पर्धा ने दूसरों से तुलना की प्रवृत्ति को बढ़ाया है। अब तुलना मात्र पड़ोसी, मित्र या सहकर्मी से नहीं है, अपितु स्क्रीन पर दिख रही सारी दुनिया से है। सोशल - मीडिया की चकाचौंध में डूबे रहने वाले युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य में गिरावट देखी गई है।

गौरीशंकर वैश्य विनम्र

लखनऊ

दूसरों से तुलना करना मनुष्य की एक सामान्य प्रवृत्ति है, परन्तु जब यह आदत अत्यधिक बढ़ जाती है तो आत्मविश्वास, संतोष और मानसिक शांति को नष्ट करने लगती है। तुलना से ईर्ष्या, हीनभावना, तनाव और असंतोष जन्म लेते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की परिस्थितियाँ, क्षमताएँ, अवसर और जीवन-यात्रा भिन्न होती हैं, इसलिए किसी की सफलता को अपने जीवन का मापदण्ड बना लेना उचित नहीं है।

प्रायः लोग दूसरों की यश- समृद्धि एवं प्रभाव देखकर उनसे अपनी तुलना करने लगते हैं। कभी-कभी मित्र और परिजन भी आग में घी डालने का काम करते हैं, जैसे प्रतीक को देखो, आपके साथ ही आफिस में है, और उसके पास बड़ी - सी कीमती कार है और एक आप हैं, पुरानी फटफटिया घसीट रहे हो, आपके भाई ने ही अपना नया घर बना लिया और आप पुराने घर में ही दिन काट रहे हो। यार, पता नहीं कैसे शोभित की बेटी एमबीबीएस में आ गई आदि-आदि। लोग अनायास ही दूसरों की उन्नति और सुख-सुविधाएं देखकर ईर्ष्या से भर उठते हैं। वास्तव में डिजिटल युग में सोशल-मीडिया और पाश्चात्य की ईएमआई वाली जीवनशैली ने सभी के मन में विष भर दिया है। मिशिगन विश्वविद्यालय से मनोवैज्ञानिक एथेन क्रास ने

सोशल-मीडिया पर आधारित एक अध्ययन में बताया है कि दूसरों की उपलब्धियों को देखकर सामाजिक ईर्ष्या उत्पन्न होती है। 'इमोशनल फर्स्ट एड ःहीलिंग रिजेक्शन, गिल्ट एंड फेल्योर 'के लेखक गाय विच कहते हैं, 'हमें दूसरों की मात्र प्रगति दिखती है, उसके पीछे उसका संघर्ष नहीं। '

लीडरशिप एक्सपर्ट टिम एलोर के अनुसार, 'दूसरों की उन्नति से होने वाली जलन. उस चीज को पाने की हमारी छिपी चाह है।'

हर समय दूसरों से अपनी तुलना करना केवल एक आदत नहीं, अपितु यह एक ऐसा मोहजाल है, जिसमें हमारी प्रसन्नता, वास्तविक पहचान और संभावनाएं अपना अस्तित्व खो देती हैं। प्रदर्शनवादी प्रतिस्पर्धा ने दूसरों से तुलना की प्रवृत्ति को बढ़ाया है। अब तुलना मात्र पड़ोसी, मित्र या सहकर्मी से नहीं है, अपितु स्क्रीन पर दिख रही सारी दुनिया से है। सोशल-मीडिया की चकाचौंध में डूबे रहने वाले युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य में गिरावट देखी गई है और किशोरों में तनाव, अवसाद एवं गुस्सा की बेचैनी बढ़ रही है। दूसरों से तुलना करते समय स्वयं को पिछड़ा हुआ पाकर अशांति, हीनता और लज्जा का अनुभव होता है, जो शारीरिक एवं मानसिक विकास को अवरुद्ध करता है। हर समय दूसरों से अपनी तुलना करना हमें उनके प्रति दुर्भावना से भर देता है। दूसरों की उपलब्धियों को देखकर ईर्ष्या एवं प्रतिशोध की भावना उत्पन्न होती है, जो आत्मसम्मान को घटाकर उसमें असंतोष भर देती है। हम हीनभावना के कारण दूसरे की प्रगति देखकर घृणा और क्रोध से भरे उसकी आलोचना करते हैं, उसकी हंसी उड़ाते हैं और उससे दूरी बना लेते हैं। इससे दूसरे का तो कुछ नहीं बिगड़ता, हम स्वयं को अयोग्य, अकर्मण्य एवं अपराजित घोषित कर देते हैं। हम दूसरों की असफलता में सुख खोजने लगते हैं और इस नकारात्मक खुशी में अपनी वास्तविक प्रगति के अवसर खो भी देते हैं।

तुलनात्मक जाल में फंसने से बचने के लिए हमें अपने भविष्य-निर्माण का नक्शा स्वयं ही अपनी सीमाओं, आवश्यकताओं एवं क्षमताओं के अनुरूप निर्मित करना चाहिए। दूसरों की देखा-देखी से बात बिगड़ सकती है।किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने हेतु अपेक्षित परिश्रम एवं प्रयास करें। गलतियों के लिए दूसरों से क्षमा मांगकर, मन की कटुता को समाप्त करें। भले ही आप अभी लक्ष्यों से दूर हो, किन्तु वास्तविक खुशी अपने ढंग से जीने में है, दूसरों से तुलना करके नहीं।

तुलनात्मक प्रवृत्ति से बचने के लिए निम्न सुझाव उपयोगी हो सकते हैं—

अपनी विशेषताओं को पहचानें

हर व्यक्ति में कुछ न कुछ विशिष्ट गुण होते हैं। अपनी क्षमताओं, रुचियों और उपलब्धियों पर ध्यान दें। जब हम अपने गुणों को पहचानते हैं, तब दूसरों से तुलना करने की आवश्यकता कम हो जाती है।

स्वयं से प्रतिस्पर्धा करें

दूसरों से श्रेष्ठ बनने की अपेक्षा कल के अपने स्वरूप से अनुकूल बनने का प्रयास करें। छोटी-छोटी प्रगति भी आत्मसंतोष देती है।

कृतज्ञता का अभ्यास करें

जो हमारे पास है, उसके लिए ईश्वर और जीवन के प्रति आभार व्यक्त करें। कृतज्ञ व्यक्ति अधिक संतुष्ट रहता है और तुलना की आग में नहीं जलता।

सामाजिक माध्यमों का प्रभाव समझें

सोशल मीडिया पर लोग प्रायः अपने जीवन का केवल चमकदार पक्ष दिखाते हैं। उसे वास्तविकता मानकर स्वयं को कमतर समझना उचित नहीं।उसका बुद्धिमत्तापूर्ण, सीमित और संतुलित उपयोग करें।

अपनी परिस्थितियों को स्वीकार करें

हर व्यक्ति का संघर्ष अलग होता है। किसी की सफलता के पीछे वर्षों की मेहनत और कठिनाइयाँ छिपी हो सकती हैं। इसलिए केवल परिणाम देखकर तुलना न करें।

सकारात्मक संगति अपनाएं

ऐसे लोगों के साथ रहें जो प्रेरित करें, प्रोत्साहित करें और आपकी प्रगति में सहयोग दें। नकारात्मक और निरंतर तुलना करने वाले लोगों से दूरी रखें।

लक्ष्य स्पष्ट रखें

जब जीवन का उद्देश्य स्पष्ट होता है, तब मन इधर-उधर भटकता नहीं। अपने लक्ष्य पर केंद्रित व्यक्ति दूसरों की उपलब्धियों से विचलित नहीं होता।

आत्मस्वीकृति विकसित करें

अपनी कमियों और सीमाओं को स्वीकारना भी परिपक्वता है। पूर्णता किसी में नहीं होती। आत्मस्वीकृति से मन में शांति आती है।

प्रेरणा लें, ईर्ष्या नहीं

दूसरों की सफलता देखकर निराश होने के बजाय उनसे सीखने का प्रयास करें। तुलना के स्थान पर प्रेरणा का भाव अपनाएँ।

ध्यान और आत्मचिंतन करें

प्रतिदिन कुछ समय शांत बैठकर अपने विचारों का निरीक्षण करें। योग, ध्यान और प्रार्थना मन को स्थिर बनाते हैं तथा अनावश्यक तुलना की प्रवृत्ति को कम करते हैं।

महान संत कबीरदास ने कहा है—

"साईं इतना दीजिए, जामे कुटुम समाय।"

यह पंक्ति संतोष और संतुलित जीवन का संदेश देती है।

अंततः, तुलना का त्याग आत्मसम्मान और सुखी जीवन की दिशा में एक बड़ा कदम है। प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है। यदि हम अपनी ऊर्जा दूसरों को देखकर दुखी होने में न लगाकर स्वयं को उत्कृष्ट बनाने में लगाएँ, तो जीवन अधिक आनंदमय और सफल बन सकता है।

पुनर्जन्म अथवा नई संभावनाओं का उदय है सेवानिवृत्ति

सीताराम गुप्ता
पीतमपुरा,दिल्ली

फोटो : एआई

रिटायरमेंट किस दिन होगी ये तो पहले से ही पता होता है। जिस दिन व्यक्ति नौकरी शुरू करता है उसकी सर्विस बुक में उसकी रिटायरमेंट की तारीख़ भी लिख दी जाती है। इस दृष्टि से तो व्यक्ति की उलटी गिनती नौकरी के प्रारंभ होने के साथ ही शुरू हो जाती है अतः वह नौकरी प्रारंभ होने के साथ ही समाप्त-सा हो जाना चाहिए।

किसी की रिटायरमेंट को लेकर लोगों में बड़ी जिज्ञासा होती है। लोग इस संबंध में तरह-तरह के प्रश्न पूछते हैं। एक व्यक्ति ने अपने एक परिचित से पूछा, "अभी आपकी कितनी नौकरी बची है?" "अभी काफी है," उसने उत्तर दिया। उन्होंने फिर पूछा, "मेरा मतलब आपकी रिटायरमेंट कब है? कौन से साल में और कौन से महीने में?" परिचित ने साल और महीना बतलाया तो उन्होंने कुछ हिसाब लगाया और बोले, "आपकी उलटी गिनती शुरू हो गई है। केवल इतने साल, इतने महीने और इतने दिन बाक़ी रह गए हैं आपके।" "तो इससे क्या फर्क़ पड़ता है?" परिचित ने कहा। "फ़र्क़ क्यों नहीं पड़ता? बहुत पड़ता है। जब आदमी को ये पता चल जाता है कि नौकरी के गिने-चुने दिन शेष रह गए हैं तो वह समाप्त-सा ही हो जाता है, " उन्होंने ज़ोर देकर कहा।

रिटायरमेंट किस दिन होगी ये तो पहले से ही पता होता है। जिस दिन व्यक्ति नौकरी शुरू करता है उसकी सर्विस बुक में उसकी रिटायरमेंट की तारीख़ भी लिख दी जाती है। इस दृष्टि से तो व्यक्ति की उलटी गिनती नौकरी के प्रारंभ होने के साथ ही शुरू हो जाती है अतः वह नौकरी प्रारंभ होने के साथ ही समाप्त-सा हो जाना चाहिए। वैसे तो व्यक्ति के पैदा होने के साथ ही उसकी उलटी गिनती शुरू हो जाती है क्योंकि जो पैदा हुआ है उसकी मृत्यु भी निश्चित है। तो क्या फिर जीना ही छोड़ दें? नहीं, मृत्यु के भय के कारण जीवन जीने के आनंद का त्याग नहीं किया जा सकता। वैसे भी जीवनावधि अनिश्चित होती है तो क्या इस डर से काम करना अथवा जीना छोड़ दें?

व्यक्ति हर हाल में अपने अंतिम क्षण तक जीने को अभिशप्त या वरप्राप्त है लेकिन यदि जीवन क्वालिटी के साथ व्यतीत हो जाए तो कितना अच्छा हो! इसी प्रकार से जब तक सेवाकाल का एक दिन भी शेष है उसे महत्त्वपूर्ण मानते हुए केवल कर्म की ओर प्रवृत्त हुआ जाए। श्रीमद्भगवद्गीता में भी कहा गया हैः

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च,
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।

जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु भी निश्चित है और मृत्यु के पश्चात पुनर्जन्म

भी निश्चित है। अतः अपने अपरिहार्य कर्तव्यपालन में तुम्हें शोक नहीं करना चाहिए। जीवनक्रम में अपने कर्तव्य का पालन करते हुए शोकरहित रहना अनिवार्य है। कर्तव्य का पालन करते हुए यदि मृत्यु भी आए तो शोक नहीं करना चाहिए। जब मृत्यु को भी शोक का कारण नहीं माना गया है तो रिटायरमेंट कैसे शोक का कारण हो सकता है? यदि मृत्यु के पश्चात पुनर्जन्म संभव है तो रिटायरमेंट के बाद की अवस्था भी पुनर्जन्म से कम नहीं मानी जानी चाहिए।

लोग प्रायः कहते हैं कि रिटायरमेंट के बाद सक्रिय जीवन का अवसान हो जाता है लेकिन ये विचार ही भ्रामक है। किसी महीने की अंतिम तारीख तक तो हम एकदम सक्रिय रहते हैं लेकिन अगले महीने की पहली ही तारीख को प्रातः उठते ही हम कैसे निष्क्रिय हो सकते हैं? ये वास्तव में हमारी सोच का दोष है। इसके लिए हमारा अनुकूलन अथवा कंडीशनिंग हो चुकी है। इस स्थिति से उबरना ज़रूरी है। रिटायर हम नहीं होते रिटायर होता है हमारा कमज़ोर मन और उसमें उत्पन्न नकारात्मक विचार जो हमें रिटायर कर देते हैं। व्यक्ति जीते जी कैसे रिटायर हो सकता है? जब व्यक्ति किसी नौकरी अथवा व्यवसाय में होता है तो नियमित रूप से कार्य करता है। यदि हम सदैव कुछ न कुछ कार्य करते रहेंगे तो कभी रिटायर नहीं होंगे।

सेवानिवृत्ति अथवा रिटायरमेंट एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन है। एक नए जीवन की शुरुआत ही नहीं बल्कि पुनर्जन्म है सेवानिवृत्ति। जीवन में हर नया पल, हर परिवर्तन पुनर्जन्म ही होता है अतः हमें इतनी बड़ी घटना को तटस्थ होकर नहीं देखना चाहिए। इसे पुनर्जन्म के रूप में स्वीकार करना चाहिए। प्रसव शारीरिक रूप से एक कष्टप्रद स्थिति है लेकिन प्रसव के बाद नारी का पुनर्जन्म ही तो होता है जो अत्यंत आनंदप्रद स्थिति है। आप भी रिटायरमेंट को प्रसवोपरांत अवस्था के पुनर्जन्म की तरह लीजिए। इस मोड़ पर आकर जीवन समाप्त नहीं होता अपितु कार्यों के स्वरूप में परिवर्तन हो जाता है। नए उत्तरदायित्वों को वहन करने का अवसर मिलता है। साथ ही व्यक्ति को अपनी पसंद के अनुसार कार्यों के चुनने की स्वतंत्रता भी मिल जाती है जिससे कार्य करने का आनंद भी बढ़ जाता है।

रिटायरमेंट एक परिवर्तन है। इसे भी एक नई शुरुआत, एक बेहतर और नए जीवन की शुरुआत के रूप में स्वीकार कीजिए। सेवा अथवा व्यवसाय की व्यस्ताओं के कारण हम अपनी जिन इच्छाओं को पूरा नहीं कर पाते, उन्हें पूर्ण करने का इससे अच्छा अवसर उपलब्ध हो ही नहीं सकता। इस दौरान हम अपने परिवार ही नहीं समाज व राष्ट्र के लिए भी कुछ न कुछ बेहतर करने में सक्षम होते हैं।

ये हमारी ही मान्यता है कि साठ वर्ष के उपरांत व्यक्ति की कार्यक्षमता कम हो जाती है अतः सेवानिवृत्ति हो जानी चाहिए। परिवर्तन सृष्टि का नियम है। मनुष्य का जीवन भी परिवर्तन से अछूता नहीं रह सकता। रिटायरमेंट किसी अवस्था विशेष की स्थिति नहीं है बल्कि रिटायरमेंट तो हर क्षण घटित होने वाली स्थिति है। जब भी मौक़ा मिले रिटायर हो जाइए लेकिन अपने कमज़ोर मनोभावों तथा विकारों से। रिटायरमेंट एक परिवर्तन है। इसे भी एक नई शुरुआत, एक बेहतर और नए जीवन की शुरुआत के रूप में स्वीकार कीजिए। सेवा अथवा व्यवसाय की व्यस्ताओं के कारण हम अपनी जिन इच्छाओं को पूरा नहीं कर पाते, उन्हें पूर्ण करने का इससे अच्छा अवसर उपलब्ध हो ही नहीं सकता। इस दौरान हम अपने परिवार ही नहीं समाज व राष्ट्र के लिए भी कुछ न कुछ बेहतर करने में सक्षम होते हैं।

अलनीनो से प्रभावित होने के बाद भारत के पास क्या इंतजाम?

फोटो : एआई

फोटो : एआई

सौरभ वार्ष्णेय
उत्तम नगर, दिल्ली

दुनिया भर में जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रभावों के बीच अलनीनो एक बार फिर भारत के लिए चिंता का विषय बनता जा रहा है। प्रशांत महासागर के तापमान में असामान्य वृद्धि से उत्पन्न होने वाली यह मौसमी घटना भारतीय मानसून को सीधे प्रभावित करती है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में मानसून की थोड़ी-सी गड़बड़ी भी खेती, अर्थव्यवस्था, जल संकट और महंगाई पर व्यापक असर डालती है। ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि यदि अलनीनो का प्रभाव गहराता है, तो भारत के पास इससे निपटने के लिए क्या इंतजाम हैं?

भारत का लगभग आधा कृषि क्षेत्र आज भी वर्षा पर निर्भर है। अलनीनो के कारण मानसून कमजोर पड़ता है, वर्षा कम होती है और कई राज्यों में सूखे जैसी स्थिति पैदा हो जाती है। इसका सीधा असर किसानों की आय, खाद्यान्न उत्पादन और ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। यही नहीं, बिजली उत्पादन, पेयजल आपूर्ति और उद्योग भी प्रभावित होते हैं। इसलिए अलनीनो केवल मौसम की समस्या नहीं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक चुनौती भी है।

हालांकि, पिछले कुछ वर्षों में भारत ने इस दिशा में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। भारतीय मौसम विभाग अब पहले की तुलना में अधिक सटीक और समय रहते मौसम पूर्वानुमान जारी कर रहा है। उपग्रह तकनीक और आधुनिक वैज्ञानिक प्रणालियों के जरिए सरकार मानसून की स्थिति पर लगातार नजर रखती है। इससे राज्यों और किसानों को पहले से तैयारी करने में मदद मिलती है।

कृषि क्षेत्र में भी बदलाव की कोशिशें की जा

रही हैं। सरकार सूखा-रोधी बीजों को बढ़ावा दे रही है तथा किसानों को कम पानी वाली फसलों की ओर प्रेरित किया जा रहा है। “प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना” जैसी योजनाएं किसानों को प्राकृतिक आपदा से होने वाले नुकसान की भरपाई में सहारा देती हैं। इसके अलावा “प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना” के तहत ड्रिप और स्प्रिंकलर जैसी आधुनिक सिंचाई तकनीकों को प्रोत्साहित किया जा रहा है, ताकि कम पानी में अधिक उत्पादन संभव हो सके।

जल संरक्षण की दिशा में भी कई प्रयास हो रहे हैं। “जल शक्ति अभियान, तालाबों के पुनर्जीवन, वर्षा जल संचयन और भूजल संरक्षण जैसे कार्यक्रमों पर सरकार विशेष ध्यान दे रही है। कई राज्यों ने स्थानीय स्तर पर जल प्रबंधन को मजबूत करने के लिए सामुदायिक भागीदारी भी बढ़ाई है। यह समझना जरूरी है कि भविष्य में जल ही सबसे बड़ी चुनौती बनने वाला है।

ऊर्जा क्षेत्र में भी भारत अब केवल जलविद्युत पर निर्भर नहीं रहना चाहता। सौर और पवन ऊर्जा के विस्तार से ऊर्जा सुरक्षा मजबूत करने का प्रयास किया जा रहा है। यदि सूखे की स्थिति में जलाशयों का स्तर घटे, तब भी बिजली संकट को नियंत्रित किया जा सकेगा।

फिर भी यह कहना जल्दबाजी होगी कि भारत पूरी तरह तैयार है। आज भी कई ग्रामीण क्षेत्रों में सिंचाई की सुविधाएं सीमित हैं। जल संरक्षण योजनाएं कागजों से आगे नहीं बढ़ पातीं। किसानों तक समय पर सही जानकारी पहुंचाने में भी कई बार कमी दिखाई देती है। सबसे बड़ी चुनौती यह है कि जलवायु परिवर्तन अब पहले से अधिक अनिश्चित और गंभीर होता जा रहा है।

अलनीनो जैसी प्राकृतिक घटनाएं हमें यह संदेश देती हैं कि विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाए बिना भविष्य सुरक्षित नहीं हो सकता। भारत को केवल राहत योजनाओं पर नहीं, बल्कि दीर्घकालिक रणनीति पर ध्यान

अलनीनो जैसी प्राकृतिक घटनाएं हमें यह संदेश देती हैं कि विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाए बिना भविष्य सुरक्षित नहीं हो सकता। भारत को केवल राहत योजनाओं पर नहीं, बल्कि दीर्घकालिक रणनीति पर ध्यान देना होगा। जल संरक्षण, वैज्ञानिक खेती, हरित ऊर्जा और पर्यावरण सुरक्षा को राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाना समय की मांग है।

देना होगा। जल संरक्षण, वैज्ञानिक खेती, हरित ऊर्जा और पर्यावरण सुरक्षा को राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाना समय की मांग है।

यदि केंद्र और राज्य सरकारें, वैज्ञानिक संस्थान, किसान और आम नागरिक मिलकर जिम्मेदारी निभाएं, तो भारत अलनीनो जैसी चुनौतियों का मुकाबला मजबूती से कर सकता है। संकट बड़ा है, लेकिन तैयारी और सामूहिक प्रयास उससे भी बड़े हो सकते हैं।

अलनीनो से फसलों पर पड़ेगा प्रभाव ?

विश्व मौसम व्यवस्था में होने वाले बदलावों का सबसे अधिक असर कृषि पर पड़ता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में मानसून केवल मौसम नहीं, बल्कि करोड़ों किसानों की आजीविका और देश की खाद्य सुरक्षा का आधार है। ऐसे में जब प्रशांत महासागर में समुद्री तापमान बढऩे से “अलनीनो” की स्थिति बनती है, तब उसका सीधा प्रभाव भारतीय मानसून और फसलों पर दिखाई देता है। यही कारण है कि अलनीनो को भारतीय कृषि के लिए एक गंभीर चेतावनी माना जाता है।

अलनीनो के दौरान सामान्यतः भारत में वर्षा कम होती है। मानसून कमजोर पडऩे से खेतों में पानी की कमी हो जाती है और खरीफ फसलें सबसे अधिक प्रभावित होती हैं। धान, मक्का, सोयाबीन, दालें और गन्ना जैसी फसलें पर्याप्त वर्षा पर निर्भर रहती हैं। जब समय पर बारिश नहीं होती, तब बुआई में देरी होती है, उत्पादन घटता है और किसानों की लागत बढ़ जाती है। कई क्षेत्रों में सूखे जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

धान की खेती पर अलनीनो का प्रभाव विशेष रूप से गंभीर माना जाता है। धान को अधिक पानी की आवश्यकता होती है, लेकिन वर्षा कम होने पर खेत सूखने लगते हैं और उत्पादन में भारी गिरावट आती है। इसी प्रकार दालों और तिलहन की फसलें भी कमजोर मानसून से प्रभावित होती हैं। पशुपालन पर भी इसका असर पड़ता है क्योंकि चारे की उपलब्धता कम हो जाती है।अलनीनो केवल खेती तक सीमित समस्या नहीं है, बल्कि इसका असर देश की अर्थव्यवस्था पर भी पड़ता है। जब कृषि उत्पादन घटता है तो खाद्यान्न की कीमतें बढऩे लगती हैं। इससे महंगाई बढ़ती है और आम जनता पर आर्थिक बोझ पड़ता है। किसानों की आय घटने से ग्रामीण बाजारों की क्रय शक्ति भी कमजोर होती है।हालांकि, वैज्ञानिक तकनीकों और सरकारी तैयारियों के माध्यम से इसके प्रभाव को कम किया जा सकता है। मौसम पूर्वानुमान प्रणाली को मजबूत बनाना, सूखा-रोधी बीजों का उपयोग, जल संरक्षण, ड्रिप सिंचाई और फसल विविधीकरण जैसे उपाय किसानों को राहत दे सकते हैं। सरकार को समय रहते बीमा योजनाओं और राहत पैकेजों को प्रभावी ढंग से लागू करना चाहिए ताकि किसानों को नुकसान की भरपाई मिल सके।भारत को अब पारंपरिक खेती के साथ-साथ जलवायु परिवर्तन के खतरों को ध्यान में रखकर कृषि नीति बनानी होगी। अलनीनो यह संकेत देता है कि प्रकृति के बदलते स्वरूप के सामने केवल मेहनत नहीं, बल्कि वैज्ञानिक सोच और बेहतर प्रबंधन भी आवश्यक है। यदि समय रहते तैयारी की जाए तो इस चुनौती को अवसर में बदला जा सकता है और देश की कृषि व्यवस्था को अधिक मजबूत बनाया जा सकता है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार, चिंतक, कृषि जानकार, राजनीतिक विधि विचारक हैं।)

समझना - समझाना

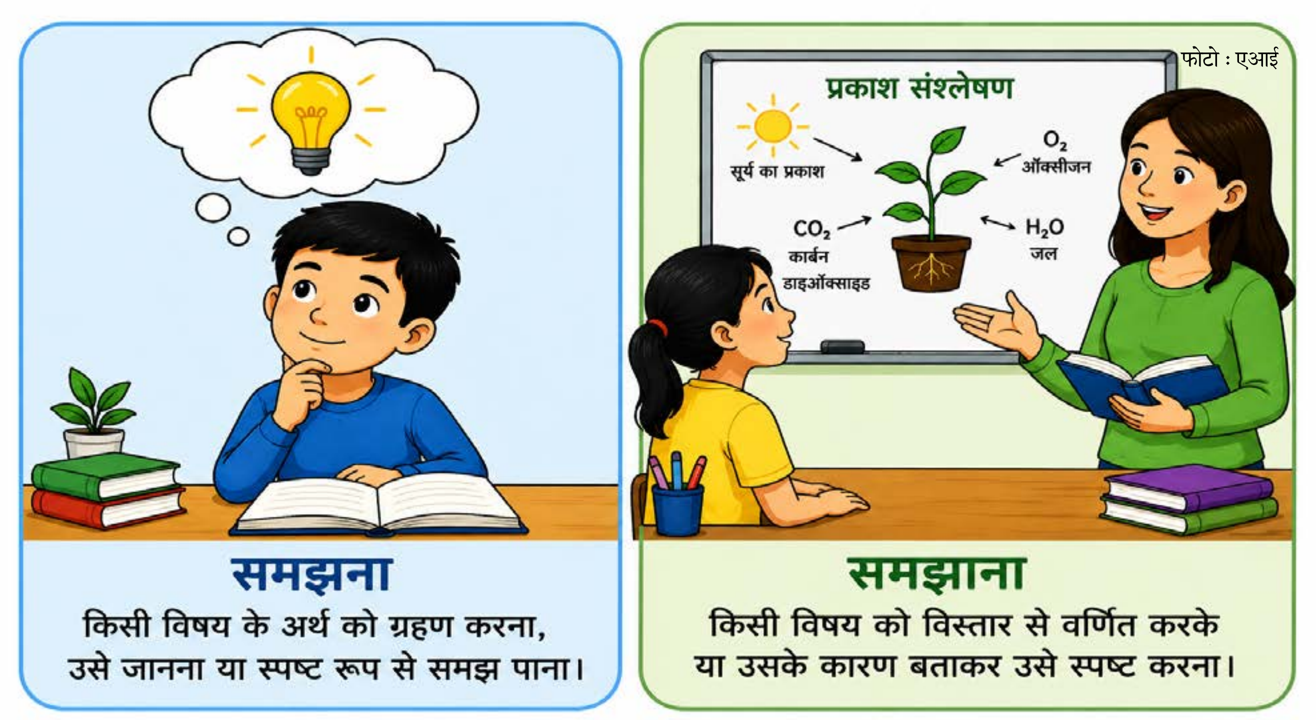

फोटो : एआई

गुरुवर कहते है कि कोई कुछ नहीं सीखना चाहता व्यक्ति अपनी जरूरत के हिसाब से जुड़ता है। जैसे ही उसका स्वार्थ पूरा हो जाता है वह पुनः अपना रास्ता पकड़ लेता है। या जब तक उसकी स्थिति ठीक नहीं होती तब तक तो बात समझता है फिर उसे उन्हीं बातों में कमी नजर आने लगती है। आधिकतर यह होता है कि व्यक्ति कमजोर परिस्थिति में समझौता करके चलता है। जैसे ही उनकी स्थिति में सुधार होता है वे वापस से अपने अनुसार चलने लगते हैं। हम किसी को कुछ समझा नहीं सकते न ही कोई समझने के लिए अंदर से तैयार ही होता है। गुरुवर इसका मर्म समझाते हुए कहते है कि हर किसी का आपना गुण होता है उनका अपना रासायन होता है जो कि सभी का अलग अलग होता है।

उमेश मानव

आज हम सीखने सीखाने वालो की भीड़ देख रहे है। आजकल हर कोई कुछ न कुछ ऐसा सीखना चाहता है, जानना चाहता है। जिससे वह पहले से बेहतर इंसान बन सके, अपनी परेशानियों से पार पा सके, वही समाज में वह बाकियो से अलग और अच्छा इंसान कहलाये। यह देखते हुए आज हर जगह आपको कई लोग मिल जायेंगे जो सिखाने को तत्पर है। इनमें से कुछ अच्छे पर अधिकतर छलावे वाले लोग मिल जायेंगे। यहां तक इसका एक बहुत बड़ा बाजार बन चुका है। जो लोगो कि भावनाओं का फायदा उठाकर पैसे बना रहा है। वास्तव में एक बहुत बड़ा वर्ग है जो आज के समय में आध्यात्मिकता की तरफ अग्रसर है। यह जरूर है कि इसकी वास्तविकता को जाने बिना लोग इस राह पर आगे चले जा रहे है। कुछ के लिए यह आज फैशन सा बन गया है। कुछ अपने जीवन की दुशवारियों से पार पाने के लिए इसका सहारा लेते है। इन सारी बातों के लिए लोगो को कोई ऐसा व्यक्ति चाहिए जो उन्हें उनके उद्देश्य को पूरा करने में सहायता कर सके। इन सभी बातों के बीज हम यह देखते है कि लोगो को सीखाने के लिए एक प्रकार का उद्योग तैयार

है और मुनाफा कमा रहा है। यहाँ आपको आपकी इच्छा के अनुसार पैकेज दिये जाते है। आपकी सुविधा अनुसार सीखाया जाता है। इन सभी बातों के बीज जो अहम बात है उस पर गुरुवर ध्यान ले जाते है और कहते है कि 'सीखाने वाले बहुत है और सीखने वाले भी बहुत है पर वास्तव में कोई कुछ सीख पाया कोई बदल पाया? गुरुवर कहते है कि कोई कुछ नही सीखना चाहता व्यक्ति अपनी जरूरत के हिसाब से जुड़ता है। जैसे ही उसका स्वार्थ पूरा हो जाता है वह पुनः अपना रास्ता पकड़ लेता है। या जब तक उसकी स्थिति ठीक नहीं होती तब तक तो बात समझता है फिर उसे उन्हीं बातों में कमी नजर आने लगती है। आधिकतर यह होता है कि व्यक्ति कमजोरी परिस्थिति में संमझौता करके चलता है। जैसे ही उनकी स्थिति में सुधार होता है वे वापस से अपने अनुसार चलने लगते है।

हम किसी को कुछ समझा नहीं सकते। न ही कोई समझने के लिए अंदर से तैयार ही होता है। गुरुवर इसका मर्म समझाते हुए कहते है कि हर किसी का आपना गुण होता है उनका अपना रासायन होता है। जो कि सभी का अलग अलग होता है। व्यक्ति अपने रासायन के अनुसार ही कार्य करता है। व्यक्ति को अपने रासायनिक गुण के अनुसार ही चीजें समझ में आती है। व्यक्ति अपने गुण रासायन के हिसाब से ही गतिमान होता है और व्यक्ति का मिलान भी उनके गुण रासायन के अनुसार ही होता है। कोई जितना भी समझाये - सीखाये व्यक्ति अपने रासायन के अनुसार ही ग्रहण करता है। न ही उससे कम और न ही उससे ज्यादा। रहस्यात्मक बात यह है कि जब जिस वक्त व्यक्ति के अंतर जिस अवस्था की परत खुलनी होती है। उस समय वैसे ही गंध रासायन का मिलान ही होता है। बाहर से चाहे जितना भी प्रयास कर लिया जाये चाहे जितना भी दबाव बनाया जाये। समझ में वही आयेगा उतना ही मिलान होगा जितना और जिस रासायनिक प्रभाव में व्यक्ति आंतरिक रूप से होगा। आंतरिक स्थिति का ही प्रभाव बहार दिखाई देता है।

हमारा स्वभाव स्थाई होता है। वह नही बदलाता, हम इसी एक गुण को धारण करते है। प्रकृति का यही उपहार गुण रूप में हमें मिला है। यही हमारा रसायन है यही हमारा रहस्य भी है। इसी का विस्तार करने हम आये है। इसी बात को गुरुवर स्पष्ट करते है कि हम यदि हम अपने ही स्वभाव पर चल रहे है और किसी के समझाने से नही समझ रहे है। हमारा स्वभाव चाहे जैसा हो हमे अपने अनुसार ही जीना है। यही प्रकृति है। प्राकृतिक कायदा यही है। हमारा अस्तित्व भी यह है। तो यदि कोई किसी के समझाने में नही आ रहे अपने अनुसार जी रहे है तो यह सही है।

उदाहरण के तौर पर एक साधारण सरल सा उदाहरण लिया जा सकता है। मान ले कोई नई अवस्था का नवजवान है। उसकी मानसिक स्थिति और आंतरिक वस्था एक प्रकार की होगी। अब इसके विपरीत कोई अन्य गंध रासायन का प्रभाव बल पूर्वक उस नवजवान की वर्तमान अवस्था से कराने का प्रयास किया जाये तो परिणाम अप्रिय ही होगा। इसको ऐसे भी समझ सकते है कि कच्ची मिट्टी से तैयार घड़ा है तो घड़े के रूप में ही परन्तु अभी पानी अपने में धारण करने के लिए अभी परिपक्व नहीं है। ऐसे में हम उसमें पानी डाले तब क्या होगा। बिखर जायेगा। वहीं उसे पकने का समय दे उसकी अवस्था को परिपक्व होने दे तब वह पानी को अपने मे धारण कर सकेगा और अपने अस्तित्व को पूर्ण कर सकेगा। इसी प्रकार मानव मे भी अवस्था के हिसाब से एहसास होता है। जागरुकता आती है। इससे जिससे हम समझना कहते है वह परत खुलती है। अब हम परिपक्व हुए। समझना यह है कि यह स्वतः ही होता है। इसमें कोई बल नहीं चलता यह प्रकृति का नियम है। अतः किसी को सीखाने समझने का कोई अर्थ नही। किसी ज्ञान की, किसी समझ की बात नहीं यह एक घटना के समान है। अवस्था की बात है स्वयं ही घटित होती और इसमें हर व्यक्ति का एहसास अलग होता है। किन्हीं दो का एक जैसा नहीं होता। तब ज्ञान भी एक जैसा सभी के लिए नही हो सकता।

गुरुवर कहते है कि व्यक्ति अपने स्वभाव के अनुरूप ही चलता है। वह दिखावा तो किसी और की तरह होने का कर सकता है परन्तु चलता अपने ही स्वभाव पर है। कोई यह सोचे कि वह किसी को समझा सकता है या कोई व्यक्ति कुछ समझ सकता है। तो यह भ्रम है। यदि आप किसी के शुभ चिंतक बनकर उसे समझाना चाह रहे है। तो यह उसकी अवस्था पर ही निर्भर करता है। अपकी कबिलियत पर नहीं। किसी की आंतरिक अवस्था में जब बदलाव आता है तभी बदलाव स्थाई होता है।

गुरुवर आगे और स्पष्ट करते है कि हमारा स्वभाव स्थाई होता है। वह नही बदलाता, हम इसी एक गुण को धारण करते है। प्रकृति का यही उपहार गुण रूप में हमें मिला है। यही हमारा रसायन है यही हमारा रहस्य भी है। इसी का विस्तार करने हम आये है। इसी बात को गुरुवर स्पष्ट करते है कि हम यदि हम अपने ही स्वभाव पर चल रहे है और किसी के समझाने से नही समझ रहे है। हमारा स्वभाव चाहे जैसा हो हमे अपने अनुसार ही जीना है। यही प्रकृति है। प्राकृतिक कायदा यही है। हमारा अस्तित्व भी यह है। तो यदि कोई किसी के समझाने में नही आ रहे अपने अनुसार जी रहे है तो यह सही है।

कु व्यवस्थाओं की भेंट चढ़ता छात्रों का भविष्य

ईशा त्रिपाठी
मनो सामाजिक सलाहकार, वाराणसी

प्रतियोगी परीक्षाओं में चाहे अपने प्रयासों अथवा प्रशासनिक कुव्यवस्था के कारण बार-बार मिलने वाली असफलता और अनिश्चितता युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य को बुरी तरह प्रभावित कर रही है। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी एक लंबी प्रक्रिया है जब छात्र कई वर्षों की कड़ी मेहनत के बाद भी सफल नहीं हो पाए या प्रशासन की कुव्यवस्था के कारण परीक्षाएं रदद हो जाए तो उन्हें कई प्रकार के मानसिक परेशानियां जिसमें अवसाद, चिंता, घबराहट और आत्महत्या जैसे रोग परिलक्षित होने लगते हैं। कुछ में निम्न लक्षण जैसे

एकांतवास : छात्र अकेले में बैठने लगता है, अपने को दूसरों से अलग-अलग रखने लगता है।

आत्म संदेह : व्यक्तियों में अपनी क्षमताओं पर शक करने लगना और खुद को हर चीज के लिए दोषी मानने लगता हैं।

भविष्य की अनिश्चिताएं: भविष्य को लेकर अत्यधिक चिंता के कारण दिल की धड़कन का बढ़ना, पसीना आना, बेचैनी, अनिद्रा एवं कई प्रकार की शारीरिक समस्याएं घर करने लगती हैं। छात्रों की मनःस्थिति बिगड़ने के पीछे केवल परीक्षा का डर नहीं बल्कि अन्य कई कारक भी जिम्मेदार होते हैं

अत्यधिक अपेक्षाएं : माता-पिता जो कि अपने होनहार छात्र के लिए कभी-कभी जमीन जायदाद बेचकर या फिर घर गिरवी रखकर पढ़ाए होते हैं या वे मां-बाप जो बच्चों

के लिए सिर्फ इसलिए पैसे लगाए होते हैं कि वह डॉक्टर, इंजीनियर आदि बनाकर उनके सामाजिक स्तर को बढ़ाएगा इत्यादि इत्यादि।

सीमित अवसर

बार-बार पेपर लीक होने और परीक्षाओं के रद्द होने या सालों तक परिणाम न आने से छात्रों का भविष्य अधर में लटक जाता है।किसी किसी परीक्षा में 2 या 3 अवसर ही मिलते है तो समय के साथ बच्चों का अवसर छिन जाता है। समाज में केवल सरकारी नौकरी को ही सफलता का अंतिम पैमाना मान लिया जाना अधिकतर छात्रों में हीन भावना को जन्म देती है।

इसी प्रकरण में मई माह में या और पीछे जाए तो पिछले साल भी NEET यूजी परीक्षाओं के आयोजनों उसके उपरांत पेपर लीक खुलासे और अंततः परीक्षा के अचानक रद्द होने के बाद हमने छात्रों के मानसिक पटल पर अनेकानेक भयभीत कर देने वाले विचार, भविष्य का सूना पन ,पारिवारिक अपेक्षाएं से जुड़ी भावनाएं और सबसे अधिक तो परीक्षा के अटेम्प्ट की सीमाएं या उम्र की बाध्यता, हमारे छात्रों के भावी भविष्य को झकझोर कर रख देना पाया गया। यह बेचैनी ,उलझन, उदासियां ,घबराहट,अनिद्रा में परिवर्तित होकर छात्र-छात्राओं के मानसिक जीवन को बुरी तरह तार तार कर दे रही है या यूं कहें कि सिर्फ एक छात्र ही नहीं वरन अभिभावक भी अपने मानसिक स्थिति को स्वस्थ नहीं रख पा रहे हैं। अपने बच्चों के सुनहरे भविष्य को बुनने के लिए अपना सब कुछ निछावर करने वाले अभिभावक भी इस पीड़ा से नित्य प्रतिदिन मानसिक त्रासदी में फसते जा रहे हैं, व्यवस्था की लापरवाही या अनदेखी इतने बड़े स्तर पर सामाजिक मानसिक हानि नागरिकों एवं छात्रों को कुप्रभावित करती जा रही है इसकी भयावता की कल्पना मात्र से ही आत्मा सिहर उठती है आज का यह लेख केवल एक मनो सामाजिक परामर्शदाता की दृष्टिकोण से नहीं वरन् उन लाखों माता-पिता की आत्मा तक झकझोर देने वाली लाचारी और बेबसी व्यक्त करने के लिए लेखनी बद्ध कर रही हूं। जो कि इस समय अपने बच्चों की सूनी आंखों में कितने सरल सीधे और मासूम सवालों को आता जाता और भविष्य की सूनेपन से प्रभावित आत्म विच्छेदन या आत्महत्या के विचारों को आता जाता देख कर एक खौफ में जीवन जी रहे हैं।

चिंता और घबराहट का एक भयानक चक्रव्यूह : NEET जैसी कठिन राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा की तैयारी करना अपने आप में किसी भी कठोर परिश्रम या तपस्या से कम नहीं है भारत में चिकित्सा शिक्षा में प्रवेश पाने के लिए हर साल लगभग 22 लाख से अधिक छात्र छात्राएं अपने जीवन का सुनहले वर्षो को एक एकांत कमरे में बंद करके निकाल देते है, ना कोई सामाजिक उल्लास,न कोई व्यक्तिगत मनोरंजन,न हो दोस्तों के साथ उठना बैठना, सिर्फ और सिर्फ डॉक्टर बनने का सपना ,14 से 16 घंटे का निरंतर प्रयास हर पल छात्राओं को तनाव की स्थिति में रखता है, जिससे अनावश्यक ही कॉर्टिसोल और एंडॉनेल हार्मोन का अत्यधिक दबाव उनके मन और मस्तिष्क को बर्दाश्त करना पड़ता है। बस उस दिन की उम्मीद में की इस मानसिक और शारीरिक दबाव, थकावट का अंतिम

दिन प्रवेश परीक्षा को अच्छे से पार करना है। जिस दिन वह परीक्षा प्रतियोगिताएं हो जाएगी उसी दिन उनको मानसिक एवं सामाजिक इस कारावास से छुटकारा मिल जाएगा, यही सोच लिए जब यह होनहार छात्र-छात्राएं मेडिकल प्रवेश परीक्षाओं को देकर लौटते है तो उस वक्त उनके मन में प्रसन्नता होती है। पर परीक्षा के ठीक बाद जो होता है वह उनकी दुनिया को एकदम उलट पलट कर रख देता है उनके सपनों के शीशे को चूर-चूर कर देता है पेपर लीक की खबरें और उनके साथ नेशनल टेस्टिंग एजेंसी द्वारा परीक्षा को रद्द करने और दोबारा आयोजित कराए जाने के फैसले मनोबल को तोड़ देता है जिससे उनमें तनाव उत्पन्न हो जाता है।

यह तनाव व उदासी उनको दूर-दूर तक निराशा के ब्लैकहोल में धकेल देती है जिसमें वो खुद को मन की लाचारी से घिरे हुए पाते हैं।यही सीखा हुआ सहायता हीनता (हेल्पलेस) बच्चों में गहरी पैठ बनाकर उनको आत्मघाती क्रियाओं में सम्मिलित कर देता है। देश में छात्र आत्म हत्याओं के आंकड़े किसी राष्ट्रीय आपातकाल से कम नहीं है नेशनल क्राईम रिकॉर्ड्स ब्यूरो एनसीआरबी के वर्तमान आंकड़ों के अनुसार भारत में हर दिन लगभग 40 छात्र खासकर उच्च शिक्षण संस्थानों में अपनी जान गंवा रहे हैं। नीट प्रवेश परीक्षाओं की लगातार दूसरी बार प्रवेश परीक्षा पेपर लीक होने और रद्द करने के उपरांत दोबारा कराए जाने के काले दौर ने इस संकट को और भी अधिक भयानक बना दिया है, जिसके चलते कितने ही होनहार छात्र-छात्राओं ने 90 से 95 अंक लाने के बावजूद भी आत्महत्या करना श्रेष्ठ समझा और पूरे देश को झकझोर कर रख दिया है, इन आत्महत्या करने वाले छात्र-छात्राओं की बस इतनी ही गलती थी कि उन्होंने देश की परीक्षा प्रणाली पर भरोसा किया और ईमानदारी से दिन-रात पढ़ाई किया।

अभिभावकों का भी टूटता भरोसा और उम्मीद :

इस पूरे परिदृश्य में सबसे मर्मस्पर्शी और दर्दनाक भूमिका अभिभावकों की है, जिन्होंने अपने बच्चों के सपनों को सच करने के लिए अपनी पूरी जिंदगी की जमा पूंजी तथा अपने खुद की जरूरतों को भुला, बच्चों की आवश्यकता पर लगा दी आज एक अभिभावक के तौर पर लाचारी इतनी ही गहरी है कि बिना किसी गलती को किए वह अपने ही घर में बच्चों से नजरें चुराने के लिए मजबूर हैं।

अभिभावक दिन रात इसी डर में जीते हैं कि कहीं उनका बच्चा कमरे में बंद होकर कोई गलत कदम ना उठा ले। जब बच्चे चुपचाप होकर सूनी आंखों से छत को निहारते हैं तो उनका दिल बैठ जाने लगता है,बेचारे अभिभावक अपने बच्चों के सुनहरे भविष्य के लिए अपनी गाढ़ी कमाई को कोचिंग संस्थानों की महंगी फीस में झोंक देते हैं अपनी खुद की इच्छाओं की दबा करके बच्चों की हर किताब, हर टेस्ट सीरीज दिलवाते हैं लेकिन अंत में उन्हें क्या मिलता है एक रद्द परीक्षा का नोटिफिकेशन और अपने बच्चों की बिखरती हुई मानसिक स्थिति। पर उनकी बेबसी देखिए की उनके और उनके बच्चे के भविष्य को डकार जाने वाले इस तंत्र का वो कुछ भी नहीं कर पा रहे।

इससे कैसे पार पाया जाए : ये बात बार बार मन में आती है। ऐसे में अभिभावकों को बच्चों की तुलना दूसरे बच्चों से नहीं करनी चाहिए कि उनका बच्चा तो इन परिस्थितियों से उबर के फिर से तैयारी करने लग गया तुम नहीं कर रहे हो ऐसे में बच्चों की भावनाएं और आहत होती हैं और वह अपने आप को और हीनता में डालते हैं, बच्चों को उनकी दुखद भावनाएं व्यक्त करने दे बच्चों को बोलने दे, उनके दिमाग में जो भी परेशानी उलझन बेचैनी है उसको निकल जाने दे वह आपसे जब गुस्सा व्यक्त करें और व्यवस्था को कोशे तो उसे बोलने दे उसको भरोसा दिलाए कि तुम्हारा गुस्सा और तुम्हारा दुख पूरी तरह सही है, तुमने बहुत मेहनत की थी और तुम्हारे साथ जो हुआ गलत है जिससे वह इमोशनल सपोर्ट पाएंगे और उनको लगे गा कि उनके माता-पिता उनकी तकलीफ को समझ रहे हैं। जिससे उनका मानसिक बोझ कम हो जाएगा। अभिभावक बच्चों के प्रयास की सराहना करें परिणाम की नहीं बच्चों से बोलने की उनका ज्ञान और उनकी मेहनत कहीं चोरी नहीं हुई है पेपर लीक होना महज कागज का चोरी हो जाना है, तुम्हारी प्रतिभा का नहीं। अभिभावकों को भूलकर भी बच्चों को बार-बार पैसे के ताने ना मारे कि तुम्हारी कोचिंग में इतने लाख बर्बाद हो गए, या तुम्हारी कोचिंग के लिए हमने जमीन इत्यादि गिरवी रख दिया या अपने सपनों को अधूरा छोड़ दिया,क्योंकि बच्चे इससे अपराध और ग्लानि में फंस जाएंगे और अवसाद में आ जाएंगे।शारीरिक और मानसिक संतुलन बनाने के प्रयास में आप अपने बच्चों के साथ प्राकृतिक स्थलों पर घूम सकते हैं, कुछ मनोरंजन और मन के बोझ को कम कर सके ऐसे खेल खेल सकते हैं। मानसिक शांति के लिए धार्मिक स्थानों में जा सकते है।बच्चों को रिलेक्सेशन एक्सरसाइज़ करवा सकते है। अभिभावकों को चाहिए की परीक्षा रद्द होने के तुरंत बाद ही अपने बच्चों को किताबों और नोटस इत्यादि को खंगालने के लिए ना कहें उनको इस सब से अथवा थकावट से उबरने दे क्योंकि इससे वह चिड़चिड़ा और उदास हो जाने से बच पाएंगे। सिस्टम की कमियों का गुस्सा बच्चों पर ना निकले समाचार, टीवी चैनलों पर आ रही खबरों से आपके आक्रामक व्यवहार से बच्चों में नकारात्मकता आएगी और भीतर के डर और आसुरक्षा की भावना उसमें और बढ़ जाएगी। जो कि स्थिति और बिगाड़ देगी।

इसके बाद भी अगर अभिभावकों को यह लगता है की परिस्थितियों या बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य उनके संतुलन के बाहर जा रहा है तो व्यावसायिक मदद लेने में भी गुरेज न करें और उसको किसी मनोरोग विशेषज्ञ को देखना है या मानसिक टैली मानस पर उसके बारे में बातचीत चर्चा या काउंसलिंग ले सकते हैं।

मधुमक्खियां, मानव और प्रकृति : साझी जिम्मेदारी

सुनील कुमार महला
पिथौरागढ़, उत्तराखंड

मधुमक्खियों की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका परागण में सहायता करना है। वे फूलों के बीच पराग पहुंचाकर पौधों में प्रजनन की प्रक्रिया को बढ़ावा देती हैं, जिससे फल, बीज और नए पौधों का उत्पादन संभव होता है। इसके अतिरिक्त वे शहद का उत्पादन करती हैं, जो मानव के लिए एक मूल्यवान खाद्य पदार्थ और औषधीय स्रोत है। कहना गलत नहीं होगा कि परागण की यह प्रक्रिया खाद्य-सुरक्षा, पोषण सुरक्षा और पृथ्वी के पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने के लिए अत्यंत आवश्यक है। मधुमक्खियां वन्यजीवों के लिए भोजन और आश्रय उपलब्ध कराने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

प्रतिवर्ष 20 मई को संयुक्त राष्ट्र(यूएन) द्वारा घोषित विश्व मधुमक्खी दिवस (वर्ल्ड बी डे) मनाया जाता है। वास्तव में इस दिवस को मनाने के पीछे का मुख्य उद्देश्य मधुमक्खियों और अन्य परागणकर्ताओं के महत्व के प्रति आम लोगों को जागरूक करना तथा उनके संरक्षण की दिशा में वैश्विक प्रयासों को प्रोत्साहित करना है। हमें यह बात अपने जेहन में रखनी चाहिए कि मधुमक्खियां केवल और केवल शहद बनाने वाली छोटी सी जीव मात्र ही नहीं हैं, बल्कि वे इस पृथ्वी पर जीवन, खाद्य सुरक्षा, जैव- विविधता और पारिस्थितिक संतुलन की अत्यंत महत्वपूर्ण व अहम् कड़ी हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि यदि मधुमक्खियों का अस्तित्व संकट में पड़ता है, तो मानव जीवन, कृषि और पर्यावरण भी गंभीर संकट में आ जाएंगे। इसलिए मधुमक्खियों का संरक्षण केवल और केवल पर्यावरणीय आवश्यकता ही नहीं है, बल्कि उनका जीवन प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप में कहीं न कहीं मानव अस्तित्व की भी अहम् आवश्यकता है। अतः हमें अधिक से अधिक पेड़-पौधे लगाने, धरती से रासायनिक कीटनाशकों के उपयोग को कम करने, जैविक खाद का अधिक उपयोग करने, जैविक खेती अपनाने तथा प्राकृतिक जैव-विविधता को बचाने की दिशा में अपने सामूहिक व यथेष्ठ प्रयास करने होंगे। पाठक जानते होंगे कि खेती, जैव-विविधता और खाद्य सुरक्षा में मधुमक्खियों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वास्तव में, इस दिवस को मनाने के प्रमुख उद्देश्यों में मधुमक्खियों और अन्य परागणकर्ताओं के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना, जैव-विविधता और खाद्य-सुरक्षा की रक्षा करना, मधुमक्खियों पर मंडरा रहे खतरों

जैसे कि खेती में कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग, जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और उनके प्राकृतिक आवासों के विनाश की ओर ध्यान आकर्षित करना, सतत कृषि और मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देना तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था और किसानों की आय में मधुमक्खी पालन के योगदान को रेखांकित करना आदि शामिल है। हाल फिलहाल, यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि पिछले वर्ष इस दिवस की थीम-'प्रकृति से प्रेरित मधुमक्खियां, हम सभी का पोषण करती हैं' रखी गई थी, जबकि इस वर्ष 2026 की थीम-'लोगों और पृथ्वी के लिए मधुमक्खियों के साथ मिलकर कार्य करें' निर्धारित की गई है।

बहरहाल,यदि हम यहां पर इस दिवस के इतिहास की बात करें, तो इसकी शुरुआत का प्रस्ताव सर्वप्रथम यूरोपीय देश स्लोवेनिया ने रखा था। गौरतलब है कि संयुक्त राष्ट्र महासभा ने वर्ष 2017 में 20 मई को विश्व मधुमक्खी दिवस घोषित किया तथा पहली बार यह दिवस वर्ष 2018 में मनाया गया। 20 मई की तिथि इसलिए चुनी गई, क्योंकि इसी दिन आधुनिक मधुमक्खी पालन के अग्रदूत एंटोन जान्सा का जन्म हुआ था।

मधुमक्खियों के महत्व की यदि हम बात करें तो ये नीले ग्रह (पृथ्वी) के पारिस्थितिक संतुलन की प्रमुख आधारशिला मानी जाती हैं। एक उपलब्ध जानकारी के अनुसार लगभग 75 प्रतिशत खाद्य फसलें किसी न किसी रूप में परागणकर्ताओं पर निर्भर हैं, जबकि दुनिया के लगभग 90 प्रतिशत जंगली पुष्पीय पौधों के प्रजनन में परागण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। फल, सब्जियां, तिलहन, मेवे तथा अनेक औषधीय पौधों का उत्पादन मधुमक्खियों के कारण ही संभव हो पाता है। ये जैव-विविधता को बनाए रखने में सहायता करती हैं तथा कृषि उत्पादन और किसानों की आय बढ़ाने में भी सहायक होती हैं। यदि मधुमक्खियां न रहें, तो खाद्य-श्रृंखला और संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र गंभीर रूप से प्रभावित हो सकता है।

पाठकों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि एक मधुमक्खी अपने पूरे जीवन(जीवनकाल में) में लगभग एक चम्मच का बारहवां हिस्सा ही शहद बना पाती है और एक किलोग्राम शहद तैयार करने के लिए मधुमक्खियों को लाखों फूलों से बहुत मेहनत से रस एकत्र करना पड़ता है।इसके अलावा, मधुमक्खियां पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र और सूर्य की दिशा के आधार पर अपना रास्ता पहचान सकती हैं। उनका 'वैगल डांस' एक विशेष संचार प्रणाली है, जिसके माध्यम से वे अन्य मधुमक्खियों को भोजन की दिशा और दूरी तक की जानकारी देती हैं। शहद हजारों वर्षों तक भी खराब नहीं होता है; यहां तक कि मिस्र के पिरामिडों में मिला शहद भी खाने योग्य पाया गया था। मधुमक्खी दिखने में भले ही एक छोटा सा जीव/कीट है लेकिन आज मधुमक्खी पालन ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार और अतिरिक्त आय का महत्वपूर्ण स्त्रोत बनता जा रहा है।पृथ्वी पर लगातार बढ़ती आबादी, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और तीव्र विकास गतिविधियों के कारण ग्रीनहाउस गैसों का दबाव निरंतर बढ़ रहा है। कहना गलत नहीं होगा कि आज नीला ग्रह कही जाने वाली पृथ्वी पर मानवीय गतिविधियों के कारण जलवायु में व्यापक परिवर्तन हो रहे हैं। इन परिवर्तनों का प्रभाव तापमान, मौसम-चक्र, हिमखंडों, महासागरों और प्राकृतिक तंत्रों पर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। इसका असर मानव जीवन के साथ-साथ वनस्पतियों और कीट प्रजातियों पर भी पड़ रहा है, विशेष रूप से मधुमक्खियों पर। आज मधुमक्खियों की संख्या निरंतर घटती जा रही है और इसका खुलासा हाल ही में जर्मनी के वैज्ञानिकों द्वारा किए गए शोधों में भी हुआ है। कुछ शोधों और अध्ययनों में यह अनुमान लगाया गया है कि 1970 के दशक के बाद से कीट बायोमास, विशेषकर मधुमक्खियों की संख्या, लगभग आधी रह गई है। जूलियस मैक्सिमिलियन्स यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों द्वारा किए गए एक अध्ययन में जर्मनी के 179 क्षेत्रों में भूमि उपयोग और बढ़ते तापमान के संयुक्त प्रभावों का विश्लेषण किया गया। इस अध्ययन के निष्कर्ष रॉयल सोसाइटी ऑफ बायोलॉजी की पत्रिका 'बायोलॉजिकल साइंसेज' में प्रकाशित हुए। अध्ययन में सामने आया कि मधुमक्खियां केवल दिन के उच्च तापमान से ही नहीं, बल्कि औसत से अधिक गर्म रातों से भी प्रभावित होती हैं। जानकारी के अनुसार रात के औसत तापमान में वृद्धि दिन के तापमान की तुलना में अधिक तेज़ी से हो रही है, जिससे कीटों पर अतिरिक्त दबाव पड़ रहा है।इतना ही नहीं, आज मधुमक्खियों को खुले क्षेत्रों में आवास बनाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। हालांकि, वे बढ़ते तापमान से निपटने में काफी सक्षम होती हैं, फिर भी कृषि भूमि, प्राकृतिक आवासों के विनाश, वायु प्रदूषण, खेती में अंधाधुंध कीटनाशकों और रसायनों के प्रयोग तथा खेती के बदलते तौर-तरीकों के कारण इनके अस्तित्व पर संकट गहराता जा रहा है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि जिन क्षेत्रों में कृषि भूमि प्राकृतिक आवासों के निकट थी, वहां मधुमक्खियों की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर थी। इससे स्पष्ट होता है कि मधुमक्खियों को पनपने के लिए मिश्रित प्राकृतिक वातावरण और पर्याप्त संसाधनों की आवश्यकता होती है।

वास्तव में, धरती पर किसी भी अन्य कीट ने उतनी लोकप्रियता और मानव सभ्यता पर उतना प्रभाव नहीं डाला, जितना मधुमक्खियों ने। आधुनिक कृषि और मानव संस्कृति को आकार देने में इन मेहनती कीटों का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मधुमक्खियां उस जैव-विविधता का हिस्सा हैं, जिस पर मानव अस्तित्व निर्भर करता है। जैव-विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं पर अंतर-सरकारी विज्ञान-नीति मंच की वर्ष 2019 की ऐतिहासिक रिपोर्ट में भी कहा गया कि दुनिया के सभी प्रमुख धर्मों में मधुमक्खियों का उल्लेख मानव समाज के लिए उनके महत्व को दर्शाता है। आज खाद्य-श्रृंखला का एक अत्यंत महत्वपूर्ण

हिस्सा लगातार समाप्त होता जा रहा है, जो बेहद चिंताजनक है। मधुमक्खियों में गिरावट को विशेषज्ञ 'कॉलोनी पतन विकार' के नाम से जानते हैं। उल्लेखनीय है कि मधुमक्खियां केवल अपनी कॉलोनियों तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि वे अनेक जीवों और पेड़-पौधों के जीवन चक्र को भी प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए, विलो और चिनार जैसे कई पेड़ अपने प्रजनन के लिए मधुमक्खियों जैसे परागणकर्ताओं पर निर्भर करते हैं।

जैसा कि ऊपर भी इस आलेख में चर्चा कर चुका हूं कि आज बढ़ती आबादी, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और मानवीय गतिविधियों के कारण मधुमक्खियों के प्राकृतिक आवास तेजी से नष्ट हो रहे हैं। खेती के सघन तरीके, रासायनिक कीटनाशकों का अत्यधिक प्रयोग, मौसम चक्र में बदलाव तथा बढ़ता वायु प्रदूषण इस लाभदायक कीट को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहे हैं। इसी कारण संयुक्त राष्ट्र ने सरकारों, संगठनों, नागरिक समाज और आम लोगों को परागणकर्ताओं और उनके आवासों की रक्षा के लिए प्रेरित करने हेतु विश्व मधुमक्खी दिवस घोषित किया है।

मधुमक्खियों की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका परागण में सहायता करना है। वे फूलों के बीच पराग पहुंचाकर पौधों में प्रजनन की प्रक्रिया को बढ़ावा देती हैं, जिससे फल, बीज और नए पौधों का उत्पादन संभव होता है। इसके अतिरिक्त वे शहद का उत्पादन करती हैं, जो मानव के लिए एक मूल्यवान खाद्य पदार्थ और औषधीय स्रोत है। कहना गलत नहीं होगा कि परागण की यह प्रक्रिया खाद्य-सुरक्षा, पोषण सुरक्षा और पृथ्वी के पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने के लिए अत्यंत आवश्यक है। मधुमक्खियां वन्यजीवों के लिए भोजन और आश्रय उपलब्ध कराने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने मानव संस्कृति को भी अनेक रूपों में प्रभावित किया है जैसे कला, संगीत, त्योहार और लोक परंपराएं। यहां तक

कि इतिहास में उनका उपयोग युद्ध के उपकरण के रूप में भी किया गया है। मधुमक्खी पालन ग्रामीण आजीविका का एक महत्वपूर्ण स्रोत है और किसानों की अतिरिक्त आय बढ़ाने में सहायक है।

यदि बड़ी संख्या में मधुमक्खियां समाप्त हो जाती हैं, तो परागण की प्रक्रिया प्रभावित होगी और इसका सीधा असर फसल उत्पादन पर पड़ेगा। फलस्वरूप मानव को स्वस्थ आहार, फल, सब्जियां, मेवे, दवाएं, शहद और अन्य आवश्यक खाद्य पदार्थों की कमी का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए मधुमक्खियों के संरक्षण के लिए गंभीर प्रयास समय की मांग बन चुके हैं। विकिपीडिया पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार मधुमक्खी कीट वर्ग का प्राणी है तथा यह समूह में रहना पसंद करती है। इसका छत्ता मोम से बनता है। मधुमक्खियों के वंश 'एपिस' में 7 जातियां और 44 उपजातियां पाई जाती हैं। जानकारी के अनुसार मधुमक्खियां नृत्य के माध्यम से अपने परिवार के सदस्यों को संकेत देती हैं। वास्तव में जंतु जगत में मधुमक्खी 'आर्थोपोडा' संघ का कीट है। दुनिया भर में मधुमक्खियों की 40,000 से अधिक प्रजातियां पाई जाती हैं। अकेले कनाडा में लगभग 1,000 प्रजातियां हैं, जिनमें से लगभग 67 प्रतिशत मधुमक्खी कॉलोनियां अल्बर्टा, सस्केचेवान और मैनिटोबा में पाई जाती हैं। विश्व में मधुमक्खियों की प्रमुख पांच प्रजातियों में भुनगा या डम्भर, भंवर या सारंग, पोतिंगा या छोटी मधुमक्खी, खैरा या भारतीय मौन तथा यूरोपियन मधुमक्खी शामिल हैं। इनमें से चार प्रमुख प्रजातियां भारत में भी पाई जाती हैं। कहना गलत नहीं होगा कि कृषि उत्पादन और पर्यावरण संरक्षण में मधुमक्खियों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अंत में, यही कहा जा सकता है कि मधुमक्खियां हमारे पर्यावरण, पारिस्थितिकी-तंत्र और खाद्य-श्रृंखला का मुख्य आधार हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज हम धरती के इस अमूल्य और मेहनती जीव के संरक्षण के लिए अपेक्षित प्रयास नहीं कर पा रहे हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि मधुमक्खियां हमारे द्वारा खाए जाने वाले भोजन के लगभग एक-तिहाई हिस्से के परागण के लिए जिम्मेदार हैं। हमारे आहार के लिए आवश्यक अधिकांश फल, सब्जियां, बीज और मेवे इनके कारण ही उपलब्ध हो पाते हैं। विशेष रूप से कृषि क्षेत्र में मधुमक्खियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसलिए हमारा यह कर्तव्य बनता है कि हम इस धरती के इस मेहनती 'सुपर जीव' के संरक्षण और संवर्धन की दिशा में गंभीरता से कार्य करें।

माँ

बलविंदर
ओंकार नगर गुरदासपुर पंजाब

सोमवार को रजनी को वृद्धाश्रम में छोड़ आए। पोता गुम-सुम था, जैसे उसका कीमती जान से प्यार खिलौना गुम हो गया हो। कुछ बोल नहीं रहा था। उसने अपनी माँ से उदास मुद्रा में कहा, दादी माँ को वहां क्यों छोड़ आए हो? इतना कहने की देर थी कि उसकी माँ ने जोर से एक थप्पड़ उसके मुंह पर जड़ दिया। उसका जवाब माँ ने दे दिया था। वह बिलक कर रोता हुआ चुप हो गया।

रजनी का पति उच्च पदासीन था। वह शादी से दस वर्ष बाद ही परमात्मा को प्यार हो गया, अचानक हृदय गति रूकने से। उच्चाधिकारी होने के नाते घर का वातावरण, रहन सहन ऊँचे स्तर का था। रजनी शिक्षिता तो थी परन्तु उसने कोई भी नौकरी नहीं की थी।

रजनी का आठ वर्ष का एक लड़का था राजेश। वह अपने पुत्र की सुख-सुविधा के लिए तन-मन-धन से कुर्बान थी। उसने एक प्राईवेट कालेज में नौकरी कर ली थी। राजेश की खुशी ही उसकी खुशी थी। एक माँ के फर्ज़ ही नहीं बल्कि पिता के फर्ज़ भी सहर्ष सहदता से निभाती। राजेश उसकी ज़िंदगी थी, उसके सांसों की ज़रूरत, उसके मोह की क़ीमत, उसके नयनों की ज्योति। उनके लिए राजेश मन्दिर की भांति था तथा वह एक पुजारन की तरह उसकी सेवा सुश्रूषा में सब कुछ कुर्बान करने के लिए बंदगी को समर्पित।

वयस्क होकर राजेश उच्च शिक्षा आर्जित करके सरकारी पद के फर्ज़ निभा रहा था। रजनी ने अपने पुत्र की शादी धूमधाम एवं अपनी हैसियत से बढ़कर भारी स्वर्च से की थी। रिश्तेदारों में, शहर में, रजनी की कार्यगुज़ारी प्रशंसा की बुलंदी पर थी।

राजेश की पत्नी सुन्दर, सुशील थी। वह भी सरकारी पद पर कार्यरत थी।

लगभग एक वर्ष के पश्चात रजनी के आंगन में पोते की आमद ने खुशियों के बंदनवार सजा दिए। रजनी की खुशी अम्बर को छुने लगी। वह परमात्मा का शुक्र करती कि उसको दूसरा जन्म देखने का अवसर मिला। पोता मानव का दूसरा जन्म होता है।

उसने अपने पोते का नाम रवि रखा। नाम को सार्थिक करता हुआ, उसके जीवन में सवेरा ही सवेरा दस्तक दे रहा था।

समय हिरनी की भांति कुलाचे भरता हुआ भागता चला गया। रजनी का पोता लगभग दस वर्ष का हो गया था। वह पोते की प्रत्येक ख़्वाहिश पर जान देती थी। जिस तरह संसार में दादी-पोते का स्नेह-मोह होता है, उससे भी ज़्यादा। घर के प्रत्येक काम में रजनी अपनी हिम्मत को हर्षत से ज़रब देकर दौड़ती। पुत्र-वुधु की एक सेविका की भांति कार्य करती हुई खुशी की मांज़िल की ओर बढ़ती जाती, जैसे वह जन्नत की पर्याय हो।

रजनी सेवा निवृत हो गई। वह वृद्ध होने के बावजूद भी घर-बाहर को अनिवार्य कार्यो के लिए हाथ बंटाती न थकती। खुशी हृदय में हो तो थकावट पंख लगा कर उड़ जाती है।

उसने अपनी सेवा निवृति के अवसर पर मिली समस्त धनराशि राजेश के नाम करवा दी।

रजनी अब लगभग 65 वर्ष की बहारें पार

कर चुकी थी। उसको कई बीमारियों ने घेर लिया था।

ब्लड प्रेशर, शुगर, गुरदों की बीमारी, नज़र का कमज़ोर होना इत्यादि। अब उसको चलना भी मुशिकल लगता। आसरा भाल कर ही चलती। बैड चारपाई का आसरा ही उसकी ज़िंदगी बन गया।

एक दिन राजेश की पत्नी उसको प्यार तथा धैर्य से कहने लगी, मैंने कहा जी, माता जी सारा दिन खांसते रहते हैं। कई बिमारियां हैं, रवि उनसे ही खेलता रहता है। वह रवि को बार-बार चूमती रहती है, यह ठीक नहीं। मेरा ईशारा आप समझ ही गए होंगे। हम दोनें ड्यूटी पर चले जाते हैं, रवि स्कूल चला जाता है। थके मादे आकर माता जी को संभालना कितना मुश्किल होता है। कम-ज-कम मैं तों नहीं संभाल सकती। इन्सान के कुछ अपने भी मनोंरंजन होते है। आजकल नौकर रखने भी तो ठीक नहीं। तनख्वाह बहुत मांगते हैं। मैं तो कहती हूं कि माता जी को वृद्धाश्रमा में छोड़ आते हैं। वहां इनकी देखभाल भी ठीक होगी हम भी आज़ाद। आया-गया आज़ादी से रह सकता है। वहां इनका दिल भी लग जाएगा।

परन्तु मेरी बात सुन, जिस माँ ने अनेक कष्ट झेल कर हमको यहां तक पहुंचाया। अब उनको इस उम्र में वृद्धाश्रमा में छोड़ आएं। कोई अच्छी बात नहीं। समाज क्या कहेगा? रिश्तेदार क्या कहेंगे? पोते के साथ माँ का बहुत मोह-स्नेह है। उसके बगैर तो वह मर जाएगी। वह तो उसकी ज़िंदगी है। पोते के साथ उसका दिन चढ़ता है, रात होती है। माँ को आश्रम में भेजना ठीक नहीं।

परन्तु पत्नी ने इतना मज़बूर कर दिया कि राजेश को सारे हथियार फैंकने पड़े।

एक दिन शाम को बिस्तर पर सरहाने तकिए की ढ़ारस लगा कर बैठी माँ के पास राजेश जा बैठा। कलेजे को सीने से बाहर निकाल कर, हिम्मत का आसमां बांध कर माँ को कहने लगा, माँ एक बात करनी है।

हां, बेटा, बनाओ, क्या बात है? तेरी कौन सी बात मैंने आज तक नहीं मानी बेटा, जल्दी बता क्या बात हैं?

माँ, क्या बताऊँ?

बता ना मेरा पुत्र, खुल कर बात कर, डर-डर के बात क्यों कर रहा पुत्र। आज तक तो ऐसी घबराहट में मेरे साथ कभी बात नहीं की, बता मेरा पुत्र क्या बात है? मैं तेरी प्रत्येक शर्त पूरी करूंगी मेरे लाल! आखिर बात है क्या? जिसको जल्दी नहीं बता रहा।

ऊपर से राजेश की पत्नी भी आ जाती है तथा उसने हिचकचाहट के पंख कुतरते हुए दलेरी के साथ सय्याद की भांति कहा मां जी, दरअसल बात यह है कि हम चाहते हैं आप वृद्धाश्रम में चले जाएं। वहां आपकी देखभाल अच्छी तरह से होगी। खर्च तो हम देगें ही। घर में आपकी देखभाल अच्छी तरह से नहीं होती कई कमियां (त्रुटियां) रह जाती हैं। घर में आपकी देखभाल करनी मुश्किल होती है। हम चाहते हैं आपका वृद्धश्रम की अच्छी सुविधायों में छोड़ आएं। आपका वहां दिल भी लगा रहेगा। आपको वहां मिलने आते रहेंगे।

मां ने हंसते हुए झट से कहा, हां, पुत्र में तैयार हूं। यह तो मैं भी सोचती हूं। महसूस करती हूं पुत्र, आप मुझे वृद्धाश्रम में छोड़ आएं। मुझे कोई एतराज नहीं। आप बिल्कुल ठीक कहते हैं।

मां की डबडबाई चूल्हे जैसी आंखों से जैसे धूआं निकल रहा हो। उसने चारों ओर देखा, पुत्र-वधु को देखा, पोते की ओर देखा और नज़रे नीचे करते हुए खून के आंसू कलेजे के कासे में बहाती चली गई शायद अपने पति की याद में, जैसे पति उसको आर्शीवाद दे रहा हो, बल दे रहा हो, हिम्मत तथा धैर्य की शक्ति दे रहा हो।

पुत्र वधु ने जुर्रत से कहा, मां जी, आज शनिवार है तथा सोमवार हम आपको आश्रम में छोड़ आएं। मुझे कोइ एतराज नहीं, आप बिल्कुल ठीक कहते हैं।

मां की डबडबाई चूल्हे जैसी आंखों से जैसे धूआं निकल रहा हो। उसने चारों ओर देखा, पुत्र-वधु को देखा, पोते की ओर देखा ओर नजरे नीचे करते हुए खून के आंसू कलेजे के कासे मे बहाती चली गई शायद अपने पति की याद में, जैसे पति उसको आर्शीवाद दे रहा हो, बल दे रहा हो, हिम्मत तथा धैर्य की शक्ति दे रहा हो।

पुत्र-बधु ने जुर्रत से कहा, माँ जी, आज शनिवार है तथा सोमवार हम आपको आश्रम में छोड़ आएंगे। आपकी तैयारी भी कर देते हैं।

रजनी पति को याद करके बुसक-बुसक कर कलेजे की आंखों के जरिए रो कर गुम-सुम सी हो गई।

पुत्र-वधु की खुशी तथा सास के आंसू दो विपरीत दिशाओं का वर्तमान एक इतिहास को रचने जा रहा था।

रात बिस्तर पर पड़ी रजनी सोच रही थी, काश! आज वह जिंदा होते, मेरी ओर कोई आंख उठा कर नहीं देख सकता था। वह घर मेरा होना था जो आज मेरा नहीं। मेरा तो कुछ भी नहीं है आज यहां।

वह मन ही मन सोचने लगी, पुत्र-वधु से तो दूर हो सकती हूं परन्तु पोते से दूर जाना तो एक मौत (मृत्यु) है। रवि के बगैर में जिंदा नहीं रह सकती। रवि मेरा दिन भी, दोपहर भी, रात भी। मेरी नस-नस में रवि है।

राजेश माँ की बाते सुन कर आश्चर्य एवं अक्रोश से बिहबल होकर माँ से कहने लगा, माँ, कई वर्षो से तू यहां रह रही है। तूने कभी भी इन चीज़ों की पहले डीमांड नहीं की परन्तु अब जब के तू मरणासन्न दशा में है तो अब अन चीज़ों के लिए लालसा क्यों? क्या ऐसा व्ययभार निरर्थक नहीं है।

वह सोचने लगी, परमात्मा कौन से जन्म का बदला ले रहा है मुझ से। जीते जी सब कुछ खो रहा है। माँ बाप बच्चों को संस्कार दे सकते हैं, प्यार दे सकते हैं, सभ्याचार दे सकते हैं, शिष्टाचार सिखा सकते हैं परन्तु व्यावहारिक जिंदगी तो बच्चे स्वंय ही अपने आप से, समाज से, चौगिरदे से ही सीख सकते हैं, यहां माँ बाप क्या कर सकते हैं। अनिवार्य नहीं व्यावहारिक तौर पर शिक्षित बच्चे अच्छे हों।

रजनी के मन में कई ख़्याल आते और परोक्ष हो जाते। जिंदगी के क्या अर्थ हैं, उसकी समझ से बाहर हो गए।

सोमवार को रजनी को वृद्धाश्रम में छोड़ आए। पोता गुम-सुम था, जैसे उसका कीमती जान से प्यार खिलौना गुम हो गया हो। कुछ बोल नहीं रहा था। उसने अपनी माँ से उदास मुद्रा में कहा, दादी माँ को वहां क्यों छोड़ आए हो? इतना कहने की देर थी कि उसकी माँ ने जोर से एक थप्पड़ उसके मुंह पर जड़ दिया। उसका जवाब माँ ने दे दिया था। वह बिलक कर रोता हुआ चुप हो गया।

दादी माँ के जाने से जैसे उसकी दुनिया लुट गई हो, जैसे चारों और अंधेरा छा गया हो, जैसे उसके हाथ-पैर सन (सून्य) हो गए हों। जिस्म पत्थर हो गया हो तथा उदासी उसके जिस्म का हिस्सा बन गई हो।

रजनी अब वृद्धाश्रम में रहने लगी। वहां वह सुबह शाम मन्दिर में जाती, अपने पोते के दर्शन कृष्ण भगवान की मूर्ति में करने के लिए। कृष्ण भगवान की मूर्ति को चूमती, प्यार करती, देख-देख रोती, घुट-घुट कर छाती से लगाती। पूजा अर्चना करती ना थकती। अपनी ममता उडेल देती।

आश्रम में रह कर उसने धार्मिक प्रवचन शुरू कर दिए थे। उच्च शिक्षित होने के कारण, उसको धार्मिक ज्ञान बहुत था। सारा आश्रम उसका श्रद्धालु बन गया। सभी महिलायों में एक जींवत क्रान्ति खड़ी कर दी। जीवन के अर्थ ढूढ़ लिए। धार्मिक प्रवचन उसका आसरा बन गए। किस्मत को कोसना छोड़ कर उसने हिम्मत के

भगवान हृदय में रख लिया।

रजनी पति की याद कलेजे में लेकर अपनी मंजिल की ओर बढ़ती चली गई।

कभी-कभी जब पुत्र वधु और पोता उसे मिलने आते तो वह पोते की दबी हुई भावनाओं को समझती परन्तु वह चुप रहती। पोते से दूरी बना कर रखती थी। कहीं मोह-ममता उसकी उदासी बन कर उसकी सेहत तथा पढ़ाई का नुकसान न कर देवे। जब पोता चला जाता तो वह कमरे में अकेली बैठ कर रोती रहती और फिर स्वयं को हौसला-धैर्य देकर फिर अपनी सारी टूटी हुई हिम्मत को इक्टठा करके झूठी सात्वना में उतर जाती।

इस तरह वृद्धाश्रम में कुछ वर्ष ही गुज़ारे थे कि रजनी सख़्त बीमार हो गई।

रज़नी ने वृद्धाश्रम की प्रभारी महिला को विनय करते हुए कहा, मैं अपने पुत्र से मिलना चाहती हूं। उसको बुलाओ।

रजनी के पुत्र को फोन पर संदेश दे दिया गया, राजेश आपकी माता जी सख़्त बीमार हैं। आपको मिलना चाहती हैं।

राजेश ने कहा, आज बुधवार है को मैं छुट्टी वाले दिन रविवार मिलने आऊंगा।

रविवार राजेश अकेला ही माँ को मिलने के लिए आया तो राजेश ने माँ को देखते हुए कहा, माँ, आपने मुझे याद किया। सेहत तो ठीक है ना ?

हां, पुत्र ठीक ही हूं।

माँ ने कहा, पुत्र मैं तुझे कुछ कहना चाहती हूं।

हा, माँ बताएं।

पुत्र, यहा गर्मी बहुत है, यहां मेरे कमरे में एक ए.सी. लगवा दो, पंखे की हवा बहुत गर्म होती है। यहां रोटी ठंडी मिलती है, एक ओवन लगवा दे। खाना भोजन ठंडा होने की वजह से कई बार भूखा ही सोना पड़ता है। पुत्र, यहां गर्म पानी पीने को मिलता है, एक छोटी सी फ्रिज ला दे। यहां बैडॅ पुराने हैं, नींद नहीं आती, पुत्र, यह सब चीज़े ला दे।

राजेश माँ की बाते सुन कर आश्चर्य एवं अक्रोश से बिहबल होकर माँ से कहने लगा, माँ, कई वर्षो से तू यहां रह रही है। तूने कभी भी इन चीज़ों की पहले डीमांड नहीं की परन्तु अब जब के तू मरणासन्न दशा में है तो अब अन चीज़ों के लिए लालसा क्यों? क्या ऐसा व्ययभार निरर्थक नहीं है।

माँ ने ममता और स्नेह से कहा, पुत्र, नहीं, यह बात नहीं हैं, यहां बहुत सी तकलीफें हैं। मुझे तेरा ख़्याल है पुत्र, क्योंकि तेरे बच्चों ने भी कल को तुझे यहां छोडने आना है। तुझे कोई तकलीफ ना हो मेरे लाडले।

सेहत के साथी, प्रदूषण की दुश्मन और किफायती भी है साइकिल

विश्व की सबसे पहली साइकिल लकड़ी की बनी थी। इसमें लकड़ी के ही पहिए और लकड़ी के ही हैंडल थे तथा इसमें ना तो पेडल थे और ना ही चेन। जो पैदल चलकर बोझ लाद कर यात्रा करने के लिए उपयुक्त थी। ऐसे लोगों के लिए यह सायकिल जर्मनी के बैरन कार्ल वान डाइस बेरेंस ने 1817 में बनाई थी।

डॉ. बी.आर. नलवाया
मन्दसौर (म.प्र.)

साइकिल के पुराने दिन अब वापस लौट आयगे। क्योंकि अब प्रधानमंत्री ने नागरिकों से आग्रह किया कि पेट्रोल और डीजल का उपयोग कम करके मेट्रो और बस का उपयोग करने के साथ साइकिल भी चलाएं यह सलाह दी गई। 1970 के दशक में जब से तेल संकट बना हुआ,तब संसार के कई देशों ने परिवहन व्यवस्था में बदलाव आया था। अब नीदरलैंड, डेनमार्क और यूरोप के कई देशों में साइकिल - लेन का विस्तार किया गया। कई देशों में अब साइकिल चलाने का चलन बढ़ता जा रहा है। हमारे देश में भी अब इसे गरीबी या पिछड़ेपन से जोड़ने के बजाय पर्यावरण संरक्षण और स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम माना जाने लगा है। अब साइकिल चलाना शोकिया तौर के साथ ही डॉक्टर और जीम ट्रेनर भी इसे नियमित रूप से चलाने की सलाह देते हैं। साइकिल चलाने वाले को निम्न दृष्टि से देखने की स्थितियां अब खत्म हो चुकी है। साइकिल में भी अब अनेक विकल्प आ चुके है, रईस लोगो को बहुत अच्छी किस्म की महंगी साइकिल चलाते हुए देखा जाता है। यही नहीं देश के कई राज्यों के मुख्यमंत्री व अन्य मंत्रीगण भी अपने-अपने सचिवालय विश्व साइकिल दिवस पर साइकिल से ही जाते हैं। वे आम जनता को यह संदेश देते हैं, कि स्वास्थ्य व पर्यावरण के लिए नियमित रूप से साइकिल चलाएं। जापान में तो हफ्ते के एक दिन सभी अधिकारी, नेतागण व आम जनता साइकिल का ही प्रयोग करते है।

सर्वविदित है कि संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 3 जून 2018 को विश्व साइकिल दिवस मनाने की घोषणा की थी। जिसका कई देशों ने समर्थन किया।

यदि देखा जाए तो स्वास्थ्य के लिए सबसे सुलभ व सस्ता साधन साइकिल ही है, क्योंकि यह सेहत बनाने के साथ ही प्रदूषण की दुश्मन भी है। हर बच्चे का ख्वाब और सबसे किफायती कोई वाहन है, तो वह

केवल साइकिल ही है। साइकिल की खुशी का पैमाना 200 साल से भी पुराना है। आज जितने स्टाइलिश और नए-नए अंदाज में हमारे सामने साइकिल आ रही है। वे वास्तव में कई बार परिवर्तन होकर आधुनिक युग के अनुसार बनी है।

विश्व की सबसे पहली साइकिल लकड़ी की बनी थी। इसमें लकड़ी के ही पहिए और लकड़ी के ही हैंडल थे तथा इसमें ना तो पेडल थे और ना ही चेन। जो पैदल चलकर बोझ लाद कर यात्रा करने के लिए उपयुक्त थी। ऐसे लोगों के लिए यह सायकिल जर्मनी के बैरन कार्ल वान डाइस बेरेंस ने 1817 में बनाई थी। इसके पश्चात 1860 में फ्रांस में पेडल-चेन व बैठने के लिए सीट लगाकर इसे थोड़ा और आरामदायक बना दिया गया। इसके कई वर्षों के बाद 1977 में गियर वाली साइकिल ने यूरोपीय बाजार में अपना स्थान बना लिया था। 21वीं शताब्दी की मोस्ट फेवरेट फैट बाइक इसका यह आकार ही इसकी पहचान है। तभी तो यह आज 21 गियर सस्पेंशन व 4 इंच मोटे टायर वाली फैट साइकिलों का जलवा है।

साइकिल चलाने में सबसे बड़ी दिक्कत यह है, कि हर किसी शहर में ना तो साइकिल ट्रैक बने हुए हैं। और ना हीं सड़कों पर सिल्वर-व्हाइट पेंट की मार्किंग की गई है। ऐसे में साइकिल चलाने वालों को तेज रफ्तार कार व बाइक चलाने वालों के साथ ही सफर पूरा करना पड़ रहा है। इसमें दुर्घटना की काफी संभावनाएं बनी रहती है। उज्जैन में इस दिशा में हीरा मिल क्षेत्र में साइकिल ट्रैक बना है तथा साथ ही महानंदा नगर एरिया के चारों ओर भी साइकिल ट्रैक बन चुका है। साथ ही पिछले दो वर्षों में भारत सरकार साइकिल चलाने के लिए स्मार्ट सिटी में साइकिल प्रतियोगिता भी करवा रही है।

अब निश्चित ही साइकिल के प्रति जागरूकता बढ़ने व बढ़ाने की महती आवश्यकता है, क्योंकि साइकिल चलाने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है। एक उम्र के बाद इससे मोटापे व जोड़ों में दर्द की समस्या भी नहीं होती है। अतः धन की बचत और बेहतर स्वास्थ्य के लिए कम दूरी की यात्रा साइकिल से ही पूरी करना चाहिए। कुछ लोग साइकिल से यात्रा करने में भी पीछे नहीं हैं ये लोग अनिवार्य रूप से नियमित 1 घंटे साइकिल चलाते ही हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार साइकिल स्वास्थ्य की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण परिवहन सिद्ध हो चुका है।

साइकिल कभी आम आदमी की सवारी मानी जाती थी, लेकिन यह आधुनिक गाड़ियों की बढ़ती खपत ने इसे गायब ही कर दिया। इसके लिए हमारी सोच, सिस्टम और सरकार तीनों ही जिम्मेदार है।

साइकिल की लोकप्रियता के यह आवश्यक है, कि हेल्थ पॉलिसी में साइकिल को पॉलिसी देकर राष्ट्रीय साइकिल नीति बनाई जानी चाहिए। स्कूलों में साइकिल एजुकेशन अनिवार्य किया जाना चाहिए। साइकिल पार्किंग अनिवार्य और सिक्योर और फ्री हो। साइकिल चलाने का प्रचलन बढ़ता है, तो प्रदूषण भी 30% तक कम हो सकेगा। साइकिल से ईंधन की बचत से तेल आयात पर निर्भरता घटेगी। इसके साथ ही चिकित्सा पर होने वाला खर्च भी कम होगा, क्योंकि विदेशों में जैसे नीदरलैंड में साइकिल से प्रति व्यक्ति 1000 यूरो सालाना बचत होती है। इससे हमें न केवल यातायात में सुविधा बल्कि जीवन शैली स्वास्थ्य और पर्यावरण में सुधार संभव होगा।

फोटो : एआई

विश्व की सबसे पहली साइकिल लकड़ी की बनी थी। इसमें लकड़ी के ही पहिए और लकड़ी के ही हैंडल थे तथा इसमें ना तो पेडल थे और ना ही चेन। जो पैदल चलकर बोझ लाद कर यात्रा करने के लिए उपयुक्त थी। ऐसे लोगों के लिए यह सायकिल जर्मनी के बैरन कार्ल वान डाइस बेरेंस ने 1817 में बनाई थी। इसके पश्चात 1860 में फ्रांस में पेडल-चेन व बैठने के लिए सीट लगाकर इसे थोड़ा और आरामदायक बना दिया गया।

बदलते समाज में रहन-सहन कैसा होना चाहिए

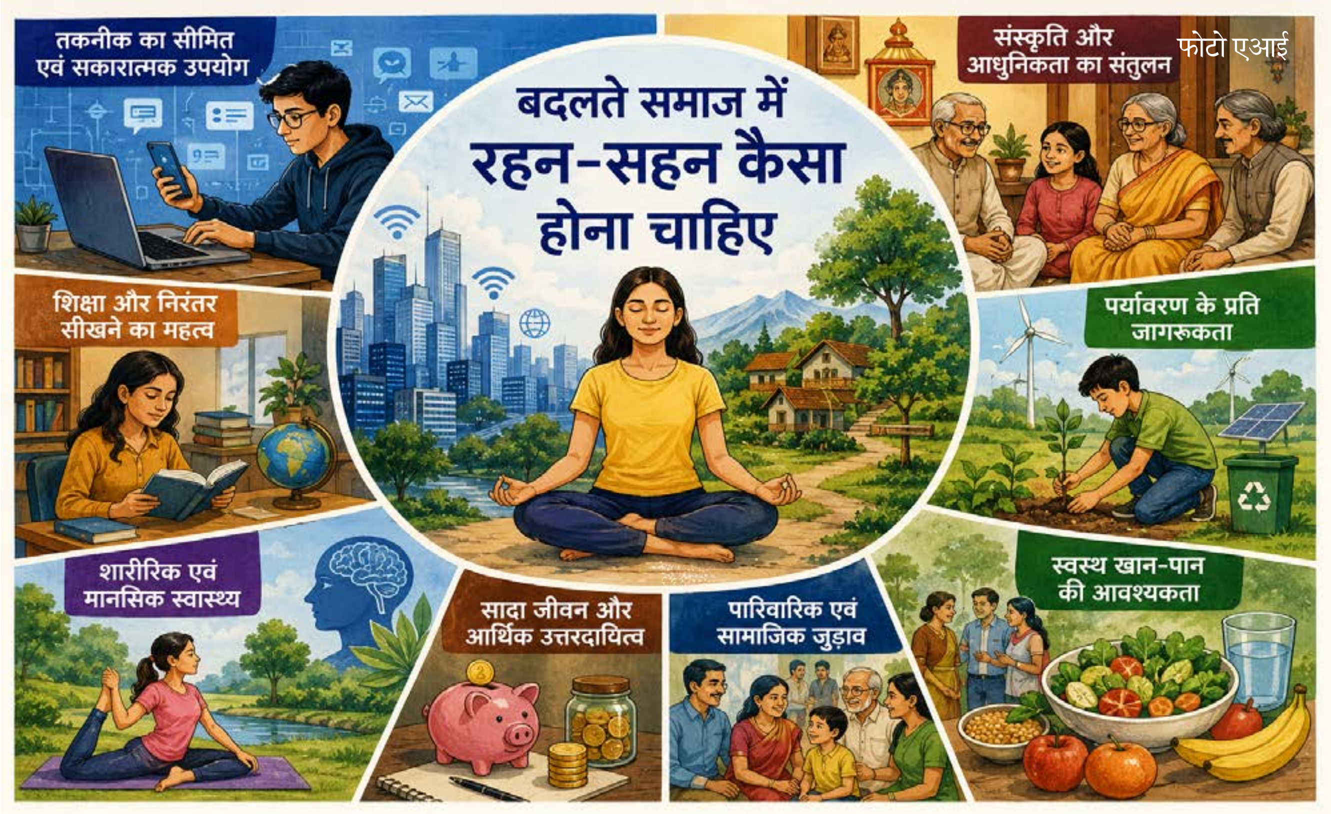

सुषमा त्रिपाठी

समाज निरंतर परिवर्तनशील है। विज्ञान, तकनीक, शिक्षा और वैश्वीकरण के प्रभाव से लोगों की जीवनशैली में तेजी से बदलाव आ रहा है। ऐसे समय में आवश्यक है कि हमारा रहन-सहन आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन बनाए रखने वाला हो। व्यक्ति को बदलती परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालना चाहिए, लेकिन अपनी संस्कृति, सामाजिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं को भी सुरक्षित रखना चाहिए। संतुलित और सकारात्मक जीवनशैली ही व्यक्ति तथा समाज दोनों के विकास का आधार बन सकती है।

तकनीक का सीमित एवं सकारात्मक उपयोग

वर्तमान समय डिजिटल युग का समय है। मोबाइल फोन, इंटरनेट और विभिन्न तकनीकी साधनों ने जीवन को सरल और सुविधाजनक बना दिया है। तकनीक का उपयोग शिक्षा, ज्ञान, संचार और कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए किया जाना चाहिए। इसके साथ ही यह भी आवश्यक है कि व्यक्ति तकनीक को अपने जीवन पर हावी न होने दे। अत्यधिक स्क्रीन टाइम, सोशल मीडिया का अनियंत्रित उपयोग तथा डिजिटल उपकरणों पर अत्यधिक निर्भरता व्यक्ति के स्वास्थ्य और सामाजिक संबंधों को प्रभावित कर सकती है। इसलिए तकनीक का विवेकपूर्ण और सकारात्मक उपयोग ही उचित माना जाना चाहिए।

संस्कृति और आधुनिकता का संतुलन

आधुनिकता को अपनाना समय की आवश्यकता है, लेकिन इसके साथ अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। व्यक्ति को अपनी परंपराओं, रीति-रिवाजों और पारिवारिक मूल्यों का

सम्मान करना चाहिए। परिवार के बुजुर्गों का आदर, सामाजिक संबंधों का संरक्षण और नैतिक मूल्यों का पालन समाज को मजबूत बनाते हैं। आधुनिक जीवनशैली और पारंपरिक संस्कृति के बीच संतुलन स्थापित करके ही स्वस्थ सामाजिक वातावरण का निर्माण किया जा सकता है।

पर्यावरण के प्रति जागरूकता

बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के कारण पर्यावरण संरक्षण आज एक महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गया है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने रहन-सहन में पर्यावरण-अनुकूल आदतों को शामिल करना चाहिए। प्लास्टिक का उपयोग कम करना, जल और बिजली की बचत करना तथा प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना एक जिम्मेदार नागरिक का कर्तव्य है। पर्यावरण के प्रति जागरूकता न केवल वर्तमान पीढ़ी बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी लाभदायक सिद्ध होगी।

स्वस्थ खान-पान की आवश्यकता

बदलती जीवनशैली के कारण लोगों की भोजन संबंधी आदतों में भी परिवर्तन आया है। फास्ट फूड और प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों का अत्यधिक सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। इसलिए व्यक्ति को संतुलित, पौष्टिक और स्वास्थ्यवर्धक भोजन को प्राथमिकता देनी चाहिए। ताजे फल, हरी सब्जियां और पोषक तत्वों से भरपूर आहार स्वस्थ जीवन का आधार हैं। अच्छा स्वास्थ्य व्यक्ति की कार्यक्षमता और जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाता है।

शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य

आधुनिक जीवन की व्यस्तता और प्रतिस्पर्धा के कारण तनाव बढ़ता जा रहा है। ऐसे में शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। नियमित व्यायाम, योग और ध्यान शरीर को स्वस्थ तथा मन को शांत बनाए रखते हैं। पर्याप्त विश्राम और सकारात्मक सोच भी मानसिक संतुलन बनाए रखने में सहायता करते हैं। स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन व्यक्ति के समग्र विकास के लिए आवश्यक हैं।

सादा जीवन और आर्थिक उत्तरदायित्व

वर्तमान समय में दिखावे और उपभोग की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। व्यक्ति को अपनी आय और आवश्यकताओं के अनुसार जीवन जीना चाहिए। अनावश्यक खर्चों से बचना, बचत की आदत विकसित करना तथा आर्थिक संसाधनों का सही उपयोग करना एक समझदार जीवनशैली का परिचायक है। सादगी और आर्थिक अनुशासन व्यक्ति को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करते हैं।

पारिवारिक एवं सामाजिक जुड़ाव

परिवार और समाज व्यक्ति के जीवन के महत्वपूर्ण आधार हैं। आधुनिक जीवन की व्यस्तता के बावजूद परिवार के साथ समय बिताना और सामाजिक संबंधों को मजबूत बनाए रखना आवश्यक है। पड़ोसियों, मित्रों और समाज के अन्य लोगों के साथ सहयोग और सद्भाव का व्यवहार सामाजिक एकता को बढ़ावा देता है। जरूरतमंद लोगों की सहायता करना तथा सामाजिक गतिविधियों में भाग लेना एक जिम्मेदार नागरिक की पहचान है।

शिक्षा और निरंतर सीखने का महत्व

दलते समाज में शिक्षा केवल विद्यालय या महाविद्यालय तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि जीवनभर सीखते रहने की प्रक्रिया बन गई है। नई तकनीकों, बदलती आर्थिक परिस्थितियों और सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को विकसित करना आवश्यक है। व्यक्ति को नए ज्ञान, कौशल और अनुभव प्राप्त करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

निरंतर सीखने की प्रवृत्ति व्यक्ति को आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और भविष्य की चुनौतियों का सामना करने योग्य बनाती है। शिक्षा के माध्यम से ही समाज में जागरूकता, समानता और प्रगति को बढ़ावा मिलता है।

नैतिक मूल्यों और संवेदनशीलता का संरक्षण

आज के इस दौर में नैतिक मूल्यों का महत्व और भी बढ़ गया है। सत्य, ईमानदारी, अनुशासन, सहिष्णुता और करुणा जैसे गुण व्यक्ति के चरित्र को मजबूत बनाते हैं। समाज चाहे कितना भी विकसित क्यों न हो जाए, मानवीय संवेदनाएं ही उसे वास्तविक अर्थों में सभ्य बनाती हैं। दूसरों की भावनाओं का सम्मान करना, जरूरतमंदों की सहायता करना तथा समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाना अच्छे रहन-सहन की पहचान है। नैतिक मूल्यों का पालन करने वाला व्यक्ति समाज में सम्मान और विश्वास प्राप्त करता है।

समय प्रबंधन और अनुशासित जीवन

सफल और संतुलित जीवन के लिए समय का सही प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। आधुनिक जीवन में अनेक प्रकार की जिम्मेदारियां और कार्य होते हैं, इसलिए व्यक्ति को अपने समय का उचित नियोजन करना चाहिए। समय पर कार्य करना, नियमित दिनचर्या अपनाना और आलस्य से दूर रहना जीवन को व्यवस्थित बनाता है। अनुशासित जीवनशैली व्यक्ति की कार्यक्षमता बढ़ाती है तथा उसे अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करती है। समय का सदुपयोग करने वाला व्यक्ति व्यक्तिगत, सामाजिक और व्यावसायिक जीवन में अधिक सफल और संतुष्ट रहता है।

बदलते समाज में रहन-सहन का आदर्श स्वरूप वही है जिसमें आधुनिकता, तकनीक, संस्कृति, पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य और मानवीय मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित हो। व्यक्ति को समय के साथ आगे बढ़ते हुए अपनी नैतिकता, संवेदनशीलता और सामाजिक जिम्मेदारियों को नहीं भूलना चाहिए। संतुलित, जागरूक और सकारात्मक जीवनशैली ही एक स्वस्थ, समृद्ध और प्रगतिशील समाज का निर्माण कर सकती है।

हार जाना चाहता हूँ ....

छोड़ मैं संकल्प जय का हार जाना चाहता हूँ।
कामना के हर उदधि के पार जाना चाहताहूँ।।

घुट रहे मन प्राण मेरे
स्वार्थ के बीहड़ विपिन में।
साँस लेना हुआ दूभर
अर्थ से दूषित पवन में।
गन्तव्य तो कुछ और था
पर राह ने भटका दिया।
स्वप्न तक में जो न सोचा
दर वही खटका दिया।
लौटकर मैं फिर पुराने, द्वार आना चाहता हूँ।।

जानता हूँ हार कर,
अपमान - विष पीना पड़ेगा।
मुखर अधरों को सिये
हो मूक बस जीना पड़ेगा।
पर मुझे वह आत्महंता
विजय भी स्वीकार कब है?
हृदय को पाषाण कर लूँ
यह मुझे अधिकार कब है?
त्याग कर के जीत,जीवन सार पाना चाहता हूँ।।

यह पराजय स्यात् सोई
चेतना झकझोर डाले।
खो गई संवेदनाओं के
कहीं कुछ छोर पा ले।
शान्त मन की झील में ही
नीर वह शायद मिले।
मन कलुष की कीच के
ऊपर जहाँ पंकज खिले।
आस का यह गान मैं, हर बार गाना चाहता हूँ।।

- देवेन्द्र सिंह

प्रकृति प्रेम

प्रकृति के प्रेम में जो व्यक्ति अपना दिल लगाते हैं।
उन्हें सब मार्ग मिलता है वही सद्गति को पाते हैं।।
प्रकृति सर्वोच्च है जग में वही सब ग्रंथ गाते हैं।
इसी में ब्रह्मा विष्णु और महेश भी समाते हैं।।
ब्रह्मा निर्माण करता है विष्णु पालक कहाते है।
महेश्वर जग के बंधन से हमें मुक्ति दिलाते हैं।।
प्रकृति के पांच तत्व से बनाया ब्रह्मा ने तुमको।
प्रकृति की गोद में पलकर विष्णु का प्यार पाते हैं।।
अंत में प्राण उड़ जाते धड़ रह जाता जग में।
प्रकृति में लीन हो करके तुरंत शिवधाम जाते हैं।।
प्रकृति के पांच तत्वों में भूमि अत्यंत है पावन।
इस पर नीचे मानव जाति कितना कहर बरसाते हैं।।
अन्न को देने वाली यह धरा है मां सदृश मेरी ।
उसी के सीने पर कितनी खदानें हम कराते हैं।।
धरा पर जन्म लेते हैं वही भोजन हमें देती ।
उसी की रज में पलते हैं उसी में मिल जाते हैं।।
नीर मानव की काया में रक्त संचार करता है।
जिसे नित्यपान कर हम तृप्त मन को बनाते हैं।।
जलाशय कूप नदियों में कहर ढाया हमने सबने।
प्रदूषित गंदगी वाली सभी उसमें नहाते हैं।।
ऊष्मा सूर्य देता है पुष्ट होता बदन जिससे।
सूर्य से खींचकर ऊर्जा यहां गाड़ी चलाते हैं।।
घटाई शान नदियों की गिराया मान सूरज का ।
विविध रोगों के चंगुल से नहीं हम निकल पाते हैं।।
गगन गंभीरता देता तो चंदा सम प्रतापी है ।
परंतु अब मनुष्य तो चंदा के ऊपर हक जताते हैं।।
वायु है प्राण का रक्षक शुद्धता वृक्ष देते हैं ।
उन्हें भी काट कर मानव हुकुम अपना चलाते हैं।।
प्रकृति का हो रहा दोहन मुसीबत आने वाली है।
बना है तन बदन जिससे इस पर आरा चलाते हैं।।
जरा सोचो करो चिंतन प्रकृति को नष्ट मत करो।
प्रकृति को छेड़ने वाले स्वयं ही मिटते जाते हैं।।
प्रकृति पृथ्वी जलाशय ,रवि गगन अरु वायु जीवन है।
ना छेड़ो श्रेष्ठ मानव जन विनय विनोद गाते हैं।।

- विनोद कुमार श्रीवास्तव

सूरज उगले आग

सूरज उगले आग
सूरज आग उगल
रहा है,
चारो तरफ नौतपा
चल रहा है ।
****
सूरज की आग ने
तापमान को बढ़ाया है ।
देखकर सूरज का ये रूप
हर आदमी घबराया है ।
****
सूरज की आग ने चारो ओर
हाहाकार मचाया है ।
धरती का हर आदमी सूरज
का रौद्र रूप देखकर घबराया है ।
****
सूरज जी अब थोड़ा आराम कर लो
धरती वालो की बात मान लो ।
हो सके तो आप भी कुछ दिन
हिल स्टेशन के लिए निकल लो ।
******
सड़क सुनसान है
दुखी सारा जहान है ।
सूरज की गर्मी से
परेशांन सारा जहां है ।
******
सूरज जी कुछ तो रहम करो
कुछ तो दया करो ।
करो अपना तापमान कम
पृथ्वी पर खुशियां भरो ।
****
जब तक मानव
प्राकृतिक साधनो का दोहन करेगा ।
तब तक सूरज पृथ्वी पर
आग उगलता रहेगा ।
****

- डॉ. प्रताप मोहन "भारतीय"

वैभव ही वैभव बस

'पंद्रह बरस' की उम्र में ऐसा तूफ़ान उठा,
हर गली-मोहल्ले में बस वैभव का नाम गूंजा।
छोटे से कंधों पे सपनों का ये आसमान लिए,
गेंदबाजों ने आउट करने क्या-2 जतन किए।

बल्ला जब उसके हाथों में बिजली बन जाता,
हरेक चौका उम्मीदों का दीप नया जलवाता।
छक्कों की बरसात से मैदान भी है दहक उठे,
जब दर्शकों के चेहरें गर्वित होकर चमक उठे।

सिर्फ रन नहीं थे, वो जज़्बा भी दिखलाता था,
हर 'शॉट' में भारत का भविष्य मुस्कुराता था।
जब गेंद हवा में जाती तो दिल भी उड़ते जाते,
खिलाड़ियों के पुराने 'रिकॉर्ड' पीछे छूट जाते।

पैंसठ छक्कों की गूंज आसमान तलक पहुँची,
क्रिस गेल की ताकत भी उसके आगे है छोटी।
प्लेऑफ में ही तूफानी पचास की चमक ऐसी,
प्रत्येक क्रिकेट प्रेमी की धड़कन बन गई वैसी।

सिर्फ उनतीस गेंदों में वैभव ने 97वें रन ठोके,
हर गेंदबाज़ के हौसले उसने पल भर में रोके।
उसके हरेक प्रहार में 'आत्मविश्वास' छलकता,
जैसे कोई एक नया सूरज धरती पर चमकता।

– संजय एम तराणेकर

पर्यावरण

भू माफिया पर अब तो, लगाएं आप रोक।
पर्यावरण विनाश ,का मनाते रहे शोक।।
पेड़ लगा जितने यहां, होते मालामाल।
नदी ताल पोखर सभी, भरे रहे हर साल।।
पेड़ों का नुकसान करें, उसे कभी मत छोड़ा।
सजा दिलाकर फिर उसे, नाता अपना तोड़ा।।
प्रदूषण से सदा यहां होता है नुकसान।
इसीलिए पेड़ रखिए हरे-भरे श्रीमान।।
करें दवा के काम ये, तुलसी पीपल नीम।
हमको मलिक ने दिए, देखो वैद हकीम।।
उस दिन जीवन में रहे, हमेशा तुमको मोहा।
हरियाली से हो भरी, मां धरती की गोद।।
हरी भरी धरती रहे, दे आप योगदान।
इससे पर्यावरण की खुशबू बढ़ेगी शान।।
हरे पेड़ जो भी हरे, उनको सदा बचाये।
सच्चे हैं यह परम मित्र, इनको गले लगाए।।
देने लगे अगर यहां, सभी आदमी ध्यान।
स्वयं काटोगे न कभी, पेड़ हरे श्रीमान।।
हरियाली यह ओढ़ कर धरा करे श्रृंगार।
आये पर्यावरण में फिर सुनहरी बहार।।

– रमेश मनोहर

हरियाली

जब चारों ओर होगी हरियाली।
तब आयेगी जीवन में खुशहाली।।

पर्यावरण प्रदूषण बना खरदूषण।
वृक्ष कट रहे हैं धरा के आभूषण।।
देख चिंतित युग निर्माता वनमाली।।

बिन वृक्ष के धरा होगी रेगिस्तान।
फसल बिन विचलित पूरा हिन्दुस्तान।।
औषध विहीन होगी भाग्य की झोली।।

वन वृक्ष नहीं होंगे फलफूल कहाँ।
वनवासी वनोपज बिन आनन्द कहाँ।।
अंगना कैसे सजेगी रंगोली।।

– सदाराम सिन्हा सनेही

औषधीय उपहारः राईमुनिया

प्रकृतिमेल डेस्क

हमारी वसुंधरा पर अनगिनत ऐसी वनस्पतियां मौजूद हैं जो अपने भीतर असीम औषधीय गुणों का संसार समेटे हुए हैं। जानकारी के अभाव में हम उन्हें केवल साधारण खरपतवार या जंगली पौधा समझकर उपेक्षित कर देते हैं। ऐसा ही एक विस्मयकारी और बहुगुणकारी पौधा जिसे ग्रामीण अंचलों में राईमुनिया, घनेरी, पुटुस या पंचफूली जैसे स्थानीय नामों से जाना जाता है। यह आयुर्वेद और पारंपरिक चिकित्सा पद्धति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह पौधा अपनी दृढ़ जीवन शक्ति और विपरीत परिस्थितियों में भी फलने-फूलने की क्षमता के लिए प्रसिद्ध है। इसके छोटे-छोटे रंग-बिरंगे फूल जो अक्सर गुच्छों में खिलते हैं न केवल प्रकृति की सुंदरता को बढ़ाते हैं बल्कि मानव स्वास्थ्य के लिए एक सुरक्षा कवच की तरह कार्य करते हैं। इसके पत्तों जड़ों और फूलों का उपयोग विभिन्न असाध्य रोगों के उपचार के लिए किया जाता हैं।

अपनी बेजोड़ अनुकूलन क्षमता के कारण आज यह भारत सहित संपूर्ण विश्व के गर्म और उप-उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पूरी तरह से पैर पसार चुका है। भारत के मैदानी इलाकों जंगलों पहाड़ी ढलानों सड़कों के किनारे और बंजर भूमियों पर यह पौधा बारहमासी झाड़ी के रूप में प्रचुर मात्रा में देखने को मिलता है। इसकी अत्यधिक प्रसार क्षमता कभी-कभी कृषि भूमि के लिए चुनौती बन जाती है जिसके कारण इसे कुछ क्षेत्रों में एक आक्रामक खरपतवार माना जाता है परंतु इसके औषधीय पक्ष को देखने पर यह एक अमूल्य जड़ी-बूटी सिद्ध होती है। इसके भीतर छिपे औषधीय गुणों का मुख्य आधार इसमें पाए जाने वाले अत्यंत जटिल और सक्रिय फाइटोकेमिकल्स यानी रासायनिक यौगिक हैं। वैज्ञानिकों ने शोध के दौरान इसकी पत्तियों और तनों में लेंटेनाइन लेंटाडेने ए लेंटाडेने बी यूर्सोलिक एसिड ओलेआनोलिक एसिड और विभिन्न प्रकार के टेरपेनोइड्स फ्लेवोनोइड्स तथा टैनिन की उच्च उपस्थिति दर्ज की है। ये रासायनिक घटक पौधे को तीव्र रोगाणुरोधी एंटीऑक्सीडेंट और सूजनरोधी गुण प्रदान करते हैं। इसके पत्तों से निकलने वाला वाष्पशील तेल जिसमें कैरियोफिलीन और पी-साइमीन जैसे तत्व होते हैं वह कई तरह के संक्रमणों से लड़ने में अचूक माना जाता है। ये मानव शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को सुदृढ़ करते हैं और कोशिकाओं को नष्ट होने से बचाते हैं।

इसके पत्तों का उपयोग त्वचा संबंधी विकारों घावों और चोटों को ठीक करने के लिए किया जाता है। यदि किसी व्यक्ति को पुरानी चोट लग गई हो या कोई घाव सड़ रहा हो तो राईमुनिया की ताजी पत्तियों को पीसकर उसका लेप लगाने से घाव बहुत तेजी से भरता है और उसमें संक्रमण फैलने का खतरा समाप्त हो जाता है क्योंकि इसमें प्राकृतिक एंटीसेप्टिक गुण होते हैं।

त्वचा की खुजली दाद एक्जिमा और एलर्जी जैसी जटिल समस्याओं में इसके पत्तों के काढ़े से प्रभावित स्थान को धोने पर तत्काल राहत मिलती है। यह पौधा श्वसन तंत्र के विकारों में भी लाभकारी होता है। पुरानी खांसी दमा और सर्दी-जुकाम से पीड़ित मरीजों के लिए इसकी पत्तियों की चाय या काढ़ा फेफड़ों में जमे बलगम को बाहर निकालता है और श्वास नली की सूजन को कम करता है। पंचफूली के पत्तों में जो गुण है वे सेवन पेट के कीड़ों को मारने, मंदाग्नि को दूर करने और पेट दर्द से राहत दिलाने में सहायक पाया गया है।

यह गठिया और जोड़ों के दर्द से भी राहत दिलाता है। इसके पत्तों को गर्म करके अथवा इसके तेल से घुटनों और जोड़ों की मालिश करने से सूजन कम होती है। सामान्य टायफाइड जैसे बुखार में भी यह लाभ देता है और कमजोरी को दूर करता है।

शोध कार्यों से इसके अर्क में कैंसर रोधी तत्व मौजूद होने के प्रमाण भी मिले है। जो शरीर में ट्यूमर की कोशिकाओं को बढ़ने से रोकते हैं। शोध बताते हैं कि इसके पत्तों का नियमित और नियंत्रित सेवन रक्त में शर्करा के स्तर को कम करने और अग्न्याशय की कोशिकाओं को सक्रिय करने में मदद करता है। दंत चिकित्सा में इसके पत्तों के अर्क का उपयोग पायरिया और मसूड़ों की सूजन को खत्म करने वाले माउथवॉश बनाने के लिए किया जा रहा है। हालांकि वैज्ञानिकों का यह भी मानना है कि इसके फलों में कुछ मात्रा में विषाक्तता होती है इसलिए इसका आंतरिक सेवन हमेशा योग्य चिकित्सक या विशेषज्ञ की देखरेख में ही किया जाना चाहिए। हम इसे बेकार खरपतवार न माने, हम इसके गुणों का इस्तेमाल मानवता के कल्याण के लिए कर सकते।

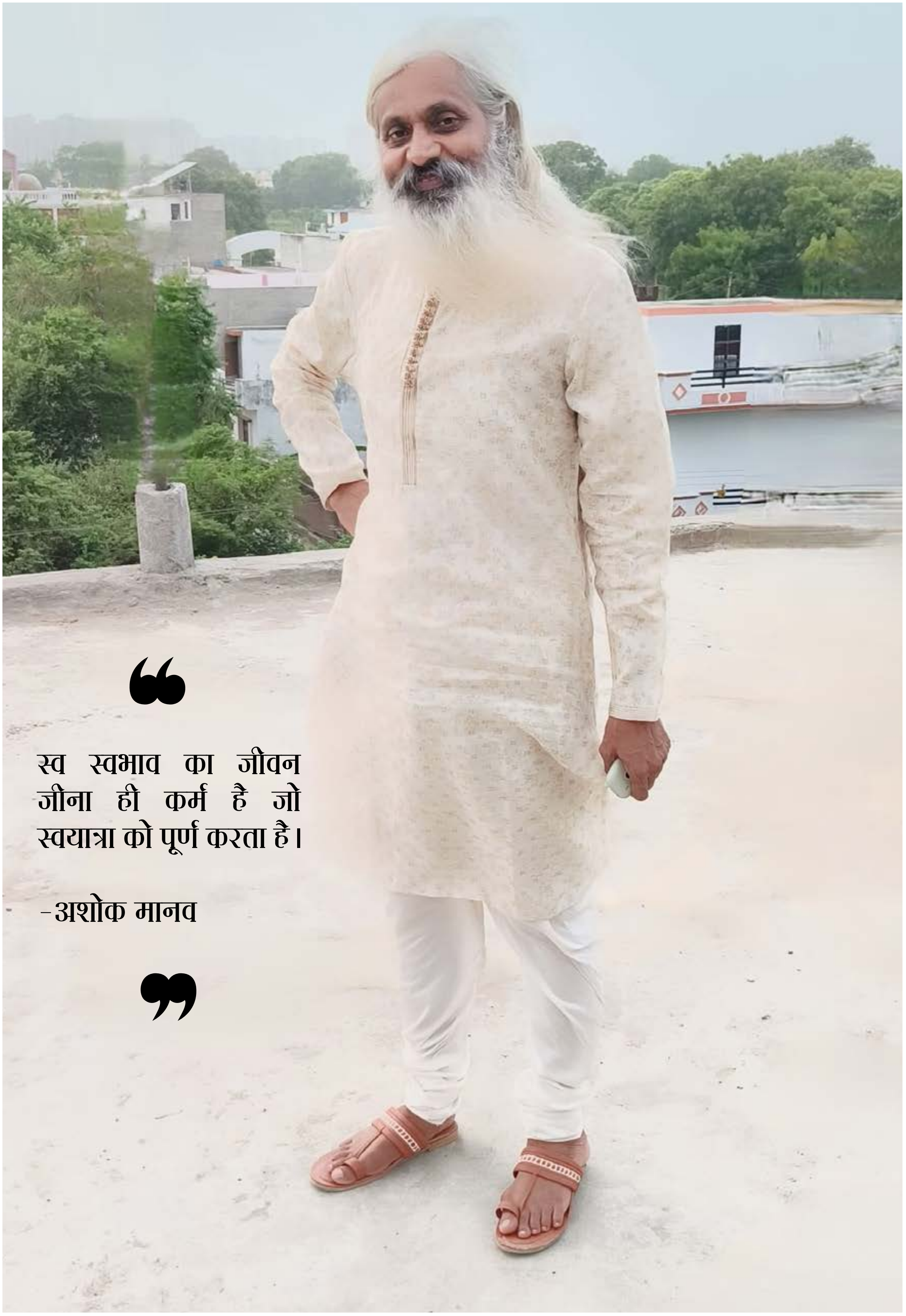
स्व स्वभाव का जीवन जीना ही कर्म है जो स्वयात्रा को पूर्ण करता है।
-अशोक मानव

स्थापित 1948
77 वर्षों का विश्वास
लाला जुगल किशोर
गोटे वाले
55, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ | संपर्क : 9935329775

दुर्गा आटो सेल्स

सेवा ऐसी जो पसीना न बहने दे

Aurhorised Dealer for Mahindra Tractors, Farm Equipments & Spare Parts

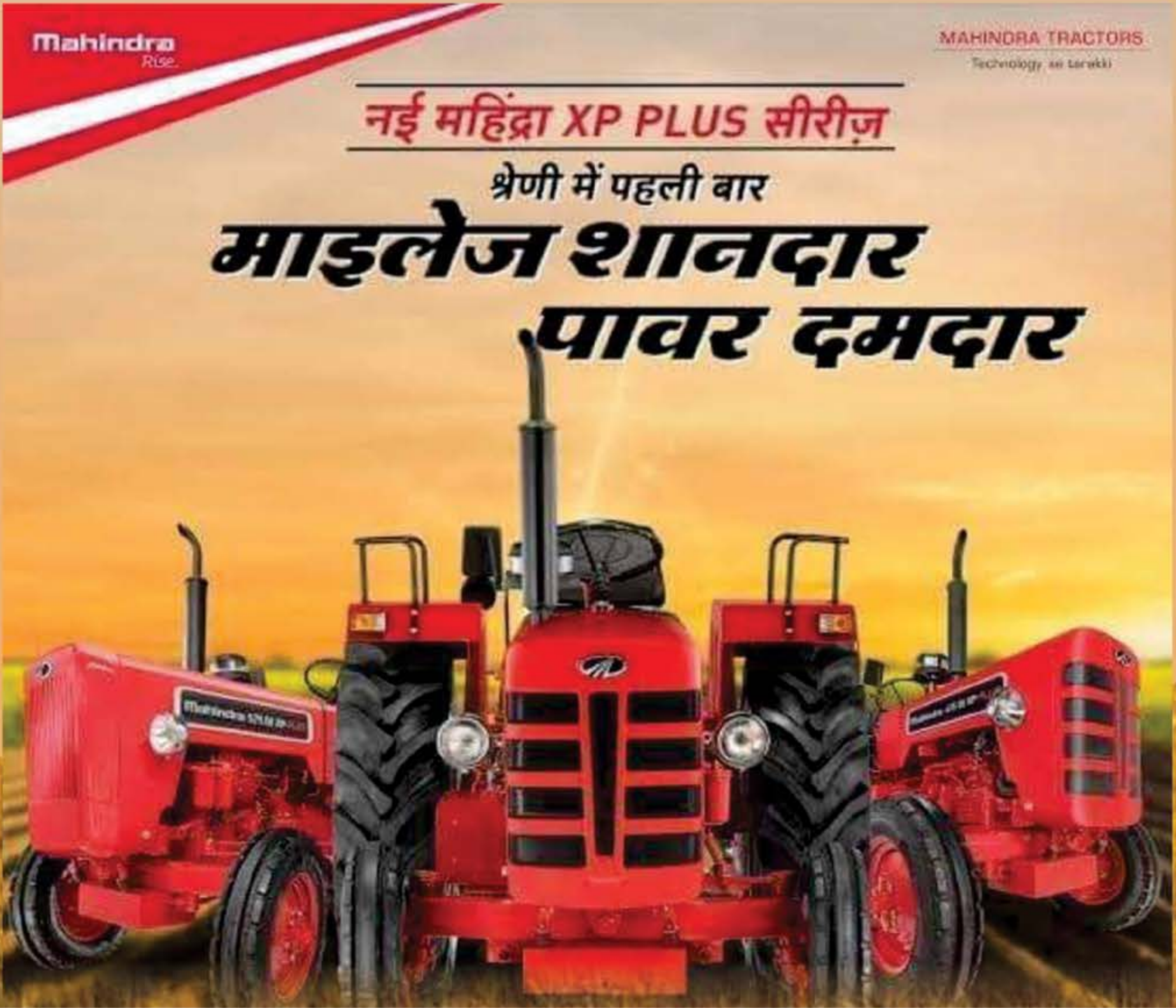

durgaautosale2000@gmail.com 9919528830 0545-4242216

इलाहाबाद-जौनपुर रोड, मछली शहर, जौनपुर, उ. प्र.।